breakthrough

unicef
unite for children

मॉड्यूल 4

बाल विवाह, स्कूल ड्रॉप आउट और हिंसा के समाधान हेतु किशोरवय को सशक्त बनाने के लिए हितधारकों को साथ जोड़ना

सामुदायिक संगठन के टूल्स

किशोरवय सशक्तिकरण टूलकिट

© यूनाइटेड नेशन्स चिल्ड्रेंस फंड (यूनिसेफ)
© ब्रेकथ्रू

इस प्रकाशन को शिक्षा या लाभ रहित उद्देश्य हेतु पुनः उत्पादन कॉपीराइट धारक के अनुमति के बिना किया जा सकता है यदि इसके स्त्रोत को मान दें।

इंगित संसकरणः
“किशोरवय सशक्तिकरण टूलकिट” 2016, नई दिल्ली : यूनिसेफ एवं ब्रेकथ्रू
यूनिसेफ एवं ब्रेकथ्रू को ऐसे प्रतिलिपि को पाकर खुशी होगी जो इस प्रकाशन को स्त्रोत के तौर पर इस्तेमाल कर रहें हों।

यदि इस प्रकाशन को किसी भी व्यावसायिक प्रयोजन के लिए उपयोग किया जाता है तो लिखित में अनुमति की जरूरत पड़ेगी।

अनुमति एवं अन्य सवालों के लिए संपर्क करें:
newdelhi@unicef.org

सामनेवाले कवर का फोटो
© Breakthrough/India

मॉड्यूल 4

बाल विवाह, स्कूल ड्रॉप आउट और हिंसा के समाधान हेतु किशोरवय को सशक्त बनाने के लिए हितधारकों को साथ जोड़ना

स्त्रोत पुस्तिका संगठन एक स्त्रोत पुस्तिका है जो किशोरवय माध्यमिक शिक्षा का समर्थन करने, बाल विवाह और हिंसा के सन्दर्भ में किशोरों को सशस्त्र बनाने के लिए सामुदायिक कार्यकर्ताओं और किशोरवय को समुदाय को जुटाने हेतु पर्चों, मोबाइल विडियो वैन, नुक्कड़ नाटक, मेलों इत्यादि टूल्स से लैस करने के लिए है।

विषय सूची

यूनिसेफ के बारे में पृष्ठ 7

ब्रेकथ्रू के बारे में पृष्ठ 8

सामुदायिक संगठन के टूल्स : लैंगिक हिंसा के समाधान हेतु किशोरवय को सशक्त बनाने के लिए हितधारकों को साथ जोड़ना एवं माध्यमिक शिक्षा का समर्थन पृष्ठ 10

सामुदायिक कार्यकर्ताओं/किशोरवय संगठनकर्ताओं के लिए यह स्त्रोत पुस्तिका क्यों तैयार की गई है? पृष्ठ 10

समुदायों में व्यवहार परिवर्तन कैसे किया और बनाए रखा जा सकता है? पृष्ठ 11

समुदायों से जुड़ने के लिए कौन सी कारगर रणनीतियां, सीएसओ की मदद कर सकती हैं? पृष्ठ 11

हस्तक्षेप कार्यक्रमों में समुदाय द्वारा किये गए सामुदायिक कार्यकर्ताओं व किशोरवय संगठनकर्ताओं के निहित वित्तीय/कैरियर संबंधी हितों के संबंध में समुदाय द्वारा व्यक्त संदेहों का सामना करने का सर्वोत्तम तरीका क्या है? पृष्ठ 12

समुदाय में लैंगिक हिंसा के विरूद्ध चर्चाएं और कार्ययोजनाएं कैसे शुरू की जानी चाहिए? पृष्ठ 12

भारत में लैंगिक हिंसा घटाने/खत्म करने में समुदायों और किशोरवय के साथ प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए सीएसओ द्वारा अपनाई जाने वाली कुछ नई उत्तसम विधियां कौन सी हैं? पृष्ठ 13

I. लोगों तक वीडियो वैन अभियानों के माध्यम से पहुंच को अधिकतम करना पृष्ठ 15

एक अवलोकन पृष्ठ 15

वीडियो वैन अभियान आयोजन की प्रक्रिया पृष्ठ 16

कार्यक्षेत्र से सफलता के दृष्टांत पृष्ठ 18

चुनौतियां और न्यूनीकरण पृष्ठ 19

याद रखने लायक प्रमुख बिंदु! पृष्ठ 20

II. नुक्कड़ नाटकों के जरिए हितधारकों को संवेदित बनाना : चंदा पुकारे के साथ वर्णन पृष्ठ 21

एक अवलोकन पृष्ठ 21

नुक्कड़ नाटक आयोजित करने की प्रक्रिया पृष्ठ 22

कार्य क्षेत्र से सफलता के दृष्टांत पृष्ठ 25

चुनौतियां और न्यूनीकरण पृष्ठ 25

याद रखने लायक प्रमुख बिंदु! पृष्ठ 26

III. युवा मेलों के जरिए किशोरवय युवाओं को लामबंद करना (किशोरी मेला) पृष्ठ 27

एक अवलोकन पृष्ठ 27

युवा मेले आयोजित करने की प्रक्रिया पृष्ठ 28

कार्य क्षेत्र से सफलता के दृष्टांत पृष्ठ 30

चुनौतियां और न्यूनीकरण पृष्ठ 30

याद रखने लायक प्रमुख बिंदु! पृष्ठ 31

IV. ग्राम वाणी के जरिए डिजिटल मीडिया का लाभ उठाना पृष्ठ 32

एक अवलोकन पृष्ठ 32

डिजिटल मीडिया अभियान आयोजित करने की प्रक्रिया पृष्ठ 35

कार्य क्षेत्र से सफलता के दृष्टांत पृष्ठ 36

चुनौतियां और न्यूनीकरण पृष्ठ 37

याद रखने लायक प्रमुख बिंदु! पृष्ठ 37

V. पांच आसान चरणो में अपने सामुदायिक आयोजन/बैठक की योजना बनाएं पृष्ठ 38

1. अपने उद्देश्ये निर्धारित करें पृष्ठ 38

2. अपने लक्षित दर्शक पहचानें पृष्ठ 39

3. साझेदार संगठन नियुक्त करें पृष्ठ 39

4. एजेंडा तय करें पृष्ठ 39

5. प्रचार-प्रसार करें पृष्ठ 40

योजना जांचसूची पृष्ठ 41

सामाजिक मानचित्रण – क्या और कैसे? पृष्ठ 42

सामाजिक मानचित्रण क्या है? पृष्ठ 42

सामाजिक मानचित्रण की प्रक्रिया पृष्ठ 42

चरण 1: आधार मानचित्र तैयार करना पृष्ठ 42

चरण 2: महत्त्वपूर्ण इकाईयां पहचानना पृष्ठ 42

चरण 3: सामाजिक सहभागिताओं की पहचान करना पृष्ठ 42
चरण 4: मुख्य हितधारकों की पहचान करना पृष्ठ 42
सामाजिक मानचित्रण के बाद जाँच करें कि आपके पास यह सारी जानकारी हो पृष्ठ 42
साथ रखने वाली चीज़ें पृष्ठ 42
सामाजिक मानचित्रण के उदाहरण पृष्ठ 43
मुख्य हितधारकों के साथ कार्य करना पृष्ठ 44
अभिभावकों को लामबंद और शामिल करना पृष्ठ 44
सामुदायिक और धार्मिक नेता पृष्ठ 44
पंचायत प्रतिनिधि पृष्ठ 45
संलग्नक पृष्ठ 46
चंदा पुकारे की पटकथा! पृष्ठ 47

© Breakthrough/India

यूनाइटेड नेशन्स चिल्ड्रेंस फंड (यूनिसेफ)

190 देशों और क्षेत्रों में बच्चों को बचपन से लेकर किशोरावस्था तक उनके जीवन का बचाव और उसके पनपने के लिए कार्य करती है। विकासशील देशों को दुनिया के सबसे बड़े टीका प्रदाता के रूप में कार्य करते हुए यूनिसेफ बच्चों के स्वास्थ्य एवं पोषण, अच्छा जल एवं सौच सुविधा, सभी बच्चों के लिए गुणवत्ता पूर्ण बुनियादि शिक्षा तथा हिंसा, शोषण और एड्स से रक्षा करती है। यूनिसेफ पूर्णतया व्यक्तियों, व्यापार संस्थानों और सरकारों द्वारा स्वेच्छा से दिये गए वित्तिय योगदान से पोषित है।

www.unicef.in

/unicefindia
@UNICEFIndia

United Nations Children's Fund, 73 Lodi Estate, New Delhi 110 003, India
☎ 91-11-24690401 91-11-24627521

newdelhi@unicef.org

ब्रेकथ्रू एक मानवाधिकार संस्था है

जो महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ होने वाली हिंसा और भेदभाव को समाप्त करने के लिए काम करती है। कला, मीडिया, लोकप्रिय संस्कृति और सामुदायिक भागीदारी से हम लोगों को एक ऐसी दुनिया बनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं, जिसमें हर कोई सम्मान, समानता और न्याय के साथ रह सके।

हम मल्टीमीडिया अभियानों के माध्यम से इन मुद्दों को मुख्य धारा में ला रहे हैं। इसे देश भर के समुदाय और व्यक्तियों के लिए प्रासंगिक बना रहे हैं। इसके साथ ही हम युवाओं, सरकारी अधिकारियों और सामुदायिक समूहों को प्रशिक्षण भी देते हैं, जिससे एक नई ब्रेकथ्रू जनरेशन सामने आए जो अपने आस-पास की दुनिया में बदलाव ला सके।

www.inbreakthrough.tv

/BreakthroughIN
@INBreakthrough

E-1A, First Floor, Kailash Colony, New Delhi 110 048, India
☎ 91-11-41666101 🖷 91-11-41666107

✉ contact@breakthrough.tv

© UNICEF/India/Lovell

सामुदायिक संगठन के टूल्स : लैंगिक हिंसा के समाधान हेतु किशोरवय को सशक्त बनाने के लिए हितधारकों को साथ जोड़ना एवं माध्यमिक शिक्षा का समर्थन

सामुदायिक कार्यकर्ताओं/किशोरवय संगठनकर्ताओं द्वारा स्त्रोत पुस्तिका का उपयोग करना

सामुदायिक कार्यकर्ताओं/ किशोरवय संगठनकर्ताओं के लिए यह स्त्रोत पुस्तिका क्यों तैयार की गई है?

यह स्त्रोत पुस्तिका, सीएसओ तथा किशोरवय सामुदायिक संगठनकर्ताओं को लैंगिक हिंसा के समाधान एवं माध्यमिक शिक्षा का समर्थन हेतु विभिन्न हितधारकों से जुड़ने के लिए सरल टूल्स उपलब्ध कराने के लिए है। यह ऐसे हितधारक समूहों के साथ कार्य हेतु कार्रवाई का समर्थन करती है जो लैंगिक हिंसा के खात्मे में सहयोगी हो सकते हैं। लैंगिक हिंसा एक जटिल सामाजिक मसला है जो परंपराओं, संस्कृति, सामाजिक मानकों तथा अर्थव्यवस्था पर आधारित है। लैंगिक हिंसा का सामना करने की सबसे प्रभावी रणनीति विविध हितधारक समूहों के व्यवहारों में गहराई से परिवर्तन लाना है । जमीनी स्तर पर मौजूदगी, तथा सामुदायिक नेटवर्कों की वजह से सीएसओ, समुदाय में व्यवहार तथा धारणाएं परिवर्तित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा किशोरवय ऊर्जा, उत्साह का भी संचार करते हैं और समुदाय में जटिल मसलों को सहज ढंग से प्रस्तुत करने में भी समर्थ होते हैं। व्यापक रूप में, हितधारकों में व्यवहारगत परिवर्तनों की शुरूआत करने, मजबूत बनाने, तथा बनाए रखने की दिशा में किशोरवय के साथ कार्य करने वाले सीएसओ द्वारा उपयोग की जाने वाली रणनीतियां, लैंगिक हिंसा घटाने एवं किशोरवय के लिए माध्यमिक शिक्षा में नामांकन और आगे बढ़ने के लिए समर्थन, सक्षम नीतिगत तथा प्रशासनिक वातावरण निर्मित करने के लिए संवेदीकरण तथा जागरूकता निर्माण, प्रशिक्षण, सहभागी कार्यसमूहों तथा प्लेटफार्मों के गठन, और 'संरचनागत' मसलों के समाधान पर आधारित होती हैं।

यह स्त्रोत पुस्तिका, बड़े किशोरवय सशक्तिकरण टूलकिट के साथ संयोपन के रूप से पढ़ी जा सकती है। सामुदायिक संगठन वाली कुछ निश्चित गतिविधियों के लिए, हितधारकों के बीच बांटने के लिए सूचनाप्रद पुस्तिकाओं, बैनरों, पर्चों तथा अन्य अभियान सामग्रियों की ज़रूरत होती है जिन्हें टूलकिट में कवर किया गया है (प्रोडक्ट विवरण देखें), और सूचनाप्रद विवरणिकाएं, पम्पलेट, वॉल पेंटिंग्स, जनपैरवी तर्क, वीडियो तथा रेडियो स्पॉट, विज्ञापन, नुक्कड़ नाटक-शोषितों का रंगमंच को ब्रेकथ्रू और यूनिसेफ द्वारा पृथक डीवीडी में भी विकसित किया गया है।

समुदायों में व्यवहार परिवर्तन कैसे किया और बनाए रखा जा सकता है?

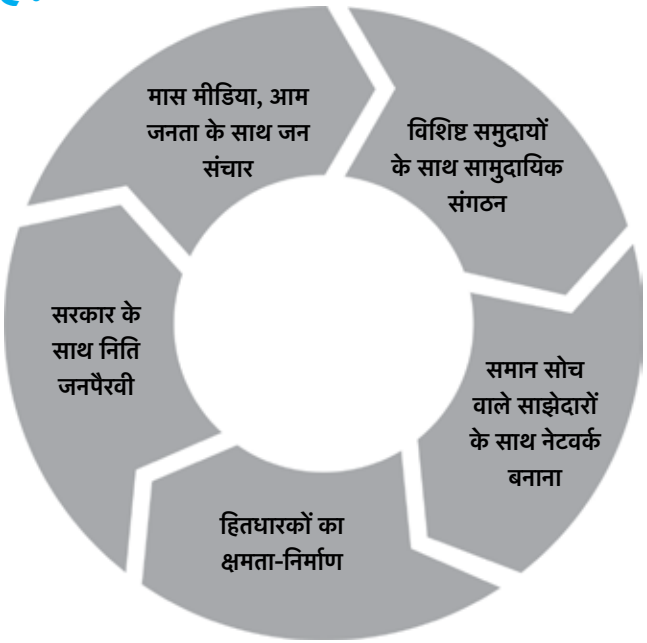

लैंगिक हिंसा के मसले एवं किशोरवय नामांकन पर समुदायों के व्यवहारों तथा धारणाओं में अपेक्षित परिवर्तन, उनसे स्पष्ट, केंद्रित, और स्थायी संवाद द्वारा ही लाया जा सकता है। इसके लिए ठोस संवाद रणनीति की आवश्यकता होती है, जिसे किशोरवय पर कार्य करने वाले सीएसओ साझेदारों द्वारा परिवर्तन को बढ़ावा देने, कई स्तरों पर कार्य करने, तथा संवाद में विशिष्ट चरणों में प्रत्येक के विशिष्ट उद्देश्यों और परिणामों के साथ अपनाया जा सकता है।

हालांकि व्यापक संवाद रणनीतियां निम्न प्रकार की हो सकती हैं :

1. **राज्य/जिला स्तर पर जनसंचार (मास मीडिया)-** सार्वजनिक धारणाओं को तैयार करने के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण करने तथा प्राथमिक दर्शक जैसे अभिभावक और बच्चों के बीच व्यवहार परिवर्तन को प्रभावित करने के लिए ताकि वे माध्यमिक शिक्षा नामांकन को बढ़ावा दें।
2. **जनपैरवी-** "संरचनागत मुद्दों को संबोधित कर रहे हैं" ये सुनिश्चित करना तथा लैंगिक हिंसा एवं किशोरवय शिक्षा को बढ़ावा देने के मसले के समाधान के लिए सक्षम या उपयुक्त वातावरण का निर्माण करना।
3. **सामुदायिक संगठन तथा मध्य-मीडिया गतिविधियां-** सामुदायिक स्तर पर मसले के समाधान की दिशा में सामूहिक कार्रवाई को बढ़ावा देने के लिए।
4. **घरों/स्कूल/सामुदायिक स्तरों पर प्रशिक्षण तथा अंतर्वैयक्तिक संवाद-** किशोरवय, साथियों, अभिभावकों, तथा अन्य संबंधित हितधारकों द्वारा सकारात्मक व्यवहार अपनाने, अमल में लाने और बनाए रखने की दिशा में प्रयास करने के लिए उनका सहयोग करने हेतु।

यह स्त्रोत पुस्तिका सामुदायिक संगठन तथा मध्य-मीडिया गतिविधियों वाली तीसरी रणनीति पर केंद्रित है।

समुदायों से जुड़ने के लिए कौन सी कारगर रणनीतियां, सीएसओ की मदद कर सकती हैं?

यद्यपि प्रत्येक सीएसओ, अपने लक्षित समुदाय की ज़रूरतों के लिए, लैंगिक हिंसा में स्थानीय संदर्भ तथा सांगठनिक क्षमता के अनुसार सर्वोत्तम उपयुक्त सामुदायिक संगठन रणनीतियां चिन्हित और लागू करता है, लेकिन कुछ सामान्य विधियां सभी के लिए उपयोगी हो सकती हैं। कुछ कारगर व्यावहारिक रणनीतियां, जो लैंगिक हिंसा घटाने की दिशा में किशोरवय संगठनकर्ताओं को समुदायों से जोड़ने के लिए कार्य करने वाले सीएसओ की मदद कर सकती हैं:

1. सामुदायिक संगठन की गतिविधियों के लिए एनजीओ, एसएचजी नेटवर्कों, किशोरवय साथी समूहों, पीआरआई, धार्मिक संगठनों और व्यावसायिक समूहों को चिन्हित, प्रेरित करना और जोड़ना (शामिल करना)।
2. नुक्कड़ नाटकों, लोक माध्यमों (मीडिया), तथा वाह्य मीडिया गतिविधियों जैसे कि होर्डिंग और वॉल पेंटिंगों को कार्यान्वित करना।
3. जिन पवित्र दिनों में लैंगिक हिंसा कि घटनाओं में तेजी से वृद्धि हो, उन के पूर्व विशिष्ट सामुदायिक सांगठनिक गतिविधियाँ आयोजित करना।
4. लैंगिक हिंसा के मसले एवं किशोरवय नामांकन पर समुदायों में बहस और चर्चा हेतु बातचीत के लिए मंच निर्मित करना।
5. वाह्य मीडिया तथा आईईसी सामग्रियां: आईईसी सामग्रियां और आउटडोर मीडिया अंतर्वैयक्तिक संवादों में सहायक है तथा संवादकर्ताओं को विश्वसनीयता प्रदान करता है। दृश्यता तथा सक्षम वातावरण बढ़ाने के लिए जिले तथा राज्य स्तर पर रणनीतिक स्थानों पर होर्डिंग के रूप में वाह्य मीडिया, तथा प्रखंड/पंचायत स्तर पर वॉल पेंटिंगें तैयार की जा सकती हैं। पोस्टर तथा बैनर जैसी आईईसी सामग्रियां पहले से विकसित करके जिले/प्रखंड स्तर पर पहुंचानी होती हैं। अधिकतम प्रभाविता (प्रभावक्षमता) सुनिश्चित करने के लिए ये सामग्रियां अंतिम समय पर नहीं बल्कि पूर्वनिर्धारित सूक्ष्म योजना के तहत रणनीतिक स्थानों पर लगाई जानी चाहिए।
6. लोक मीडियाः स्थानीय संवाद माध्यम के रूप में इसकी व्यापक स्वीकार्यता को देखते हुए लोक मीडिया का कारगर ढंग से उपयोग प्रमुख सूचनाएं प्रसारित करने तथा व्यवहारगत परिवर्तन प्रोत्साहित करने के लिए किया जा सकता है। इसके अलावा, यह मीडिया से

वंचित इलाकों में परिवारों तथा समुदायों तक पहुंचने के लिहाज से भी कारगर सिद्ध होगा। इसमें लोकगीत, नृत्य, नुक्कड़ नाटक, तथा रोड शो शामिल हैं, जो किशोरवय मोबिलाइजर कुशलता से कर सकते हैं।

7. ब्लाक तथा सामुदायिक संगठनकर्ताओं के माध्यम से सामुदायिक संगठन और अंतर्वैयक्ति संवाद उच्च जोखिम (लैंगिक हिंसा में) वाले चिन्हित ब्लॉकों में ब्लाक मोबिलाइजर तथा सामुदायिक कार्यकर्ता हो सकते हैं, जो किशोरवय समूहों का नेटवर्क बना सकते हैं। ये स्वयंसेवक ऐसे परिवारों को चिन्हित और शामिल करने के लिए सशक्त बनाए जा सकते हैं जहां लैंगिक हिंसा तथा बीच में स्कूल छोड़ने (स्कूल ड्रॉप आउट) की घटना की अधिकता हो। वे परिवारों को अभिप्रेरित करने के लिए उपयुक्त हितधारकों तथा प्रभावशाली लोगों की भी पहचान कर सकते हैं। सामुदायिक कार्यकर्ताओं के लिए व्यापक कार्य-बिंदुओं और चरणों में निम्न को शामिल किया जा सकता है :

   - सामाजिक/ग्राम मानचित्रण
   - जोखिम संभावित परिवारों में घरेलू दौरे
   - सामुदायिक स्तर की बैठकें (पीआरआई, अध्यापकों, AWW, ANM को शामिल करते हुए)
   - स्थानीय प्रभावशाली लोगों की पहचान और उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना।
   - स्कूली उपस्थिति की जांच तथा 'अपेक्षिकृत' बच्चों का लेखा-जोखा।
   - स्कूल से बाहर वाले बच्चों की पहचान करना और उनको स्कूलों में नामांकित कराना।
   - ज़रूरतमंद परिवारों की पहचान करना और कल्याण योजनाओं से संपर्क स्थापित करने में सहायता प्रदान करना, तथा
   - अन्य उपयुक्त तथा ज़रूरत-आधारित सामुदायिक संगठनात्मक गतिविधियां लागू करना।

हस्तक्षेप कार्यक्रमों में समुदाय द्वारा किये गए सामुदायिक कार्यकर्ताओं व किशोरवय संगठनकर्ताओं के निहित वित्तीय/जीविका संबंधी हितों के संबंध में समुदाय द्वारा व्यक्त संदेहों का सामना करने का सर्वोत्तम तरीका क्या है?

एनजीओ कार्यकर्ताओं तथा किशोरवय संगठनकर्ताओं के लिए, की जाने वाली एक सबसे कठिन टिप्पणी यह है कि बाल अधिकारों के बारे में, स्कूल में नामांकन तथा लैंगिक हिंसा के खिलाफ लोगों को जागरूक करने में उनके अपने 'हितों' का सवाल खड़ा किया जाता है। उनसे प्रायः यह सवाल किया जाता है कि वे यह 'पैसे के लिए' या 'अपना कैरियर बनाने के लिए' कर रहे हैं। यह बहुत ही निजी चुनौती हो सकती है। हालांकि इस पर किसी को भी निजी तौर पर प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए या इसे निजी तौर पर नहीं लेना चाहिए।

सामुदायिक संसाधन व्यक्ति तथा विशेषकर किशोरवय समूह, माध्यमिक शिक्षा नामांकन, महिला अधिकारों, बाल संरक्षण एवं विकास के समर्थन में तथा बच्चों की वृद्धि व जीवन के लिए हानिकारक रिवाजों की रोकथाम किए जाने की दिशा में सही कार्य कर रहे हैं। इन मसलों को लेकर जनपैरवी का कोई भी प्रयास स्वागत योग्य है, चाहे यह स्वयंसेवी या पारिश्रमिक आधारित हो, लैंगिक हिंसा के खिलाफ जागरूकता फैलाते हुए आजीविका कमाने या अपने कैरियर का विकास करने में अपराधबोध महसूस करने या शर्मिन्दगी महसूस करने की कोई वजह ही नहीं है। समाज का कुछ भला करते हुए आप सबसे ज्यादा सीखते हैं। ऐसे आरोपों का सामना करने का सर्वोत्तम तरीका प्रशिक्षात्मक या सुरक्षात्मक रवैय्या न अपनाना है स्पष्टीकरण तो कभी भी नहीं दिया जाना चाहिए। आपको अपने काम पर डटे रहना चाहिए और अपने उद्देश्य की दिशा में आगे बढ़ते रहें।

यह भी सदैव याद रखा जाना चाहिए कि परिवर्तन लाना कठिन होता है किन्तु हमें समुदाय की सोच को पितृत्ववादी सोच से उस दिशा में ले जाने में मदद करनी होगी जहां लड़कियों और लड़कों से उनके अधिकारों के आधार पर सामान व्यवहार किया जाए। हमें उन्हें सवाल करने के लिए प्रेरित करना चाहिए तथा जाति और समुदाय में गहरी पैठी पारंपरिक, प्रथागत रूढ़ियों से अलग हटाना चाहिए। यह आसान नहीं है। लैंगिक हिंसा के विरूद्ध किसी भी चर्चा को प्रतिरोध का सामना करना पड़ेगा। बहुत सारे प्रश्न होंगे, जिस तरह बहुत सारे मत होंगे उसी प्रकार बहुत सारे सवाल होंगे।

समुदाय में लैंगिक हिंसा के विरूद्ध चर्चाएं और कार्ययोजनाएं कैसे शुरू की जानी चाहिए?

लैंगिक हिंसा पर समुदाय से एकदम सीधे-सपाट तरीके से बातचीत नहीं शुरू की जा सकती; पहले समुदाय तथा किशोरवय समूहों के विकास की समस्त चिंताओं (सरोकारों) पर बात की जानी चाहिए। सामुदायिक संगठनकर्ताओं के रूप में, सामुदायिक सदस्यों तथा किशोरवय से उनकी दूरदर्शी सोच (विज़न) तथा उनके गांव के लिए उनके सपनों, उनके सरोकारों तथा यह विज़न साकार करने की राह की चुनौतियों, अवरोधों से पार पाने और सपने पूरे करने के लिए ज़रूरी उपायों आदि पर बात करें। आमतौर से, समुदाय के लोग दृश्यमान, भौतिक मसलों, जैसे कि सड़कों, पानी, स्वास्थ्य केंद्रों आदि के बारे में बात करते हैं। किशोरवय लोग खेल के मैदान, कम्प्यूटर या व्यावसायिक केंद्रों की ज़रूरत के बारे में बात कर सकते हैं। अन्य महत्वपूर्ण मसलों जैसे कि सुरक्षित और असुरक्षित स्थानों, स्कूल से बाहर बच्चों, कुपोषण आदि की तरफ उनका ध्यान दिलाने तथा लैंगिक हिंसा की दिशा में चर्चाएं मोड़ने के लिए यह उचित समय होता है।

उदाहरण के लिए, ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति की सदस्य होने के नाते आशा कार्यकर्त्री की महिलाओं, ग्रामीण नेताओं तथा बुजुर्गों तक आसान पहुंच होती है। वह युवा गर्भवती महिलाओं से एनीमिया जैसे स्वास्थ्य मसलों तथा इनके कारणों पर चर्चा शुरू कर सकती है और बच्चे व माता के कमजोर स्वास्थ्य की एक वजह के रूप में लैंगिक हिंसा के बारे में बता सकती है।

सामुदायिक संसाधन व्यक्तियों के लिए यहां कुछ कार्रवाईयों के सुझाव दिए गए हैं। लैंगिक हिंसा के विरूद्ध स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार उपयुक्त प्रक्रिया या कार्रवाई शुरू करने के लिए विशिष्टता के साथ रचनात्मक रहना भी महत्त्वपूर्ण है।

i. लैंगिक हिंसा एवं बीच में स्कूल छोड़ने के दुष्प्रभावों के बारे में समुदाय में जागरूकता बढ़ाने तथा संवेदनशील बनाने के लिए प्रत्येक उपलब्ध अवसर का उपयोग करें।
   - » ग्राम सभा, स्वयं सहायता समूह की बैठकों, स्कूल प्रबंधन समिति की बैठकों, गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, त्यौहारों आदि के मौके पर आयोजित समारोहों में मानव अधिकार अतिक्रमण के रूप में लैंगिक हिंसा के बारे में चर्चा करें।
   - » लैंगिक हिंसा के खिलाफ परिवारों तथा व्यक्तियों को परामर्श दें।

ii. रणनीतिक नेटवर्क बनाएं और समुदाय में विविध हितधारक समूहों जैसे कि पुरूषों और महिलाओं के समूहों, गांव के बुजुर्गों तथा नेताओं (जैसे कि निर्वाचित जनप्रतिनिधियों), अभिभावकों, युवाओं, किशोरियों और किशोरों के समूहों, अध्यापकों तथा कार्यकर्ताओं में सहयोगी खोजें।
   - » गांव में विभिन्न स्थानीय संस्थाओं की सदस्यता लें जैसे कि बाल संरक्षण समिति, स्कूल प्रबंधन समिति, सामाजिक न्याय समिति, इत्यादि।
   - » किशोरियों या किशोरों के समूह बनाएं और उन्हें सुदृढ़ करें तथा उनको लैंगिक हिंसा के प्रभाव तथा कानून की जानकारी दें।

iii. विविध अवसरों जैसे कि ग्राम सभा, ममता दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस समारोह, इत्यादि के मौकों पर लैंगिक हिंसा, माध्यमिक स्कूल को बीच में छोड़ने तथा इसके प्रभाव के बारे में बात करने के लिए विभिन्न सरकारी विभागों (स्वास्थ्य, शिक्षा, समाज कल्याण, आदि) के अधिकारियों को आमंत्रित करें।

iv. जब वे विलम्ब से विवाह करने के लाभ देखते हैं तो लोग लैंगिक हिंसा का विरोध करने के लिए प्रेरित और सहमत होने लगते हैं।
   - » विलम्ब से विवाह करने एवं शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु सरकार द्वारा दिए जाने वाले विविध प्रोत्साहनों और योजनाओं के बारे में जानकारी दें।
   - » संबंधित विभागों से एक साथ संपर्क बनाने में सहायता प्रदान करें ताकि परिवार, विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों और योजनाओं के फायदे ले सकें और कानूनी तौर पर उचित आयु प्राप्त करने तक विवाह में विलम्ब के लिए प्रेरित हों, या बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य और आजीविका फायदे प्राप्त कर सकें।
   - » बेहतर भविष्य के लिए शिक्षा का महत्त्व तथा लड़कियों और लड़कों द्वारा स्कूली शिक्षा पूरी करने के महत्त्व पर बात करें।

v. विविध जातियों के बुजुर्गों और नेताओं को लड़कियों के आवागमन, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि से जुड़े जातिगत मानकों में बदलाव लाने के लिए शामिल और प्रेरित करने के लिए उनके समुदाय या जाति में लैंगिक हिंसा के विरोध में प्रस्ताव पारित कराएं।

vi. पंचायती राज संस्थाओं (पीआरआई) के गांव, प्रखंड, तथा जिला स्तरीय प्रतिनिधियों को प्रेरित करके उनकी पंचायतों में लैंगिक हिंसा के विरोध में प्रस्ताव पारित कराएं।

भारत में लैंगिक हिंसा घटाने/खत्म करने में समुदायों और किशोरवय के साथ प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए सीएसओ द्वारा अपनाई जाने वाली कुछ नई उत्तसम विधियां कौन सी हैं?

समुदायों में लैंगिक हिंसा घटाने/खत्म करने में समुदायों के साथ कुशलतापूर्वक कार्य करने के लिए सीएसओ द्वारा अपनाई जाने वाली कुछ नई उत्तम विधियां नीचे दी गई हैं। ये कार्यशालाओं के दौरान यूनिसेफ सीएसओ साझेदारों से बातचीत पर आधारित हैं। हालांकि यह बताना ज़रूरी है कि नीचे दी गई सूची सम्पूर्ण नहीं है तथा भारत व विश्वस्तर पर कई अन्य नवप्रवर्तक विधियां पाई जा सकती हैं।

- धार्मिक नेताओं के प्रभाव का कारगर ढंग से लाभ उठाना: लैंगिक हिंसा के मसले पर धार्मिक नेताओं का समर्थन प्राप्त किया जा सकता है और वे अपने कार्यक्रमों/समारोहों तथा आयोजनों जैसे कि वैवाहिक कार्यक्रमों और सामूहिक प्रार्थनाओं के दौरान इस कदाचार का विरोध कर सकते हैं। लैंगिक हिंसा के मसले के समाधान हेतु नौ हितधारकों की भूमिका की ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए नवग्रह (नौ ग्रह उपासक) से एक धार्मिक श्लोक भी तैयार किया गया है- 'नमः ग्राम पंचायतह, टीचरः, आंगनवाड़ी वर्करः, एएनएमः, एसएमसीर, सीएमपीओ, बीडीओ, पुलिसश्च, एनजीओ नमः'।'
- मंदिरों को लैंगिक हिंसा से मुक्त घोषित किया जा सकता है और स्थानीय लोग उपासना संस्थाओं के प्रति सम्मान की वजह से इन निर्देशों का पालन कर सकते हैं।

- किशोरियों के समूहों द्वारा लिखी, निर्देशित और अभिनीत वीडियो सामग्रियों के जरिए जागरूकता निर्माण समुदाय में लड़कियों में लैंगिक हिंसा के मसले पर जागरूकता विकसित की गई और उनको उनके साथियों को प्रभावित करने के लिए कार्रवाई हेतु तैयार किया गया। वीडियो निर्माण के लिए लड़कियों को कहानी और पटकथा लिखने, वीडियो-शूट करने, संपादन, इत्यादि के लिए एनजीओ के लोगों द्वारा प्रशिक्षित किया गया-
- लड़कियों और महिलाओं में सकारात्मक रोल मॉडलों को प्रेरित करना (नवज्योति पुरस्कारों के साथ): जिन्होंने लैंगिक हिंसा के विरूद्ध संघर्ष किया और समाज में दूसरों के लिए बदलाव का कारण और दूसरों के लिए रोल मॉडल बनीं।
- मोबाइल एप्लिकेशन आधारित परामर्श तथा ज्ञान मूल्यांकन के माध्यम से जानकारी के प्रसार हेतु इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का उपयोग। इससे समूह अनुदेशक (फैसिलिटेटर)(समूह समन्वयक, परियोजना अधिकारी, या समूह नेता) को परामर्श के विषयों जैसे कि एचआईवी, स्वास्थ्य/स्वच्छता, यौवनारंभ और लैंगिक हिंसा के लिए पाठ्यक्रम संदर्भित करने तथा मूल्यांकन करने की भी सुविधा मिली। लड़कियों को उनके क्षेत्रों में ऐसी वॉल पेन्टिंग भी बनाने और बनाए रखने के लिए प्रेरित किया गया जो लोगों को लैंगिक हिंसा के विरूद्ध संवेदनशील बना सकें।
- सरकारी योजनाएं समुदाय तक पहुंचाने में सरकारी कार्मिकों की मदद के लिए उनके साथ नेटवर्किंग और जनपैरवी। उनके हस्तक्षेप वाले गांवों में 'निगरानी समितियां' (सामाजिक वॉचडॉग समूह) बनाए गए जिन्होंने लैंगिक हिंसा के मसले पर जागरूकता फैलाई और लैंगिक हिंसा की घटनाओं के घटित होने से पूर्व ही उनकी रिपोर्ट की।
- चित्रकथा पट्टियों (चित्रमालाओं) और प्रशिक्षण का प्रयोग करना और लड़कियों और लड़कों को समाज में जागरूकता फैलाते हुए तथा चित्रमालाओं की सहायता से समुदाय को लैंगिक हिंसा के विरूद्ध संवेदी बनाते हुए बदलाव के वाहक बनने के लिए प्रोत्साहित करना। युवा लड़कियों और लड़कों को चित्रमालाओं के बारे में सिखाने और डिजाइन कराने के लिए कार्यशालाएं आयोजित की गईं और रोचक पात्रों वाली कहानियां तैयार की गईं। ये चित्रमालाएं बाद में एनजीओ द्वारा प्रिंट कराकर इलाके में भ्रमण करके सबसे प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शित/चिपकाई गईं। रोड शो, बाइक शो, तथा प्रभात फेरी (प्रार्थनाएं दोहराते हुए प्रातःकाल के समय गांव की गलियों में लोगों के समूह बनाकर निकलना) सहित पदयात्राओं के माध्यम से लैंगिक हिंसा, तथा लैंगिक भेद-भाव और हिंसा के विरूद्ध जागरूकता फैलाई जाती है।
- लड़कियों और लड़कों के आवासीय शिविरों के आयोजनः दोनों लिंग के व्यक्तियों के बीच स्वस्थ आपसी संपर्क बनाने के लिए तथा इन मसलों पर सामूहिक चिन्तन-मनन के लिए यूनिसेक्स आवासीय शिविर आयोजित किए जाते हैं।
- जागरूकता और संवेदनशीलता निर्माण में नायकों/पात्रों/शुभंकरों का उपयोगः एक उदाहरण के तौर पर, 'बबली करे सवाल' हस्तक्षेप के इलाकों में काफी लोकप्रिय हुआ है। इस कार्यक्रम की शुभंकर बबली एक किशोरी है जो सामुदायिक सदस्यों से लैंगिक हिंसा तथा लैंगिक भेद-भाव संबंधी मसलों पर पोस्टरों के जरिए सवाल करती है। वह लैंगिक भेद-भाव, लड़कियों और लड़कों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य के क्षेत्र में समान अवसरों, घरेलू काम-काज का समान बंटवारा आदि मामलों पर अपने साथियों से भी सवाल करती है।

अनुभाग

1

लोगों तक वीडियो वैन अभियानों के माध्यम से पहुंच को अधिकतम करना

एक अवलोकन

वीडियो वैन की मुख्य विशेषताएं

यह लैंगिक हिंसा, तथा लड़की के जीवन पर इसके प्रभाव के बारे में सामुदायिक मोबिलाइज़ेशन का एक टूल है जो शिक्षा और मनोरंजन के माध्यम से समुदायों तक पहुंचता, जोड़ता और उन्हें संवेदी बनाता है।

वैन में लैंगिक हिंसा के मसले पर आधारित ऑडियो और विजुअल सहायक चीज़ें, वीडियो/फिल्में व आईईसी सामग्रियां होती हैं। इसमें एक नुक्कड़ नाटक टीम भी होती है जो मसले पर नाटक मंचित करती है।

अभियान स्वरूप में, वैन को कुल 26 दिन की अवधि के दौरान चलाया जाता है। एक दिन में तीन शो किए जाते हैं।

संभावित आयोजन स्थल

किसी समुदाय विशेष को मोबिलाइस करने के लिए किसी निर्दिष्ट ग्राम पंचायत में वीडियो वैन अभियान स्कूलों, बाज़ारों तथा खुले समुदायों/गांवों में आयोजित किए जा सकते हैं।

दर्शकों का प्रकार

दर्शकों में आमतौर से-सामान्य समुदाय (महिलाएं और पुरूष, बुजुर्ग), पीआरआई के सदस्य, सरकारी कार्मिक, युवा और बच्चे, तथा महत्त्वपूर्ण जनमत वाहक (ओपिनियन लीडर) शामिल होते हैं।

कार्यक्रम की अवधि

प्रत्येक वीडियो वैन शो को 1.5-2 घंटे तक अवधि का रखा जाता है।

समुदाय से प्रतिक्रिया

- वीडियो वैन की तत्काल प्रतिक्रिया दर्शकों के बीच बाल विवाह की कुप्रथा तथा लैंगिक हिंसा के बारे में एक संवाद के रूप में होती है। वीडियो शो तथा नुक्कड़ नाटक, अच्छी प्रस्तुति के साथ एक प्रेरक माहौल बनाते हैं, जो दर्शकों को मसले पर विचार करने में मदद करते हैं।
- यह उनको व्यक्तिगत स्तर पर मसले को समझने, तथा उनके समुदाय में इसके दायरे तथा विविध आयामों का विश्लेषण करने की सुविधा देता है। इस सोच-विचार से एक चर्चा उत्पन्न होती है, जो मसले के समाधान में उनकी भूमिकाओं की खोजबीन, तथा बाद में उनके स्तर से संभावित समाधान खोजने पर आधारित होती है।
- लड़कियों पर लैंगिक हिंसा के नकारात्मक प्रभावों को महत्त्वपूर्ण हितधारकों और जनमत वाहकों द्वारा पुष्टि किये जाने से सन्देश कि प्रभावकता में वृद्धि होती है ।

वीडियो वैन अभियान आयोजन की प्रक्रिया

कार्यक्रम आयोजन से पहले

- आकस्मिक चीज़ों के लिए एक निश्चित प्रतिशत भाग अलग रखते हुए कार्यक्रम का बजट बनाएं और इसका कड़ाई से पालन करें।
- एनजीओ/सीबीओ साझेदारों तथा समुदायों व स्कूलों की पहचान करें जहां वैन पहुंचनी है। इन स्थानों पर मुख्य प्राधिकारियों से मुलाकातें तय करें।
- एनजीओ/सीबीओ या स्कूल के मुख्य प्राधिकारियों से मिलें और मसले के बारे में, तथा कार्यक्रम के उद्देश्य और अपेक्षित प्रतिक्रिया के बारे में उन्हें विस्तार से जानकारी दें।
- ग्राम स्तर का कार्यक्रम होने पर, गांव के बुजुर्गों, पीआरआई सदस्यों, तथा जनमत वाहकों से शुरूआती बैठकें करते हुए उनको कार्यक्रम आयोजित करने के उद्देश्य और औचित्य के बारे में बताएं।
- संबंधित प्राधिकारियों से मिलकर कार्यक्रम की तारीखें, स्थान तथा अवधि पर चर्चा करें और तय करें।
- एक अनुबंध/समझौता ज्ञाप तैयार करके साझेदारों के साथ हस्ताक्षरित करें जिसमें कार्यक्रम आयोजित करने से जुड़े लोगों की भूमिकाओं और दायित्वों के बारे में साफ-साफ लिखा गया हो।
- वैन संचालन के लिए सेवाप्रदाता चिन्हित करें और तय करें। वैन आपकी ज़रूरत के अनुसार उपयुक्त है, यह देखने के लिए पहले ही जांच कर लें। तब कंपनी से अनुबंध करें।
- विशिष्ट स्थान तय करें जहां शो के लिए वीडियो वैन खड़ी की जाएगी।
- आरंभिक बिंदु से अंत तक मार्ग के नक्शे को अंतिम रूप दें।
- पुलिस और अग्निशमन विभाग से अनुमति लें, यदि ज़रूरत हो।
- आगामी कार्यक्रम की तारीख, समय, तथा आयोजन स्थल के बारे में स्थानीय मीडिया को जानकारी दें।
- कार्यक्रम की योजना तथा आयोजनों के क्रम को अंतिम रूप दें तथा भूमिकाएं और जिम्मेदारियां निर्धारित करें। इसे अपने संगठन के प्राधिकारियों से अनुमोदित कराएं। एक संयोजनकर्ता/आयोजन संचालक चुनें।
- लैंगिक हिंसा पर मुख्य संदेश तैयार करें जो विशिष्ट दर्शकों को दिए जाने हैं। बाद में, अपने विषय विशेषज्ञों से आईईसी तथा ब्रांडिग सामग्रियां जैसे कि बैनर, पुस्तिकाएं, पर्चे, विवरणिकाएं आदि स्थानीय भाषा में तैयार कराएं जो कार्यक्रम के दौरान वितरित की जा सकें।
- मुख्य संदेशों पर आधारित नुक्कड़ नाटक की पटकथा तैयार करें और बाद में प्रदर्शन की समीक्षा करें।
- स्कूल या समुदाय से स्वयंसेवी चुनें जो कार्यक्रम के पहले, दौरान तथा बाद में सहायता कर सकते हों।
- स्वयंसेवियों के योगदान को सम्मानित करने के लिए छोटे-मोटे स्मृति चिन्हों के बारे में तय करें और उसका बजट रखें। इनमें प्रमाणपत्र, स्मृति चिन्ह वस्तुएं, ट्रॉफी आदि हो सकते हैं।
- ऐसे छोटे-मोटे सामानों का बजट रखें और खरीदें, जो बातचीत सत्रों के दौरान सामुदायिक सदस्यों या स्कूली बच्चों को उपहारों/इनामों के रूप में दिए जा सकें।
- लैंगिक हिंसा के मसले पर दर्शकों का ज्ञान और धारणाओं की जांच करने के लिए पूर्व और पश्चात परीक्षण प्रारूप तैयार करें। यह टूल, स्थानीय भाषा में साफ-साफ छपा होना चाहिए।
- समुदाय के लिए कार्यक्रम पूर्व घोषणा की योजना बनाकर इस पर अमल करें।
- कार्यक्रम को वीडियो, ऑडियो, या लिखित टिप्पणियों के रूप में रिकार्ड/दस्तावेजीकृत करने के लिए संसाधन नियुक्त करें और योजना बनाएं।
- आमंत्रण पत्र तैयार करें और सभी महत्त्वपूर्ण हितधारकों को स्वयं दे सकें तो बेहतर होगा।
- मुख्य अतिथि और मुख्य वक्ता तय करें और उन्हें जानकारी दें।
- कार्यक्रम आयोजन से जुड़े सभी लोगों के नामों और संपर्क नम्बरों की सूची तैयार करें।
- समस्त आईईसी सामग्रियां, पर्याप्त मात्राओं में तैयार रखें।
- लक्षित क्षेत्र में लैंगिक हिंसा के प्रचलन से संबंधित तथ्य और आंकड़े तैयार करें।
- एक प्रेस विज्ञप्ति बनाएं और उस दिन के लिए किसी को मीडिया प्रवक्ता के तौर पर नियुक्त करें।
- टीम में हर किसी की जिम्मेदारियों पर जोर देते हुए, अंतिम दिन का एक पूर्व आयोजन करें।

कार्यक्रम आयोजन के दिनः

- उद्घाटन तथा आयोजन स्थल पर समस्त व्यवस्थाओं की सावधानी से जांच करें-मार्ग, अवस्थिति, बैनर, ऑडियो-विजुअल सिस्टम आदि। आयोजन स्थल के लिए जल्दी निकलें और पहुंचें।
- आयोजन से कुछ घंटे पहले घोषणाएं कराना सुनिश्चित करें, विशेषकर गांव में।
- वैन सेवाप्रदाता तथा साझेदारों से तालमेल बनाएं ताकि वैन सही समय पर पहुंचे और कार्यक्रम प्रवाह बना रहे।
- प्रस्तुतियां देने वालों, संगठनकर्ताओं, प्रशिक्षकों, तथा स्वयंसेवियों की टीम को उनकी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के बारे में संक्षेप में जानकारी दें।
- स्वयंसेवियों की मदद से गतिविधियों का प्रवाह और भीड़ को संभालें।
- समुदाय के साथ कुछ खेलों, जैसे कि एक दूरी से बोतलों पर छल्ले डालना, आंखों पर पट्टी बांधकर कोई कार्य करना आदि से कार्यक्रम की शुरूआत करें। ये खेल, भीड़ को आकर्षित करने के लिए होते हैं। अब, लैंगिक हिंसा की समस्या पर आधारित वीडियो चलाया जाता है। बाद में नुक्कड़ नाटक का मंचन किया जाता है।
- दर्शकों को सम्बोधित करने के लिए समुदाय/स्कूल से अन्य वक्ताओं को आमंत्रित करें।

- तब, दर्शकों को निर्देशित विशिष्ट प्रश्न पूछते हुए चर्चा का संचालन करें:
  - अभी उन्होंने क्या देखा
  - वे इस बारे में क्या सोचते हैं
  - क्या ऐसा कुछ उनके समुदाय में होता है
  - किस सीमा या स्तर तक
  - समस्या के लिए कौन जिम्मेदार है
  - समस्या हल करने के लिए क्या किया जा सकता है
  - हमारी भूमिका क्या है।
- सुनिश्चित करें कि स्वयंसेवियों द्वारा आईईसी सामग्रियां समस्त दर्शकों के बीच वितरित की जाएं।
- सुनिश्चित करें कि पूर्व तथा पश्चात परीक्षण प्रारूप वाले फार्म वितरित, एकत्रित, तथा कार्यक्रम के पश्चात जमा किए जाएं।
- कुछ पेन तैयार रखें, क्योंकि लोगों को फार्म भरने के लिए ज़रूरत पड़ सकती है।
- कार्यक्रम के बारे में प्रतिभागियों से प्रतिक्रियाएं लें और इसे लिखें या ऑडियो/वीडियो के जरिए रिकार्ड करें।
- फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी तथा/या लिखित रिपोर्ट के रूप में कार्यक्रम का दस्तावेजीकरण सुनिश्चित करें।
- स्कूली बच्चों या समुदाय के साथ बातचीत के सत्र के दौरान, खासतौर से प्रश्न और उत्तर वाले चक्र के समय, छोटे-मोटे उपहारों/इनामों के माध्यम से सकारात्मक और उत्साहजनक प्रतिक्रियाओं के लिए सम्मानित करें।
- समय देने, तथा सक्रिय भागीदारी के लिए समुदाय/स्कूली बच्चों को बाद में धन्यवाद दें।
- प्रेस विज्ञप्ति सौंपें और प्रवक्ता द्वारा मीडिया से संपर्क किया जाना सुनिश्चित करें।

कार्यक्रम आयोजन के बाद:

- विविध ऑनलाइन और ऑफलाइन प्लेटफार्मों तथा दानदाताओं के सम्मुख कार्यक्रम की रिपोर्ट करें।
- सभी सेवाप्रदाताओं के भुगतान करें।
- प्रभावकर्ताओं तथा साझेदारों के सहयोग और सहभागिता के लिए उनको धन्यवाद पत्र भेजें।
- स्वयंसेवकों का धन्यवाद करें।
- फ्री प्रेस कवरेज दस्तावेज तथा समतुल्य उद्धृत विज्ञापन मूल्य फाइल करें।
- निगरानी तथा मूल्यांकन टीम/विभाग को सभी पूर्व और पश्चात परीक्षण प्रारूप सौंपें।
- इन प्रारूपों से निष्कर्षों का विश्लेषण प्राप्त करें।
- उपलब्धियों, चुनौतियों, तथा कमियों के संदर्भ में पूरे कार्यक्रम आयोजन की समीक्षा करें। ये बातें लिखें और भावी संदर्भ के लिए टिप्पणियां बनाकर रखें।
- लिखित रिपोर्टें/विशेषताएं, फोटोग्राफ तथा वीडियो आदि संबंधित आंतरिक प्राधिकारियों और बाहरी एजेंसियों तथा हितधारकों व दानदाताओं को भेजें।

कार्यक्रम आयोजन से पहले	कार्यक्रम आयोजन के दिन	कार्यक्रम आयोजन के बाद
• वीडियो तथा नुक्कड़ नाटक सहित पूरे कार्यक्रम की योजना बनाएं। • बजट बनाएं। • एनजीओ/स्कूल/वैन सेवाप्रदाता से साझेदारी को अंतिम रूप दें। • समुदाय के प्रतिनिधियों से मिलें। • सही स्थान व समय तय करें। • वैन के मार्ग का नक्शो बनाएं। • पुलिस की अनुमति लें। • मुख्य संदेशों को अंतिम रूप दें। • आईईसी सामग्रियां तैयार करें। • निमंत्रण भेजें। • स्वयंसेवकों को चिन्हित करें। • दस्तावेजीकरण तथा एमएंडई के लिए व्यवस्थाएं लागू करें।	• आयोजन स्थल तथा व्यवस्थाओं की जांच करें। • घोषणाएं करें। • आइस ब्रेकिंग खेल आयोजित करें। • पूर्व तथा पश्चात परीक्षण प्रारूप वाले फार्म वितरित करें तथा निर्देश दें। • समय का ध्यान रखें। • वीडियो चलाएं। • नुक्कड़ नाटक करें। • अन्यक वक्ताओं को आमंत्रित करें। • चर्चाएं कराएं। • आईईसी सामग्रियां वितरित करें। • मीडिया को प्रेस विज्ञप्ति सौंपें। • कार्यक्रम का दस्तावेजीकरण करें।	• कार्यक्रम की ऑनलाइन और ऑफलाइन रिपोर्ट करें। • सभी सेवाप्रदाताओं के भुगतान करें। • स्वयंसेवकों का धन्यवाद करें। • धन्यवाद के पत्र भेजें। • मीडिया कवरेज अनुवर्तन (फॉलो-अप) करें। • एमएंडई विभाग को सभी पूर्व और पश्चात परीक्षण प्रारूप सौंपें। • टीम के साथ कार्यक्रम की समीक्षा करें। • सबक लिखें।

क्या करें और क्या न करें

- परीक्षण के आधार पर सदैव वीडियो वैन के मार्ग का नक्शा तैयार करें। यह सुनिश्चित करें कि सड़कें पहुंच योग्य हों और वैन जाने भर के पर्याप्त रास्ते हों। विशेष रूप से, किसी तरह के अवरोधों जैसे कि पेड़, छत, तीखा मोड़ या कोना आदि की संभावनाओं पर अवश्य विचार कर लें।
- कार्यक्रम के दौरान कोई विलम्ब या विफलताओं से बचाव के लिए सभी ज़रूरी अनुमतियां पहले से ही ले लें।
- वैन खड़ी करने तथा कार्यक्रम आयोजित करने के लिए चुना गया स्थान, जाति धर्म आदि के आधार पर किसी भेदभाव से रहित एकदम तटस्थ स्थान होना चाहिए। प्रायः गांव में कुछ जगहें ऐसी होती हैं जहां सभी जातियों के लोगों का जाना मना रहता है, और यह सामुदायिक सदस्यों की समग्र प्रतिभागिता को बाधित कर सकता है।
- गांव तथा स्कूल में वीडियो वैन कार्यक्रम आयोजित करने के लिए समय का चुनाव, समुदाय या स्कूल के प्राधिकारियों से परामर्श करके इस तरह तय करना चाहिए कि जब ज्यादा से ज्यादा दर्शकों को मोबिलाइस किया जा सके। फसल कटाई के समय, त्यौहार या स्कूल में परीक्षाओं के समय आदि के दौरान ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने से बचना चाहिए जब अधिकतर सामुदायिक सदस्य व्यस्त होते हैं।
- कार्यक्रम में आमंत्रित जनमत प्रेरकों के भाषणों में लैंगिक भेदभाव वाली बातों और नजरियों की झलक नहीं मिलनी चाहिए। यदि संभव हो, तो उन्हें कार्यक्रम में उनकी प्रतिभागिता को लेकर पहले ही संक्षिप्त जानकारी दे दी जानी चाहिए।
- यदि कार्यक्रम को कवर करने के लिए मीडिया को बुलाया गया है, तो संगठन के प्रवक्ता के रूप में केवल एक व्यक्ति को नियुक्त करना अनिवार्य हो जाता है। कार्यक्रम के लिए पहले से प्रेस विज्ञप्ति (पर्यवेक्षकों द्वारा पहले ही परीक्षण की जा चुकी) तैयार रखना भी उचित रहता है।
- समुदाय में स्थानीय भाषा में उपयुक्त आईईसी सामग्रियां वितरित किए बिना कार्यक्रम समाप्त नहीं करना चाहिए। ज़रूरी हो तो ऐसे संगठनों तथा व्यक्तियों के नाम व हेल्पलाइन नम्बर आदि की जानकारी भी दी जानी चाहिए जिनसे बाद में संपर्क किया जा सके।
- वीडियो वैन कार्यक्रम के लिए नियुक्त संयोजनकर्ताअनुदेशकया कार्यक्रम संचालक को मसले की पूरी जानकारी होनी चाहिए तथा समुदाय के स्वरूप के बारे में पूरी तरह पता होना चाहिए। इससे समुदाय से सार्थक व्यवहार करने तथा लैंगिक हिंसा के मसले पर सही संदेश देने में मदद मिलती है।
- यदि एक ही दिन में कई वीडियो वैन कार्यक्रमों की योजना बनाई गई है, तो सभी टीमों से तालमेल बनाना और कार्रवाईयों की निगरानी रखना महत्त्वपूर्ण है।
- कुछ नई चीज़ें, जो दिखने में हालांकि छोटी-मोटी हो सकती हैं, वे प्रमुख हितधारकों से सुदृढ़ रिश्ता कायम करने तथा मसले पर उनका सक्रिय सहयोग हासिल करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण साबित हो सकती हैं। इनमें से कुछ निम्न हैं:
- वीडियो वैन कार्यक्रम की योजना में सामुदायिक प्रतिनिधियों को केंद्रीय भूमिका सौंपना।
- शुरूआत में वैन को झंडी दिखाने के लिए किसी सरकारी अधिकारी/पुलिस प्रतिनिधि को शामिल करना।
- वीडियो शो शुरू करने के लिए टीवी का रिमोट गांव के सामुदायिक/पीआरआई नेता को सौंपना।
- कार्यक्रम संचालक के साथ कार्यक्रम के संचालन में किसी पीआरआई सदस्य का सहयोग मांगना।
- प्रश्न-उत्तर सत्र में सकारात्मक तथा उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं देने वाले सामुदायिक सदस्यों को इनाम वितरित करने के लिए पीआरआई सदस्य/पुलिस/सरकारी अधिकारियों से कहना।

कार्यक्षेत्र से सफलता के दृष्टांत

- सामुदायिक मोबिलाइज़ेशन की रणनीति के रूप में वीडियो वैन अभियान की सफलता, सामुदायिक पहुंच अधिकतम बनाने की इसकी क्षमता में निहित है।
- वीडियो वैन अभियानों से संबंधित कुछ विशेष सफलताएं नीचे दी गई हैं।
- वीडियो वैन अभियान, लैंगिक हिंसा के मसले पर अन्य प्रशिक्षणों, बैठकों तथा कार्यशालाओं के संदेशों तथा सीखी बातों को अनिवार्य रूप से सुदृढ़ता प्रदान करते हैं।
- लैंगिक हिंसा की बुराई के बारे में शुरू होने वाले संवाद के रूप में प्रायः तत्काल असर दिखाई देता है। जनता, सामान्य रूप से, लैंगिक हिंसा को एक सामाजिक बुराई के रूप में स्वीकार करने लगती है और समस्या हल करने के लिए संभावित समाधानों की धीरे-धीरे खोज करने लगती है। लैंगिक हिंसा के नकारात्मक प्रभावों के बारे में समुदाय को संवेदी बनाने की जिम्मेदारी युवा लड़कियों को सौंपा जाना, तथा सामुदायिक प्रभावकर्ताओं-पीआरआई सदस्यों, शिक्षाविदों, तथा धार्मिक नेताओं की सक्रिय सहभागिता द्वारा प्रचलित कानूनों का बेहतर क्रियान्वयन, समाधानों में शामिल हैं।
- ये आयोजन, विभिन्न स्तरों पर समुदाय से बेहतर रिश्ते बनाने में मदद कर सकते हैं। कार्यक्रम के पहले, दौरान तथा बाद में तालमेल गतिविधियां, नेटवर्किंग बनाने और समुदाय में जमीनी स्तर की मौजूदगी बढ़ाने में मदद करती हैं।
- पीआरआई तथा सेवाप्रदाता धीरे-धीरे लैंगिक हिंसा के मसले पर रूचि लेने लगते हैं, उदाहरण के लिए रांची में एक सरपंच जिसने पहले अपने गांव में लैंगिक हिंसा के मामलों का होना अस्वीकार किया था, उसने वीडियो वैन कार्यक्रम देखने के बाद अपने यहां लैंगिक हिंसा के 10 मामलों की पहचान की तथा स्थानीय पुलिस की मदद से अपने क्षेत्र में इस कुप्रथा को चुनौती देने का बीड़ा उठाया। हस्तक्षेप के क्षेत्र में ब्रेकथ्रू

के साझेदार संगठन द्वारा वीडियो वैन कार्यक्रम चलाने के बाद घरेलू हिंसा के मामलों की रिपोर्टिंग में 16% बढ़ोत्तरी एक अन्य उदाहरण है।

- ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनमें पुलिस ने क्षेत्र में विद्रोह की आशंका से निबटने के लिए वीडियो वैन कार्यक्रमों के साथ सशस्त्र सिपाहियों को नियुक्त किया बिना किसी शुल्क के।

चुनौतियां और न्यूनीकरण

- वीडियो वैन टीमों के लिए सुरक्षा खतरों से निबटने के लिए, खासतौर से बगावत वाले क्षेत्रों में, कार्यक्रम से पहले दर्शकों के बारे में पूरी जानकारी हासिल कर लेना बेहतर रहता है। सावधानीपूर्वक योजना बनाना तथा व्यवस्था करना बहुत अनिवार्य है और यदि आवश्यकता हो तो पुलिस सुरक्षा लेना भी अच्छी न्यूनीकरण रणनीति हो सकती है।
- अभियान की तरह काम करने और कई वीडियो वैन शो एक ही चक्र में करने से दल तथा पूरी टीम पर बहुत जोर पड़ता है। इससे बहुत थकावट आती है और एकरसता बन जाने की वजह से समीक्षा व विचारों के आदान-प्रदान के लिए समय नहीं रहता। इस मसले से निबटने के लिए, शोज के बीच में पर्याप्त अंतराल होना चाहिए और टीम को समीक्षा, आराम, तथा कार्य का आनंद लेने के लिए पर्याप्त समय की व्यवस्था होनी चाहिए।
- वीडियो वैन कार्यक्रमों के दौरान सामुदायिक सदस्यों की कम उपस्थिति तथा सीमित प्रतिभागिता की रोकथाम के लिए, यह महत्त्वपूर्ण है कि तारीख और समय का चुनाव सामुदायिक प्रतिनिधियों के परामर्श से किया जाए और आगामी आयोजन के बारे में घोषणाओं तथा मौखिक प्रचार-प्रसार के माध्यम से सूचनाओं को अच्छी तरह प्रसारित किया जाए। साझेदार एनजीओ, सामुदायिक स्वयंसेवी, तथा स्थानीय प्रतिनिधि भरपूर सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित करने के मामले में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
- वीडियो वैन टीमों को कार्यक्रम के दौरान शराब का सेवन किये(पियक्कड़) व्यक्तियों के कारण फसादों का सामना करना पड़ सकता है, विशेषकर शाम या देर-शाम के समय जिससे कार्यक्रम की कुल लय में अनावश्यक शोर और व्यवधान पड़ता है। ऐसी स्थितियों में, पियक्कड़ व्यक्तियों से कोई बहस करने से बचना ही उत्तम है। इसके बजाय, स्थानीय प्रतिनिधियों या नेताओं की सहायता मांगें और उनसे अनुरोध करें कि वे हस्तक्षेप करके कार्यक्रम को प्रभावी बनाने में योगदान करें। उसी समुदाय के सामुदायिक स्वयंसेवी भी ऐसी स्थितियों के समाधान में मदद कर सकते हैं। वास्तव में, गांवों में देर शाम को शो आयोजित करने पर पुलिस सुरक्षा लेना सबसे उत्तम रहता है।
- बातचीत के दौरान, सामुदायिक सदस्य अनुदेशकओं (फैसिलिटेटर) के समक्ष कठिन प्रश्न रख सकते हैं ऐसी स्थिति में चर्चाओं को दूसरे मसलों जैसे कि गरीबी, शिक्षा आदि की तरफ भटकने से बचाते हुए लैंगिक हिंसा के मसले पर केंद्रित रहने के लिए प्रयास करने की ज़रूरत होती है। कुछ सामान्य प्रश्नों में ये शामिल हो सकते हैं-आप/आपका एनजीओ हमारे लिए क्या कर सकते हैं, हमारी कई सारी समस्याएं हैं जो आप नहीं समझ सकते, क्या आप हमारी लड़कियों को पढ़ाओगे, आदि। ऐसे में प्रभावी रणनीति यही हो सकती है कि उनकी बात धैर्यपूर्वक सुनें लेकिन चर्चाओं को वापस लैंगिक हिंसा की तरफ ही मोड़ दें। कुछ प्रश्नों पर जवाब के लिए सामुदायिक नेताओं से मदद लेना भी सहायक हो सकता है।

याद रखने लायक प्रमुख बिंदु!

बहु हितधारकों की भागीदारी सुनिश्चित करें

- अनुभव दर्शाते हैं कि सामुदायिक मोबिलाइज़ेशन के कार्यक्रम जैसे कि वीडियो वैन संचालन, अधिक लाभप्रद हो सकते हैं यदि ये विविध स्तरों पर अनेक हितधारकों तक पहुंचने के लिए डिजाइन किए गए हों। इस मामले में सरकारी कार्मिकों जैसे प्रखंड विकास अधिकारी, तथा प्रखंड शिक्षा अधिकारी, पीआरआई सदस्यों, आईसीडीएस सुपरवाइजरों, स्थानीय एनजीओ, मीडिया, धार्मिक और राजनैतिक नेताओं, स्कूल प्राधिकारियों, एसएचजी, युवा समूहों व व्यापक समुदाय से भागीदारी कराने के प्रयास करना, कार्यक्रम की सफलता के लिहाज से महत्वपूर्ण हैं। इन हितधारकों को लैंगिक हिंसा के मसले पर बातचीत में शामिल करने से अच्छे स्तर का संवेदीकरण हो सकता है और विशेषकर सामुदायिक स्तर पर लैंगिक हिंसा के मसले को चुनौती देते समय उनका समर्थन मिल सकता है।

तथ्य और आंकड़े तैयार रखें

- उन चुनौतियों या प्रश्नों का पहले से अनुमान लगाना उचित रहता है जो समुदाय या दर्शक, बातचीत के सत्र के दौरान संयोजन्कर्ताओंअनुदेशकके सामने खड़े कर सकते हैं। लिहाजा, ऐसे उपयुक्त उत्तरों के साथ तैयारी कर लेने की सलाह दी जाती है जिनमें लैंगिक हिंसा के मसले तथा उस विशिष्ट क्षेत्र में इसके प्रचलन के बारे में निश्चित तथ्य और आंकड़े मौजूद हों। स्थानीय सरकारी कार्मिकों या पीआरआई सदस्यों से निश्चित इनपुट लिए जा सकते हैं।

अनुवर्तन (फॉलो-अप) रणनीति तैयार करें

- वीडियो वैन कार्यक्रम हो जाने के बाद भी समुदाय में प्रायः चर्चाएं होती रहती हैं। स्थानीय एनजीओ साझेदारों या स्कूलों के साथ मिलकर बनाई गई अनुवर्तन (फॉलो-अप) रणनीति यह सुनिश्चित कर सकती है कि औपचारिक या व्यवस्थित अंतर्क्रियाओं जैसे कि प्रशिक्षणों, या बस अनौपचारिक बैठकों, या दोनों के मिले-जुले रूपों के जरिए, मसले के बारे में समुदाय रचनात्मक रूप से जुड़ा रहे। जहां संभव हो, मल्टीमीडिया, ऑनलाइन तथा जनसंचार प्लेटफार्मों के माध्यम से अनुवर्तन (फॉलो-अप) गतिविधियों को एकीकृत करना लाभप्रद हो सकता है।

साक्ष्य उत्पन्न करें

- वीडियो वैन कार्यक्रम, उपयोगी साक्ष्य उत्पन्न करने वाले शिक्षण अवसरों के रूप में ही देखे जाने चाहिए। अतः सरल प्रणालियां जैसे कि छोटे और सरल प्रारूपों (फार्मों) के जरिए पूर्व और पश्चात परीक्षण आयोजित करना, ऑडियो-वीडियो या वर्णनात्मक रिपोर्टों के माध्यम से आयोजन का दस्तावेजीकरण करना, साक्ष्य उत्पन्न करने के लिए उपयोगी हो सकता है। हालांकि डेटा के विश्लेषण से निकलने वाले निष्कर्षों को सामुदायिक पहुंच तथा संगठन की समग्र प्रक्रिया मजबूत बनाने के लिए आंतरिक और वाह्य रूप से रिपोर्ट अवश्य किया जाना चाहिए।

अनुभाग

2

नुक्कड़ नाटकों के ज़रिए हितधारकों को संवेदित बनाना

चंदा पुकारे के साथ वर्णन

एक अवलोकन

नुक्कड़ नाटक की मुख्य विशेषताएं

- यह लैंगिक हिंसा, तथा लड़कियों के जीवन पर इसके प्रभाव के बारे में शिक्षा और मनोरंजन के माध्यम से समुदायों तक पहुंचने, उन्हें शामिल करने व संवेदनशील बनाने के लिए एक सामुदायिक मोबिलाइजेशन टूल है।
- एक युवा किशोरी चंदा, 'चंदा पुकारे' (चंदा पुकारे) नाटक की नायिका है।
- नुक्कड़ नाटक का आयोजन अन्य गतिविधियों जैसे कि वीडियो वैन अभियानों या किशोरवय मेलों के साथ किया जाता है।
- यह नुक्कड़ नाटक, फोरम थिएटर की अवधारणा पर आधारित है जो स्पेक्टेटर/दर्शक (जो देखता है) को स्पेक्ट-एक्टर (जो देखता और कार्रवाई करता है) में रूपांतरित करने के लिए की जाने वाली प्रस्तुति है। मंचीय अभिनेताओं द्वारा एक लघु दृश्य, दमन के मसले को प्रस्तुत करता है और विश्व को यथावत एंटी-मॉडल के रूप में प्रस्तुत करता है। एक महत्त्वपूर्ण बिंदु पर, नाटक रूक जाता है और तब दमन का सामना करने, कार्रवाई के जरिए (नाटक में) परिणाम बदलने के लिए दर्शकों को प्रतिक्रिया करने, अभिनय करने, स्टेज पर आने के लिए प्रेरित किया जाता है। उस क्षण में, संयोजन्कर्ताओंअनुदेशक दर्शक बन जाता है जो कि समुदाय है, वह उन्हें केंद्र में आने, दमित की भूमिका ग्रहण करने, तथा उसक विचार में सही प्रतिक्रिया करने के लिए प्रतिक्रियाओं और प्रोत्साहनों के जरिए प्रेरित करता है। यह शो मंचीय कलाकारों तथा दर्शकों को मनोरंजक ढंग से जोड़ता है और समुदाय को प्रभावित करने वाले एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक सरोकार पर सामूहिक प्रतिक्रिया के साथ सामुदायिक संवाद प्रेरित करता है।

संभावित आयोजन स्थल

किसी समुदाय विशेष को मोबिलाइज करने के लिए किसी निर्दिष्ट ग्राम पंचायत में नुक्कड़ नाटक स्कूलों, बाज़ारों तथा खुले समुदायों/गांवों में आयोजित किए जा सकते हैं।

दर्शकों का प्रकार

दर्शकों में आमतौर से-सामान्य समुदाय (महिलाएं और पुरूष, बुजुर्ग), एसएचजी, सीबीओ, एनजीओ, युवा और बच्चे, धार्मिक नेता तथा सेवाप्रदाता जैसे कि आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियां, सहायक नर्स मिडवाइफें, प्रशिक्षित दाईयां, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के कर्मचारी, अध्यापक, पीआरआई के सदस्य, सरकारी कार्मिक, तथा महत्त्वपूर्ण जनमत वाहक (ओपिनियन लीडर) शामिल होते हैं।

कार्यक्रम की अवधि

नाटक एक घंटे से कुछ कम (45-50 मिनट) अवधि का रखा जाता है।

समुदाय से प्रतिक्रिया

- नुक्कड़ नाटक की तत्काल प्रतिक्रिया दर्शकों के बीच लैंगिक हिंसा के बारे में एक संवाद के रूप में होती है।
- वीडियो शो तथा नुक्कड़ नाटक, अच्छी प्रस्तुति के साथ एक प्रेरक माहौल बनाते हैं, जो दर्शकों को मसले पर विचार करने में मदद करते हैं।
- यह उनको व्यक्तिगत स्तर पर मसले को समझने, तथा उनके समुदाय में इसके दायरे तथा विविध आयामों का विश्लेषण करने की सुविधा देता है।
- इस सोच-विचार से एक चर्चा उत्पन्न होती है, जो मसले के समाधान में उनकी भूमिकाओं की खोजबीन, तथा बाद में उनके स्तर से संभावित समाधान खोजने पर आधारित होती है।
- लड़कियों पर लैंगिक हिंसा के नकारात्मक प्रभावों को महत्त्वपूर्ण हितधारकों और जनमत वाहकों द्वारा स्वीकार किया जाना, संदेश का कुल वजन (प्रभाव) बढ़ा देता है।

नुक्कड़ नाटक आयोजित करने की प्रक्रिया

कार्यक्रम आयोजन से पहले

- नुक्कड़ नाटक की पटकथा तैयार करें: इस मामले में, चंदा पुकारे की पटकथा, ग्यारह साल की एक उत्साही ग्रामीण लड़की के इर्द-गिर्द घूमती है जो अपने बड़े भाई की तरह स्कूल जाना चाहती है लेकिन मौजूदा शोषणकारी लैंगिक मानकों और कुरीतियों की वजह से वह विकास के इस अवसर से वंचित है। उसका पिता, जो एक बार उसे स्कूल जाने की अनुमति दे देता है, आखिरकार उसे रोक देता है और उसका विवाह करने का निर्णय कर लेता है। (नाटक की हिन्दी पटकथा के लिए संलग्नक का भाग 1 देखें।)
- नुक्कड़ नाटक के पेशेवर कलाकारों की पहचान करें व उन्हें जोड़ें: इस नाटक की पटकथा में 3 पुरूष और 2 महिला पात्र हैं जो ऐसे कलाकारों द्वारा अभिनीत किए जाने चाहिए जिनको ग्रामीण व शहरी समुदायों में नुक्कड़ नाटक करने का गहन अनुभव हो। यह आवश्यक है कि कलाकारों में उत्साह हो, जोशीले हों, प्रेरित हों और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह कि वे लैंगिक हिंसा के मसले पर सीखने के इच्छुक हों और अभिनय व प्रस्तुति में नए तरीके समावेशित करना चाहते हों। अभिनय करने वाली टीम बनाते समय इन बातों का ध्यान रखा जाना आवश्यक है।
- नाटक में 'जोकर' की भूमिका निभाने या अनुदेशकके रूप में सहयोग करने तथा प्रस्तुति के दौरान मसले के बारे में संवेदनशीलता व समझ बढ़ाने के लिए किसी एनजीओ प्रतिनिधि को चुनें। यह मूल्य संवर्धन, प्रस्तुति के दौरान सुदृढ़ता और आत्मविश्वास बढ़ाएगा तथा टीम की क्षमता बढ़ाने के मामले में अच्छी रणनीति साबित होगा और अच्छी गुणवत्ता का आउटपुट सुनिश्चित करेगा।
- प्रदर्शन करने वाली टीम तथा जोकर का प्रशिक्षण चार क्षेत्रों पर आधारित होना चाहिए-शिल्प और तकनीक, मसले को प्रभावित करने वाली नीतियां और कानून, मनोविज्ञान तथा व्यवहार का ज्ञान, तथा प्रक्रिया निर्देशित करने वाले मूल्य और विश्वास। भाषा तथा गतिविधियों, चुटकुलों और टिप्पणियों, तथा दर्शकों से अमौखिक संवाद के संदर्भ में टीम के अभिनय के लिए आवश्यक संवेदनशीलताएं और नैतिक मान्यताएं सीखना अनिवार्य है। कलाकारों को मसले से घनिष्ठ रूप में जोड़ पाना तथा शोषित और शोषक दोनों के नजरिए से इसे समझ पाना और समुदाय के प्रश्नों व प्रतिक्रियाओं के जवाब राजनैतिक रूप से निष्पक्ष ढंग से दे पाना एक चुनौती होती है। दर्शकों से अप्रत्याशित प्रतिक्रियाएं संभालने के लिए कलाकारों को सहजबुद्धि और हाजिरजवाबी के कौशलों से लैस किया जाना चाहिए। एक मूल्य आधारित ढांचे में कार्य करने के लिए कलाकारों को प्रेरित करना, प्रशिक्षण का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पहलू है, जहां हिंसा, शोषण, दुर्व्यवहार, तथा अधिकारों के प्रति भेदभाव पूरी तरह से कठोर हैं।
- आकस्मिक चीज़ों के लिए एक निश्चित प्रतिशत भाग अलग रखते हुए कार्यक्रम का बजट बनाएं और इसका कड़ाई से पालन करें।
- एनजीओ/सीबीओ साझेदारों तथा समुदायों व स्कूलों की पहचान करें जहां नाटक किया जाना है। इन स्थानों पर मुख्य प्राधिकारियों से मुलाकातें तय करें।
- एनजीओ/सीबीओ या स्कूल के मुख्य प्राधिकारियों से मिलें और मसले के बारे में, तथा कार्यक्रम के उद्देश्य और अपेक्षित प्रतिक्रिया के बारे में उन्हें विस्तार से जानकारी दें।
- ग्राम स्तर का कार्यक्रम होने पर, गांव के बुजुर्गों, पीआरआई सदस्यों, तथा जनमत वाहकों से शुरूआती बैठकें करते हुए उनको कार्यक्रम आयोजित करने के उद्देश्य और औचित्य के बारे में बताएं।
- संबंधित प्राधिकारियों से मिलकर कार्यक्रम की तारीखें, स्थान तथा अवधि पर चर्चा करें और तय करें।
- विशिष्ट स्थान तय करें जहां नाटक किया जाएगा।
- आगामी कार्यक्रम की तारीख, समय, तथा आयोजन स्थल के बारे में स्थानीय मीडिया को जानकारी दें।
- कार्यक्रम की योजना तथा आयोजनों के क्रम को अंतिम रूप दें तथा भूमिकाएं और जिम्मेदारियां निर्धारित करें।
- लैंगिक हिंसा पर मुख्य संदेश तैयार करें जो विशिष्ट दर्शकों को दिए जाने हैं। बाद में, अपने विषय विशेषज्ञों से आईईसी तथा ब्रांडिग सामग्रियां जैसे कि बैनर, पुस्तिकाएं, पर्चे, विवरणिकाएं आदि स्थानीय भाषा में तैयार कराना शुरू कर सकते हैं जो कार्यक्रम के बाद वितरित की जा सकें।
- स्कूल या समुदाय से किशोरवय स्वयंसेवी चुनें जो कार्यक्रम के पहले, दौरान तथा बाद में सहायता कर सकते हों।
- स्वयंसेवियों के योगदान को सम्मानित करने के लिए छोटे-मोटे स्मृति चिन्हों के बारे में तय करें और उसका बजट रखें। इनमें प्रमाणपत्र, स्मृति चिन्ह वस्तुएं, ट्रॉफी आदि हो सकते हैं।
- ऐसे छोटे-मोटे सामानों का बजट रखें और खरीदें, जो बातचीत सत्रों के दौरान सामुदायिक सदस्यों या स्कूली बच्चों को उपहारों/इनामों के रूप में दिए जा सकें।

- लैंगिक हिंसा के मसले पर दर्शकों का ज्ञान और धारणाओं की जांच करने के लिए पूर्व और पश्चात परीक्षण प्रारूप तैयार करें। यह टूल, स्थानीय भाषा में साफ-साफ छपा होना चाहिए।
- समुदाय के लिए कार्यक्रम पूर्व घोषणा की योजना बनाकर इस पर अमल करें।
- कार्यक्रम को वीडियो, ऑडियो, या लिखित टिप्पणियों के रूप में रिकार्ड/ दस्तावेजीकृत करने के लिए संसाधन नियुक्त करें और योजना बनाएं।
- आमंत्रण पत्र तैयार करें और सभी महत्त्वपूर्ण हितधारकों को स्वयं दे सकें तो ज्यादा ठीक है।
- समस्त आईईसी सामग्रियां, पर्याप्त मात्राओं में तैयार रखें।
- लक्षित क्षेत्र में लैंगिक हिंसा के प्रचलन से संबंधित तथ्य और आंकड़े तैयार करें।

कार्यक्रम आयोजन के दिन

- उद्घाटन तथा आयोजन स्थल पर समस्त व्यवस्थाओं की सावधानी से जांच करें-मार्ग, अवस्थिति, बैनर, ऑडियो-विजुअल सिस्टम आदि। आयोजन स्थल के लिए जल्दी निकलें और पहुंचें।
- नाटक शुरू होने से पहले, लैंगिक हिंसा पर आधारित विचारोत्तेजक फोटो और संदेशों वाले स्टैंडी लगाकर एक उत्साहजनक माहौल बनाएं।
- आयोजन से कुछ घंटे पहले घोषणाएं कराना सुनिश्चित करें, विशेषकर गांव में।
- प्रदर्शक दल से तालमेल बनाएं ताकि वे सही समय पर पहुंचे और कार्यक्रम प्रवाह बना रहे।
- प्रस्तुतियां देने वालों, संगठनकर्ताओं, प्रशिक्षकों, तथा स्वयंसेवियों की टीम को उनकी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के बारे में संक्षेप में जानकारी दें।
- स्वयंसेवियों की मदद से गतिविधियों का प्रवाह और भीड़ को संभालें।
- खेल या आइसब्रेकर, पूरी प्रक्रिया का अच्छा शुरूआती बिन्दु होते हैं। 'जोकर' ऐसा कोई खेल या गतिविधि शुरू कर सकता है जो अनिवार्य रूप से दर्शकों को सहज होने, ऊर्जा अनुभव करने, तथा नाटक में रूचि लेने में मदद करेगा। दर्शकों की रूचि जगाने और प्रेरित करने के लिए विविध खेल जैसे कि तालियां बजाना, विपरीत शब्द जोर से बोलना, खास लहजों में वाक्य दोहराना आदि किए जा सकते हैं। ये खेल, कलाकारों तथा दर्शकों के बीच घनिष्ठता बढ़ाने में बड़ा योगदान करते हैं।
- सुनिश्चित करें कि पूर्व तथा पश्चात परीक्षण प्रारूप वाले फार्म वितरित, एकत्रित, तथा फिर जमा किए जाएं।
- शुरूआत में ही समुदाय को यह बता देना ज़रूरी है कि जो नाटक उन्होंने पहले देखे हो सकते हैं, उनसे यह नाटक एकदम अलग तरह का होगा। दर्शकों से यह अपेक्षा शुरूआत में ही स्पष्ट करनी ज़रूरी है कि नाटक अपने चरम पर पहुंचने पर उनको इससे जुड़ना होगा। ऐसी बातें, जैसे कि 'इस नाटक का अंत आपको तय करना होगा, क्योंकि हमें नहीं पता कि वह क्या है.....इसलिए आप में से कौन-कौन इसे अंजाम तक पहुंचाने के लिए तैयार है!' उपयोग की जा सकती हैं। जहां एक स्तर पर यह दर्शकों की जिज्ञासा और रूचि बढ़ाता है, वहीं अन्य स्तर पर यह प्रक्रिया में उनकी भागीदारी की अपेक्षा से भी उन्हें परिचित करा देता है।
- वास्तविक प्रस्तुति-पृष्ठभूमि बन जाने के बाद, प्रस्तुति शुरू की जा सकती है। अभिनय के दौरान, शो को जीवंत तथा रोचक बनाए रखने के लिए दर्शकों से निरंतर संवाद बनाए रखना चाहिए। क्लाइमेक्स तक पहुंचने के बाद (जब नायिका चंदा अपने विवाह के विरोध में अपने पिता को मनाने का प्रयास करती है) नाटक रूक जाता है। अब, फोरम शुरू हो जाता है और दर्शकों से प्रतिक्रिया देने के लिए कहा जाता है जब चंदा अपने भावी दूल्हे और उसके परिवार से मिलने से मना कर देती है। यदि दर्शक अपनी इच्छा से आगे न आएं, तो जोकर द्वारा उनको आगे आने और संकेत के तौर पर लाल दुपट्टे का उपयोग करके चंदा की भूमिका करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। पिता और चंदा स्पेक्ट-एक्टर के बीच बातचीत तब तक चलेगी जब तक कहानी का संतोषजनक समापन नहीं हो जाता।
- अंत में, संयोजनकर्ता (फैसिलिटेटर) या जोकर, नाटक का समापन करते हुए संक्षेप में मुख्य संदेश देता है। वह दर्शकों को भी समय देने तथा धैर्य बनाए रखने के लिए धन्यवाद देता है। इसके बाद लैंगिक हिंसा पर आधारित साहित्य वितरित किया जाता है और दर्शकों द्वारा भरे गए परीक्षण पश्चात फार्म एकत्रित किए जाते हैं।
- समुदाय/स्कूल से अन्य वक्ताओं को दर्शकों को सम्बोधित करने के लिए आमंत्रित करें।
- तब, दर्शकों को निर्देशित विशिष्ट प्रश्न पूछते हुए चर्चा का संचालन करें :
  - अभी उन्होंने क्या देखा
  - वे इस बारे में क्या सोचते हैं
  - क्या ऐसा कुछ उनके समुदाय में होता है
  - किस सीमा या स्तर तक
  - समस्या के लिए कौन जिम्मेदार है
  - समस्या हल करने के लिए क्या किया जा सकता है
  - हमारी भूमिका क्या है।
- सुनिश्चित करें कि स्वयंसेवियों द्वारा आईईसी सामग्रियां समस्त दर्शकों के बीच वितरित की जाएं।
- सुनिश्चित करें कि पूर्व तथा पश्चात परीक्षण प्रारूप वाले फार्म वितरित, एकत्रित, तथा कार्यक्रम के पश्चात जमा किए जाएं।
- कुछ पेन तैयार रखें, क्योंकि लोगों को फार्म भरने के लिए ज़रूरत पड़ सकती है।
- पूर्व तथा पश्चात परीक्षणों में निम्न लिखित वस्तुनिष्ठ वाले प्रश्न हो सकते हैं:
  - क्या लड़की के जन्म पर भी लड़के की तरह खुशियां मनाई जानी चाहिए?
  - क्या लड़कियों और लड़कों को एक जैसी शिक्षा दिलानी चाहिए?
  - क्या लड़कियों और लड़कों के लिए कैरियर के एक जैसे अवसर होने चाहिए?

- क्या लड़कियों का विवाह 18 वर्ष आयु से पहले कर देने से उनके स्वास्थ्य पर खराब असर पड़ता है?
- क्या आपके विचार में कोई लड़की/लड़का 18/21 वर्ष आयु से पहले विवाह के बाद की जिम्मेदारियां उठाने के लिए (भावनात्मक और शारीरिक रूप से) तैयार होता है?
- क्या लड़की के लिए यह उचित है कि वह अपनी 18 वर्ष आयु से पूर्व अभिभावकों द्वारा तय किया जा रहा विवाह करने से मना कर दे?
- क्या लड़कियां और लड़के अपनी इच्छानुसार कब विवाह करना है ये तय कर सकते हैं?
- सरकार ने लड़कियों की शिक्षा और विवाह के लिए विविध सेवाएं प्रदान की हुई हैं?
- क्या आपके विचार में इस तरह के कार्यक्रम, शीघ्र विवाह के दुष्परिणामों के प्रति लोगों की जागरूकता बढ़ाएंगे?
- यदि आपको अपने समुदाय में किसी लैंगिक हिंसा का पता चले, तो क्या आप उसके खिलाफ कार्रवाई करेंगे?
- क्या आप लैंगिक हिंसा के विरूद्ध कार्रवाई के लिए अपने समुदाय में दूसरे लोगों को प्रेरित करेंगे?

- इसके अलावा, नई या असाधारण घटनाएं या प्रतिक्रियाएं, टीम द्वारा अलग से लिखी जा सकती हैं। सफल केस अध्ययन भी विकसित और रिपोर्ट किए जा सकते हैं।
- कार्यक्रम के बारे में प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया/साउंड बाइट/ वीडियो शॉट लें और इसे लिखित में या ऑडियो/वीडियो के जरिए दस्तावेजीकृत करें।
- फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी तथा/या लिखित रिपोर्ट के रूप में कार्यक्रम का दस्तावेजीकरण सुनिश्चित करें।
- स्कूली बच्चों या समुदाय के साथ बातचीत के सत्र के दौरान, खासतौर से प्रश्न और उत्तर वाले चक्र के समय, छोटे-मोटे उपहारों/इनामों के माध्यम से सकारात्मक और उत्साहजनक प्रतिक्रियाओं को सम्मानित करें।
- लैंगिक हिंसा पर आधारित लघुकथाओं तथा संदेशों वाले चमकदार और रंगीन चित्रात्मक कार्ड, स्थानीय भाषा में आईईसी सामग्रियों के रूप में विकसित तथा दर्शकों के बीच वितरित किए जा सकते हैं। इसी प्रकार, लैंगिक हिंसा के बारे में जानकारी तथा लैंगिक हिंसा की घटना होने पर मदद कहां से तथा कैसे ली जा सकती है, आदि जानकारी देने वाली चित्र-पुस्तिकाएं तैयार की जानी चाहिए। इन पुस्तिकाओं में यौन अधिकार के आयाम कि समस्या पर भी बात कि जा सकती है, जिस पर नाटक के दौरान बात करना कठिन हो सकता है। नाटक के संदेश सुदृढ़ बनाने तथा समुदाय को बेहतर याद रखने में मदद के लिए ऐसे संवाद संसाधन बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।
- समय देने, तथा सक्रिय भागीदारी के लिए समुदाय/स्कूली बच्चों को बाद में धन्यवाद दें।

कार्यक्रम आयोजन के बाद:

- विविध ऑनलाइन और ऑफलाइन प्लेटफार्मों तथा दानदाताओं (डोनर्स) के सम्मुख कार्यक्रम का प्रतिवेदन प्रस्तुत करें।
- सभी सेवाप्रदाताओं के भुगतान करें, अगर कोई हो ।
- प्रभावकर्ताओं तथा साझेदारों के सहयोग और सहभागिता के लिए उनको धन्यवाद पत्र भेजें।
- स्वयंसेवकों का धन्यवाद करें।
- फ्री प्रेस कवरेज दस्तावेज तथा समतुल्य उद्धृत विज्ञापन मूल्य फाइल करें।
- निगरानी तथा मूल्यांकन टीम/विभाग को सभी पूर्व और पश्चात परीक्षण प्रारूप सौंपें।
- इन प्रारूपों से निष्कर्षों का विश्लेषण प्राप्त करें।
- उपलब्धियों, चुनौतियों, तथा कमियों के संदर्भ में पूरे कार्यक्रम आयोजन की समीक्षा करें। ये बातें लिखें और भावी संदर्भ के लिए टिप्पणियां बनाकर रखें।
- लिखित रिपोर्ट/मुख्य बातें, फोटोग्राफ तथा वीडियो आदि संबंधित आंतरिक प्राधिकारियों और बाहरी एजेंसियों तथा हितधारकों व दानदाताओं को भेजें।

कार्यक्रम आयोजन से पहले	कार्यक्रम आयोजन के दिन	कार्यक्रम आयोजन के बाद
• वीडियो तथा नुक्कड़ नाटक सहित पूरे कार्यक्रम की योजना बनाएं। • नाटक की पटकथा तैयार करें। • प्रस्तुति दल तथा विदूषक नियुक्त और प्रशिक्षित करें। • बजट बनाएं। • एनजीओ/स्कूल/एसएचजी से साझेदारी को अंतिम रूप दें। • समुदाय के प्रतिनिधियों से मिलें। • सही स्थान व समय तय करें। • मुख्य् संदेशों को अंतिम रूप दें। • आईईसी सामग्रियां तैयार करें। • निमंत्रण भेजें। • स्वयंसेवकों को चिन्हित करें। • दस्तावेजीकरण तथा एमएंडई के लिए व्यवस्था स्थापित करें।	• आयोजन स्थल तथा व्यवस्थाओं की जांच करें। • घोषणाएं करें। • आइस ब्रेकिंग खेल आयोजित करें। • पूर्व तथा पश्चात परीक्षण प्रारूप वाले फार्म वितरित करें तथा निर्देश दें। • नुक्कड़ नाटक करें। • अन्यक वक्ताओं को आमंत्रित करें। • चर्चाएं कराएं। • आईईसी सामग्रियां वितरित करें। • कार्यक्रम का दस्तावेजीकरण करें।	• कार्यक्रम की ऑनलाइन एंव दानदाताओं को रिपोर्ट करें । • सभी सेवाप्रदाताओं के भुगतान करें। • स्वयंसेवकों का धन्यवाद करें। • धन्यवाद के पत्र भेजें। • मीडिया कवरेज अनुवर्तन करें। • एमएंडई विभाग को सभी पूर्व और पश्चात परीक्षण प्रारूप सौंपें। • टीम के साथ कार्यक्रम की समीक्षा करें। • सबक लिखें।

क्या करें और क्या न करें

- कार्यक्रम के दौरान कोई विलम्ब या विफलताओं से बचाव के लिए सभी ज़रूरी अनुमतियां पहले से ही ले लें।
- नाटक आयोजित करने के लिए चुना गया स्थान, जाति धर्म आदि के आधार पर किसी भेदभाव से रहित एकदम तटस्थ स्थान होना चाहिए। प्रायः गांव में कुछ जगहें ऐसी होती हैं जहां सभी जातियों के लोगों का जाना मना रहता है, और यह सामुदायिक सदस्यों की समग्र प्रतिभागिता को बाधित कर सकता है।
- गांव तथा स्कूल में कार्यक्रम आयोजित करने के लिए समय का चुनाव, समुदाय या स्कूल के प्राधिकारियों से परामर्श करके इस तरह तय करना चाहिए कि जब ज्यादा से ज्यादा दर्शकों को मोबिलाइज़ किया जा सके। फसल कटाई के समय, त्यौहार या स्कूल में परीक्षाओं के समय आदि के दौरान ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने से बचना चाहिए जब अधिकतर सामुदाय के सदस्य व्यस्त होते हैं।
- कार्यक्रम में आमंत्रित जनमत प्रेरकों के भाषणों में लैंगिक भेदभाव वाली बातों और नजरियों की झलक नहीं मिलनी चाहिए। यदि संभव हो, तो उन्हें कार्यक्रम में उनकी प्रतिभागिता को लेकर पहले ही संक्षिप्त जानकारी दे दी जानी चाहिए।
- यदि कार्यक्रम को कवर करने के लिए मीडिया को बुलाया गया है, तो संगठन के प्रवक्ता के रूप में केवल एक व्यक्ति को नियुक्त करना अनिवार्य हो जाता है। कार्यक्रम के लिए पहले से प्रेस विज्ञप्ति (पर्यवेक्षकों द्वारा पहले ही परीक्षण की जा चुकी) तैयार रखना भी उचित रहता है।
- समुदाय में स्थानीय भाषा में उपयुक्त आईईसी सामग्रियां वितरित किए बिना कार्यक्रम समाप्त नहीं करना चाहिए। ज़रूरी हो तो ऐसे संगठनों तथा व्यक्तियों के नाम व हेल्पलाइन नम्बर आदि की जानकारी भी दी जानी चाहिए जिनसे बाद में संपर्क किया जा सके।
- नियुक्त अनुदेशक (फैसिलिटेटर) या जोकर को मसले की पूरी जानकारी होनी चाहिए तथा समुदाय के स्वरूप के बारे में पूरी तरह पता होना चाहिए। इससे समुदाय से सार्थक व्यवहार करने तथा लैंगिक हिंसा के मसले पर सही संदेश देने में मदद मिलती है।
- कुछ नई चीज़ें, जो दिखने में हालांकि छोटी-मोटी हो सकती हैं, वे प्रमुख हितधारकों से सुदृढ़ रिश्ता कायम करने तथा मसले पर उनका सक्रिय सहयोग हासिल करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण साबित हो सकती हैं। इनमें से कुछ निम्न हैं:
  - कार्यक्रम की योजना में सामुदायिक प्रतिनिधियों को केंद्रीय भूमिका सौंपना।
  - नाटक शुरू कराने के लिए किसी सरकारी अधिकारी/पुलिस प्रतिनिधि को आमंत्रित करना।
  - प्रश्न-उत्तर सत्र में सकारात्मक तथा उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं देने वाले सामुदायिक सदस्यों को इनाम वितरित करने के लिए पीआरआई सदस्य/पुलिस/सरकारी अधिकारियों से कहना।

कार्य क्षेत्र से सफलता के दृष्टांत

सामुदायिक मोबिलाइजेशन की रणनीति के रूप में नुक्कड़ नाटक अभियान की सफलता, समुदाय को प्रभावक रूप से संवेदनशील बनाने की इसकी क्षमता में निहित है। फोरम थिएटर से संबंधित कुछ विशेष सफलताएं नीचे दी गई हैं।

- सामुदायिक स्तर पर मजबूत साझेदारियों और गठबंधनों का निर्माणः हस्तक्षेप वाले इलाके में व्यापक स्तर पर समुदाय (महिलाएं, पुरूष और बुजुर्ग), विविध सेवा प्रदाताओं, धार्मिक नेताओं, पीआरआई सदस्यों, सरकारी कार्मिकों, मीडिया (इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट), तथा स्कूल प्राधिकारियों को ऐसे आयोजनों के माध्यम से मसले के बारे में बेहतर अवगत कराया जा सकता है। अधिक महत्त्वपूर्ण रूप में, मसले, तथा इसकी रोकथाम में अपनी भूमिका को समझने के बाद उनमें से कई लोग अपना सहयोग मजबूत बनाने तथा अभियान में अधिक सक्रिय रूप से भागीदारी के लिए उत्सुक हो सकते हैं। फोरम थिएटर को ऐसे समुदायों को संवेदनशील व सशक्त बनाने के लिए भी एक मूल्यवान तरीका माना जाता है जिनकी अपनी आवाज़ नगण्य या एकदम नहीं होती। ऐसे उदाहरण हैं जहां कुछ सरकारी अधिकारियों ने परियोजना स्टॉफ से विशिष्ट क्षेत्रों (प्रखंड या जिला) में प्रस्तुति देने के लिए कहा, जहां समाज के अपेक्षाकृत कमजोर वर्गों की तादाद अधिक थी।
- लैंगिक हिंसा के चलन के बारे में शुरू होने वाले संवाद के रूप में प्रायः तत्काल असर दिखाई देता है। जनता, सामान्य रूप से, लैंगिक हिंसा को एक सामाजिक बुराई के रूप में स्वीकार करने लगती है और समस्या हल करने के लिए संभावित समाधानों की धीरे-धीरे खोज करने लगती है। लैंगिक हिंसा के नकारात्मक प्रभावों के बारे में समुदाय को संवेदी बनाने की जिम्मेदारी युवा लड़कियों को सौंपा जाना, तथा सामुदायिक प्रभावकर्ताओं-पीआरआई सदस्यों, शिक्षाविदों, तथा धार्मिक नेताओं की सक्रिय सहभागिता द्वारा प्रचलित कानूनों का बेहतर क्रियान्वयन, समाधानों में शामिल हैं।
- ये आयोजन, विभिन्न स्तरों पर समुदाय से बेहतर रिश्ते बनाने में मदद कर सकते हैं। कार्यक्रम के पहले, दौरान तथा बाद में तालमेल गतिविधियां, नेटवर्किंग बनाने और समुदाय में जमीनी स्तर की मौजूदगी बढ़ाने में मदद करती हैं।
- पीआरआई तथा सेवाप्रदाता धीरे-धीरे लैंगिक हिंसा के मसले पर रूचि लेने लगते हैं, उदाहरण के लिए रांची में एक सरपंच जिसने पहले अपने गांव में लैंगिक हिंसा के मामलों का होना अस्वीकार किया था, उसने वीडियो वैन कार्यक्रम देखने के बाद अपने यहां लैंगिक हिंसा के 10 मामलों की पहचान की तथा स्थानीय पुलिस की मदद से अपने क्षेत्र में इस कुप्रथा को चुनौती देने का बीड़ा उठाया।

चुनौतियां और न्यूनीकरण

- कलाकारों को फोरम थिएटर के मायने समझाए जाने से पहले नियमित और मौसमी रंगमंच कलाकारों की वे ज़रूरतें समझी जानी चाहिए जिन्हें पूरा किया जाना आवश्यक होता है। ये ज़रूरतें, प्रस्तुति संबंधी गहन प्रशिक्षण तथा अभ्यास सत्रों पर केंद्रित प्रयासों की मांग करती हैं।
- फोरम थिएटर टीम को संगठित करना और बनाए रखना भी एक चुनौती बन सकती है जिसके लिए आयोजक एनजीओ द्वारा सूक्ष्म निगरानी तथा समस्या समाधान किए जाने की आवश्यकता होती है।
- टीम को दर्शकों से प्रतिक्रियाएं निकलवाने की कला का पूरी तरह अभ्यास करने की ज़रूरत होती है तथा इसके लिए तालमेल केन्द्रित टीम का होना आवश्यक होता है।
- समाज के अल्पसंख्यक समुदायों तथा सुदूर जनजातीय समुदायों तक पहुंचना कई बार कठिन साबित हो सकता है, जिसके समाधान के लिए सामुदायिक नेताओं से रिश्ते मजबूत बनाए जाने चाहिए और कार्यक्रम के उद्देश्य स्पष्ट करते हुए दर्शकों को पूर्व जानकारी दी जानी चाहिए।

- कुछ निश्चित क्षेत्रों में, कलाकारों की सुरक्षा और संरक्षा के मसले का सावधानी से समाधान करना आवश्यक होता है। कार्यक्रम से पहले दर्शकों के बारे में पूरी जानकारी हासिल कर लेना बेहतर रहता है। सावधानीपूर्वक योजना बनाना तथा व्यवस्था करना बहुत अनिवार्य है और यदि आवश्यकता हो तो पुलिस सुरक्षा लेना भी अच्छी न्यूनीकरण रणनीति हो सकती है।
- कार्यक्रमों के दौरान सामुदायिक सदस्यों की कम उपस्थिति तथा सीमित प्रतिभागिता से बचाव के लिए, यह महत्वपूर्ण है कि तारीख और समय का चुनाव सामुदायिक प्रतिनिधियों के परामर्श से किया जाए और आगामी आयोजन के बारे में घोषणाओं तथा मौखिक प्रचार-प्रसार के माध्यम से सूचनाओं को अच्छी तरह प्रसारित किया जाए।
- चर्चाओं के दौरान, सामुदायिक सदस्य अनुदेशक के समक्ष कठिन प्रश्न रख सकते हैं और चर्चाओं को लैंगिक हिंसा के मसले पर केंद्रित रहने के लिए प्रयास करने की ज़रूरत होती है। ऐसे में प्रभावी रणनीति यही हो सकती है कि उनकी बात धैर्यपूर्वक सुनें लेकिन चर्चाओं को वापस लैंगिक हिंसा की तरफ ही मोड़ दें। कुछ प्रश्नों पर जवाब के लिए सामुदायिक नेताओं से मदद लेना भी सहायक हो सकता है।

याद रखने लायक प्रमुख बिंदु!

शोषितों का सशक्तिकरण

शोषितों का सशक्तिकरण तथा समाधान हेतु उनकी क्षमताओं पर भरोसा, फोरम थिएटर की विचारधारा तथा प्रारूप का अभिन्न तत्व है। यह टूल दर्शाता है कि लोग कितनी अच्छी तरह से मसले से जुड़ते हैं, इसे आत्मसात करते हैं, और समाधानों को स्थानीय आवाज़ देते हैं। समग्र लक्ष्य महिलाओं या बालिकाओं का पूर्ण सशक्तिकरण करना होता है, जिनको इतना साहसी बनाना होता है कि वे भीड़ के सामने खड़ी हो सकें और अपने शोषक (इस मामले में पिता) को चुनौती दे सकें। ज्यादातर लोगों के लिए, कदाचित यह पहली बार ऐसा होता है जब कि वे शोषण के किसी मामले को चुनौती देने के लिए उठ खड़े होते हैं।

स्वतंत्र रूप से मतों की अभिव्यक्ति के लिए नाटक का माहौल सुरक्षित बनाए रखें

लोग अपनी बात कहना और रखना चाहते हैं लेकिन उनको ऐसा करने के लिए पर्याप्त तटस्थ तथा सुरक्षित माहौल और मौके नहीं मिलते। फोरम थिएटर के जरिए, उनको यह अद्वितीय अवसर मिलता है। जिस आंतरिक भावना के साथ महिलाएं, युवा लड़कियां, तथा यहां तक कि लड़के भीअपनी राय रखने के लिए खड़े होते हैं ये इस बात का प्रबल संकेत है कि फोरम थिएटर के सामान और भी अवसरों को बनाने कि ज़रुरत है, जहां वे खुद को प्रभावित करने वाली समस्याओं के आनुभविक समाधान पेश कर सकें।

अनेक हितधारकों की भागीदारी सुनिश्चित करें

सरकारी कार्मिकों (अधिकारियों) जैसे कि प्रखंड विकास अधिकारी, तथा प्रखंड शिक्षा अधिकारी, पीआरआई सदस्यों, आईसीडीएस सुपरवाइजरों, स्थानीय एनजीओ, मीडिया, धार्मिक और राजनैतिक नेताओं, स्कूल प्राधिकारियों, एसएचजी, युवा समूहों व व्यापक समुदाय से भागीदारी कराने के प्रयास करना, कार्यक्रम की सफलता के लिहाज से महत्वपूर्ण हैं। इन हितधारकों को लैंगिक हिंसा के मसले पर बातचीत में शामिल करने से अच्छे स्तर का संवेदीकरण हो सकता है और विशेषकर सामुदायिक स्तर पर लैंगिक हिंसा के मसले को चुनौती देते समय उनका समर्थन मिल सकता है।

तथ्य एंव आंकड़े तैयार रखें

उन चुनौतियों या प्रश्नों का पहले से अनुमान लगाना उचित रहता है जो समुदाय या दर्शक, बातचीत के सत्र के दौरान अनुदेशक (फैसिलिटेटर) के सामने खड़े कर सकते हैं। लिहाजा, ऐसे उपयुक्त उत्तरों के साथ तैयारी कर लेने की सलाह दी जाती है जिनमें लैंगिक हिंसा के मसले तथा उस विशिष्ट क्षेत्र में इसके प्रचलन के बारे में निश्चित तथ्य और आंकड़े मौजूद हों। स्थानीय सरकारी कार्मिकों या पीआरआई सदस्यों से निश्चित इनपुट लिए जा सकते हैं।

अनुवर्तन (फॉलो-अप) रणनीति तैयार करें

स्थानीय एनजीओ साझेदारों या स्कूलों के साथ मिलकर बनाई गई अनुवर्तन (फॉलो-अप) रणनीति यह सुनिश्चित कर सकती है कि औपचारिक या व्यवस्थित अंतर्क्रियाओं जैसे कि प्रशिक्षणों, या बस अनौपचारिक बैठकों, या दोनों के मिले-जुले रूपों के जरिए, मसले के बारे में समुदाय रचनात्मक रूप से जुड़ा रहे। जहां संभव हो, मल्टीमीडिया, ऑनलाइन तथा जनसंचार माध्यम (मास मीडिया) प्लेटफार्मों के माध्यम से अनुवर्तन (फॉलो-अप) गतिविधियों को एकीकृत करना लाभप्रद हो सकता है।

साक्ष्य उत्पन्न करें

नुक्कड़ नाटक, उपयोगी साक्ष्य उत्पन्न करने वाले शिक्षण अवसरों के रूप में ही देखे जाने चाहिए। अतः सरल प्रणालियां जैसे कि छोटे और सरल प्रारूपों (फार्मों) के जरिए पूर्व और पश्चात परीक्षण आयोजित करना, ऑडियो-वीडियो या वर्णनात्मक रिपोर्टों के माध्यम से आयोजन का दस्तावेजीकरण करना, साक्ष्य उत्पन्न करने के लिए उपयोगी हो सकता है। हालांकि डेटा के विश्लेषण से निकलने वाले निष्कर्षों को सामुदायिक पहुंच तथा मोबिलाइज़ेशन की समग्र प्रक्रिया को मजबूत बनाने के लिए आंतरिक और वाह्य रूप से रिपोर्ट अवश्य किया जाना चाहिए।

अनुभाग

3

युवा मेलों (किशोरी मेला) के जरिए किशोरवय युवाओं को लामबंद करना

एक अवलोकन

युवा मेलों की मुख्य विशेषताएं

- किशोरवय युवा मेले, विशेषकर 15 से 25 वर्ष के बीच आयु वाली लड़कियों को लैंगिक मसलों पर, इस मामले में लैंगिक हिंसा तथा लड़कियों के जीवन पर इसके प्रभाव के बारे में संवेदी बनाने के लिए आयोजित किए जाते हैं। किशोरवय युवा लड़के भी इन कार्यक्रमों का हिस्सा हो सकते हैं।
- यह सामुदायिक मोबिलाइज़ेशन का एक टूल है जो मौज-मस्ती, मनोरंजन तथा शिक्षा के संतुलित तालमेल द्वारा किशोरवय तक पहुंचता, जोड़ता और उन्हें इस मसले पर संवेदी बनाता है।
- आमतौर से, इसमें एक दिन के दौरान कई प्रेरक और प्रतिस्पर्धी गतिविधियां की जाती हैं, जो लैंगिक हिंसा के प्रचलन के खिलाफ खड़े होने के मूल संदेश पर केंद्रित होती हैं।

संभावित आयोजन स्थल

यह मुख्यतः मिडिल और माध्यमिक स्कूलों में आयोजित किया जाता है, हालांकि कुछ ग्राम पंचायत फोरम भी चुने जा सकते हैं यदि चुने गए गांवों में मसला प्रमुखता से मौजूद हो।

दर्शकों का प्रकार

दर्शकों में आमतौर से ऐसे समुदायों की 15 से 25 वर्ष आयु की लड़कियां शामिल होती हैं जहां लैंगिक हिंसा सामान्य रूप से प्रचलित हो।

आयोजन की अवधि

आदर्श रूप में, किशोरी मेला एक दिवसीय आयोजन होना चाहिए जो 4-5 घंटे तक चलना चाहिए।

समुदाय से प्रतिक्रिया

- किशोरी मेला, लड़कियों के लिए रोचक गतिविधियों जैसे कि खेलकूद या कला में भाग लेने हेतु सुविधाजनक स्थान देते हैं, जिससे कार्यक्रम के दौरान उनका जुड़ाव का स्तर बढ़ता है।
- यह लड़कियों तथा अन्य हितधारकों को लैंगिक हिंसा के मसले पर चिंतन और चर्चा करने के लिए एक सार्वजनिक मंच भी उपलब्ध कराता है।
- युवा लड़कियां, इस बारे में सुझाव देते हुए इसे समाधान खोजने के कार्य के रूप में मान सकती हैं, कि उनके गांवों में भेदभाव वाली प्रथाओं को कैसे रोका जा सकता है और वे इस प्रक्रिया में क्या भूमिका निभा सकती हैं।

- लड़कियों पर लैंगिक हिंसा के खराब प्रभावों को मौके पर मौजूद महत्त्वपूर्ण हितधारकों और जनमत वाहकों द्वारा स्वीकार किया जाना, संदेश का कुल प्रभाव बढ़ा देता है।

युवा मेले आयोजित करने की प्रक्रिया

कार्यक्रम आयोजन से पहले:

- आकस्मिक चीज़ों के लिए एक निश्चित प्रतिशत भाग अलग रखते हुए कार्यक्रम का बजट बनाएं और इसका कड़ाई से पालन करें।
- ऐसे स्कूल चिन्हित करें जहां कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं। प्रधानाध्यापक तथा अध्यापकों सहित स्कूल के मुख्य प्राधिकारियों को लैंगिक हिंसा के मसले के बारे में, तथा कार्यक्रम के उद्देश्य और अपेक्षित प्रतिक्रिया के बारे में उन्हें जानकारी दें। बैठकों के दौरान उनकी सक्रिय मदद मांगें।
- प्रखंड शिक्षा अधिकारी तथा ग्राम पंचायत में स्थानीय पीआरआई सदस्यों को भी आगामी कार्यक्रम के बारे में जानकारी अवश्य दी जानी चाहिए।
- इसके अलावा कार्यक्रम से अभिभावकों के अपेक्षाकृत बड़े समूह को जोड़ने के लिए, स्कूल प्रबंधन समिति (एसएमसी) से मिला जा सकता है।
- स्कूल प्राधिकारियों से मिलकर कार्यक्रम की तारीखें, स्थान तथा अवधि पर चर्चा करें और तय करें।
- एक अनुबंध/समझौता ज्ञापन तैयार करके स्कूली साझेदारों के साथ हस्ताक्षरित करें जिसमें कार्यक्रम आयोजित करने से जुड़े लोगों की भूमिकाओं और दायित्वों के बारे में साफ-साफ लिखा गया हो।
- लड़कियों के लिए प्रभावी कार्यक्रम तैयार करने के लिए, मसले के बारे में उनकी समझ सुनिश्चित करने के लिए उनके साथ त्वरित और संक्षेप में चर्चाएं करें।
- स्कूल में लड़कियों में से स्वयंसेवी समूह चुनें जो कार्यक्रम की योजना व संचालन में सक्रिय भूमिका निभा सकता हो।
- कार्यक्रम की योजना तथा गतिविधियों के क्रम को अंतिम रूप दें और छात्रों, अध्यापकों, तथा एसएमसी सदस्यों के शामिल करते हुए उनकी भूमिकाओं और दायित्वों को तय करें। विविध खेलकूद, कलात्मक, तथा शिक्षाप्रद गतिविधियों का मिश्रण अपनाएं। इनमें ये शामिल हो सकते हैं: लैंगिक हिंसा पर आधारित प्रश्नोत्तरी या निबंध, चित्रकारी तथा नारे (स्लोगन) लिखने की प्रतियोगिता, खेलकूद आयोजन, वृत्तचित्र (डाक्युमेंन्ट्री) का प्रदर्शन तथा चर्चाएं।
- एक अनुदेशक/समारोह संचालक चुनें जो आपके अपने संगठन का हो तो बेहतर होगा।
- लैंगिक हिंसा पर मुख्य संदेश तैयार करें जो दर्शकों को दिए जाने हैं। अपने विषय विशेषज्ञों से तालमेल करके आईईसी तथा ब्रांडिग सामग्रियां जैसे कि बैनर, पुस्तिकाएं, पर्चे, विवरणिकाएं आदि स्थानीय भाषा में तैयार कराएं जो कार्यक्रम के दौरान वितरित की जा सकें।
- आयोजन के पूर्व और पश्चात परीक्षण में पूछे जाने वाले प्रश्नों की सूची को अंतिम रूप दें और इसे छपाने से पहले आंतरिक रूप से अनुमोदित कराएं। यह टूल, स्थानीय भाषा में साफ-साफ छपा होना चाहिए।
- आगामी आयोजन की तारीख, समय, और स्थान के बारे में स्थानीय मीडिया को सूचित करें।
- कार्यक्रम में स्वयंसेवियों के योगदान को सम्मानित करने के लिए छोटे-मोटे स्मृति चिन्हों के बारे में तय करें और उसका बजट रखें। इनमें प्रमाणपत्र, स्मृति चिन्ह वस्तुएं, ट्रॉफी आदि हो सकते हैं।
- बातचीत के सत्रों के दौरान लड़कियों को पुरस्कारों के रूप में दी जाने वाली छोटी-मोटी चीज़ों का बजट रखें और उन्हें खरीदें।
- घोषणाएं तैयार करें व आयोजन से कुछ घंटे पहले गाँव में घोषणा कराना सुनिश्चित करें।
- कार्यक्रम को वीडियो, ऑडियो, या लिखित टिप्पणियों के रूप में रिकार्ड/दस्तावेजीकृत करने के लिए योजना बनाएं।
- आमंत्रितों की सूची बनाएं और सभी महत्त्वपूर्ण हितधारकों को स्वयं आमंत्रित करें।
- कार्यक्रम हेतु मुख्य अतिथि और महत्त्वपूर्ण वक्ता तय करें और कार्यक्रम के उद्देश्यों तथा आयोजन में उनकी भूमिका के बारे में उन्हें पहले से जानकारी दें।
- कार्यक्रम से पहले, समस्त आईईसी सामग्रियां, पर्याप्त मात्रा में प्रिंट कराएं और सुरक्षित रखें।
- लक्षित क्षेत्र में लैंगिक हिंसा के प्रचलन से संबंधित तथ्य और आंकड़े तैयार करें।
- एक प्रेस विज्ञप्ति बनाएं और उस दिन के लिए किसी को मीडिया प्रवक्ता के तौर पर नियुक्त करें।
- टीम में हर किसी की जिम्मेदारियों पर जोर देते हुए, पूर्वाभ्यास करें।

कार्यक्रम आयोजन के दिन:

- आयोजन स्थल पर समस्त व्यवस्थाओं की सावधानी से जांच करें- बैनर, ऑडियो-विजुअल सिस्टम, आईसी सामग्रियां, मेहमानों को जानकारी आदि। आयोजन स्थल के लिए जल्दी निकलें और पहुंचें।
- गतिविधियों का प्रवाह और भीड़ को संभालने के लिए उचित व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें।
- आइस-ब्रेकर के रूप में किसी प्रेरक गीत या स्लोगन आदि से कार्यक्रम की शुरूआत करें।
- कार्यक्रम का उद्घाटन करें, इसे संक्षिप्त रखें और दिन की मुख्य गतिविधियां कराएं जिनमें फोरम थिएटर, चर्चाएं, और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं आदि शामिल हो सकते हैं।
- प्रश्नावलियां और आईसीसी सामग्रियां प्रतिभागियों में बांट दें, उनको पढ़ने तथा प्रश्नों के उत्तर देने हेतु प्रयास करने के लिए पर्याप्त समय दें। प्रश्नावली में लैंगिक हिंसा के निम्न पहलुओं पर 25-30 प्रश्न शामिल किए जा सकते हैं:
  - » विवाह की कानूनी उम्र
  - » लैंगिक हिंसा के बारे में कानूनों, तथा कानूनी कार्रवाई की जानकारी

- लैंगिक हिंसा प्रेरित करने वाले कारक
- लड़कियों पर लैंगिक हिंसा का प्रभाव
- इस मसले के विरूद्ध कार्रवाई के लिए जिम्मेदार जिला तथा प्रखंड स्तरीय सरकारी अधिकारी
- उच्चतर शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए योजनाओं तथा अन्य सरकारी प्राविधानों का ज्ञान
- किशोरियों को माध्यमिक स्कूल में नामांकन कराना
- कदम, जो कोई अपने क्षेत्रों में लैंगिक हिंसा रोकने या उसके खिलाफ आवाज़ उठाने के लिए उठाए जा सकते हैं।
- यौन उत्पीड़न को समझना
- प्रस्तुत वीडियो तथा मामले के अध्ययनों पर आधारित प्रश्न।

- प्रश्नोत्तरी के दौरान, लड़कियों को बिना संकोच उनके दृष्टिकोण बताने के लिए अवश्य प्रेरित किया जाए तथा गोपनीयता के प्रति आश्वस्त रखा जाए। इस प्रकार प्राप्त होने वाली जानकारी, किशोरियों के बारे में भावी हस्तक्षेपों की योजना बनाने के लिए संगठन हेतु बहुमूल्य संसाधन का काम कर सकती है।
- प्रश्नावलियां एकत्र करें और शोध तथा एमएंडई टीम को सौंप दें।
- प्रतिभागियों को संक्षेप में सम्बोधित करने के लिए महत्त्वपूर्ण वक्ताओं व मुख्य अतिथि को आमंत्रित करें; सुनिश्चित करें कि सभी महत्त्वपूर्ण हितधारकों का प्रतिनिधित्व रहे।
- दिन के प्रमुख सबक संक्षेपित करते हुए सत्र समाप्त करें।
- कार्यक्रम के बारे में प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया, प्रतिक्रिया फार्मों और क्विक ऑडियो/वीडियो बाइट्स के रूप में लेकर दस्तावेजीकृत करें।
- लैंगिक हिंसा के बारे में पठनीय सामग्री (अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों की पुस्तिका और पर्चे) वितरित करें जिनमें इसके परिणामों, सरकारी योजनाओं तथा कानूनी पहलुओं को कवर किया गया हो।
- फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी तथा/या लिखित रिपोर्ट के रूप में कार्यक्रम का दस्तावेजीकरण सुनिश्चित करें।
- लड़कियों के साथ बातचीत के सत्र के दौरान, खासतौर से प्रश्न और उत्तर वाले चक्र के समय, छोटे-मोटे उपहारों/इनामों के माध्यम से सकारात्मक और उत्साहजनक प्रतिक्रियाओं के लिए सम्मानित करें।
- विद्यार्थियों सहित सभी हितधारकों को सम्बोधित करते हुए धन्यवाद दें।
- प्रेस विज्ञप्ति सौंपें और नियुक्त वक्ता के जरिए मीडिया से संवाद सुनिश्चित करें।

कार्यक्रम आयोजन के बाद

- आंतरिक टीम, साझेदारों तथा दानदाताओं को लक्ष्य बनाते हुए विविध ऑनलाइन और ऑफलाइन प्लेटफार्मों पर कार्यक्रम की रिपोर्ट करें।
- सभी सेवाप्रदाताओं के भुगतान करें।
- प्रभावकर्ताओं तथा साझेदारों के सहयोग और सहभागिता के लिए उनको धन्यवाद पत्र भेजें।
- स्वयंसेवकों का धन्यवाद करें।
- प्रेस कवरेज दस्तावेज तथा समतुल्य उद्धृत विज्ञापन मूल्य फाइल करें।
- सभी प्रश्नावलियां शोध तथा एमएंडई टीम को सौंप दें।
- इन प्रारूपों से निष्कर्षों का विश्लेषण प्राप्त करें और सीखे सबकों को आंतरिक व वाह्य रूप से प्रसारित करें।
- उपलब्धियों, चुनौतियों, तथा कमियों के संदर्भ में पूरे कार्यक्रम आयोजन की समीक्षा करें। ये बातें लिखें और भावी संदर्भ के लिए टिप्पणियां बनाकर रखें।
- लिखित रिपोर्टें/मुख्य बातें , फोटोग्राफ तथा वीडियो आदि संबंधित आंतरिक प्राधिकारियों और बाहरी एजेंसियों तथा हितधारकों व दानदाताओं को भेजें।

कार्यक्रम आयोजन से पहले	कार्यक्रम आयोजन के दिन	कार्यक्रम आयोजन के बाद
• संभावित स्कूलों की पहचान करें। • पूरे कार्यक्रम की योजना बनाएं। • बजट बनाएं। • स्कूल प्राधिकारियों से मिलें और साझेदारी को अंतिम रूप दें। • स्कूल प्रबंधन समिति से मिलें और सूचित करें। • सही स्थान व समय तय करें। • मुख्य संदेशों को अंतिम रूप दें। • छात्र स्वयंसेवकों को चिन्हित करें। • आवश्य क हो तो रिहर्सल करें। • आईईसी सामग्रियां तैयार करें। • निमंत्रण भेजें। • दस्तावेजीकरण तथा एमएंडई की व्यवस्थाएं लागू करें।	• आयोजन स्थल पर व्यवस्थाओं की जांच करें। • प्रेरक गीतों तथा स्लोगन से शुरूआत करें। • क्रमानुसार गतिविधि योजना बनाएं। • आईईसी सामग्रियां वितरित करें। • प्रश्नावलियां वितरित करें। • चर्चाएं कराएं। • मसले पर विद्यार्थियों के दृष्टिकोण मांगें। • अन्य वक्ताओं को आमंत्रित करें। • मीडिया को प्रेस विज्ञप्ति सौंपें। • कार्यक्रम का दस्तावेजीकरण करें।	• कार्यक्रम की ऑनलाइन और ऑफलाइन तथा दानदाताओं को रिपोर्ट करें। • सभी सेवाप्रदाताओं के भुगतान करें। • स्वयंसेवकों का धन्यवाद करें। • धन्यवाद के पत्र भेजें। • मीडिया कवरेज अनुवर्तन करें। • एमएंडई विभाग को सभी पूर्व और पश्चात परीक्षण प्रारूप सौंपें। • टीम के साथ कार्यक्रम की समीक्षा करें। • सबक लिखें और प्रसारित करें।

क्या करें और क्या न करें

- बिना स्पष्ट उद्देश्य और योजना के कभी भी किशोरी मेला आयोजित न करें। ग्रामीण संदर्भ में, लैंगिक हिंसा जैसे मसले पर कार्य करने से सामाजिक-सांस्कृतिक तथा राजनैतिक असंतोष उत्पन्न हो सकते हैं। अतः किशोरियों पर इस विशिष्ट हस्तक्षेप से अपेक्षित परिणामों के लिए एक उपयुक्त रूपरेखा बना लेना ज़रूरी है।
- गांव तथा स्कूल में कार्यक्रम आयोजित करने के लिए समय का चुनाव, समुदाय या स्कूल के प्राधिकारियों से परामर्श करके इस तरह तय करना चाहिए कि जब ज्यादा से ज्यादा दर्शकों को मोबिलाइज़ किय जा सके। फसल कटाई के समय, त्यौहार या स्कूल में परीक्षाओं के समय आदि के दौरान ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने से बचना चाहिए जब अधिकतर सामुदायिक सदस्य व्यस्त होते हैं।
- कार्यक्रम में आमंत्रित जनमत प्रेरकों के भाषणों में लैंगिक भेदभाव वाली बातों और नजरियों की झलक नहीं मिलनी चाहिए। यदि संभव हो, तो उन्हें कार्यक्रम में उनकी प्रतिभागिता को लेकर पहले ही उन्हें संक्षिप्त जानकारी दे दी जानी चाहिए।
- यदि कार्यक्रम को कवर करने के लिए मीडिया को बुलाया गया है, तो संगठन के प्रवक्ता के रूप में केवल एक व्यक्ति को नियुक्त करना अनिवार्य हो जाता है। कार्यक्रम के लिए पहले से प्रेस विज्ञप्ति (पर्यवेक्षकों द्वारा पहले ही परीक्षण की जा चुकी) तैयार रखना भी उचित रहता है।
- समुदाय में स्थानीय भाषा में उपयुक्त आईईसी सामग्रियां वितरित किए बिना कार्यक्रम समाप्त नहीं करना चाहिए। ज़रूरी हो तो ऐसे संगठनों तथा व्यक्तियों के नाम व हेल्पलाइन नम्बर आदि की जानकारी भी दी जानी चाहिए जिनसे बाद में संपर्क किया जा सके।
- नियुक्त अनुदेशक (फैसिलिटेटर) या कार्यक्रम संचालक को मसले की पूरी जानकारी होनी चाहिए तथा समुदाय के स्वरूप के बारे में पूरी तरह पता होना चाहिए। इससे समुदाय से सार्थक व्यवहार करने तथा लैंगिक हिंसा के मसले पर सही संदेश देने में मदद मिलती है।
- कुछ नई चीज़ें, जो दिखने में हालांकि छोटी-मोटी हो सकती हैं, वे प्रमुख हितधारकों से सुदृढ़ रिश्ता कायम करने तथा मसले पर उनका सक्रिय सहयोग हासिल करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण साबित हो सकती हैं। इनमें से कुछ निम्न हैं:
  - » कार्यक्रम की योजना में सामुदायिक प्रतिनिधियों को केंद्रीय भूमिका सौंपना।
  - » कार्यक्रम शुरू कराने के लिए किसी सरकारी अधिकारी/पुलिस प्रतिनिधि को आमंत्रित करना।
  - » प्रश्न-उत्तर सत्र में सकारात्मक तथा उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं देने वाले सामुदायिक सदस्यों को इनाम वितरित करने के लिए पीआरआई सदस्य/पुलिस/सरकारी अधिकारियों से कहना।
- सुनिश्चित करें कि किशोरियों को प्रश्नावलियों में उनके उत्तर भरने के लिए पर्याप्त समय मिले। यह भी स्पष्ट करना महत्त्वपूर्ण है कि प्रश्नावलियां उनको मसले के बारे में उनके विचार स्वतंत्र रूप से प्रकट करने का अवसर देने के लिए हैं, न कि केवल एक टेस्ट पेपर की तरह हल करने के लिए। यदि अपना नाम लिखने में लड़कियों को संकोच हो तो उनसे नाम न लिखने के लिए कहा जा सकता है।

कार्य क्षेत्र से सफलता के दृष्टांत

युवा मेलों की सफलता, युवा जनसंख्या को मोबिलाइज़ करने की इसकी क्षमता में निहित है। युवा मेलों से संबंधित कुछ विशिष्ट सफलताएं नीचे दी गई हैं

- लैंगिक हिंसा के मसले पर किशोरियों के बीच एक प्रगतिशील विचार प्रक्रिया उत्पन्न कर देना, इस कार्यक्रम की एक सबसे बड़ी सफलता होती है। चर्चा के मंच दोतरफा संवाद की सुविधा देते हैं जिससे लड़कियां इस मसले पर अपने सवाल उठा पाती हैं। किशोरियों तथा वयस्कों के बीच अंतरपीढ़ीगत संवाद उत्पन्न करने की दिशा में भी यह अच्छे अवसर की तरह काम करता है।
- यह कार्यक्रम, किशोरियों को अंतर्क्रियात्मक खेलों, चर्चाओं, तथा लैंगिक हिंसा के मसले पर बहस के जरिए सकारात्मक तरीके से मेलजोल का आनंद लेने का अवसर देता है। सुविधाजनक तथा खुला वातावरण, लड़कियों को व्यक्तिगत तथा सामुदायिक स्तर पर इस मसले के समाधान हेतु न्यूनीकरण रणनीतियों पर चर्चा करने में मदद करता है।
- किशोरी मेले का प्लेटफार्म, लड़कियों को उनके जीवन की गंभीर चुनौतियों पर बोलने के लिए प्रोत्साहित करता है। संगठन के कर्मचारियों द्वारा कार्यक्रम के दौरान पता लगाए जाने पर यौन उत्पीड़न से संबंधित शिकायतें सामने आती हैं, क्योंकि पुत्रियों की सुरक्षा की चिंता प्रायः शीघ्र विवाह में योगदान करती है। यौन उत्पीड़न के ये उजागर मामले सीएसओ, संबंधित स्कूल, तथा अन्य मुख्य प्राधिकारियों द्वारा संयुक्त रूप से समाधान किए जा सकते हैं।
- किशोरी मेला, किशोरियों के आसपास बनाए गए अवरोधों को तोड़ने में उनकी मदद करने के लिए गैर-रूढ़िवादी गतिविधियों से किशोरियों को परिचित कराने के तरीके के मामले में अनूठा है। ये उनको फुटबॉल, हॉकी, मैराथन, कबड्डी, प्रश्नोत्तरी, तथा बहसों आदि में भाग लेने को प्रेरित करते हैं।
- किशोरी मेले में अन्य कई तरह के हितधारकों की सहभागिता अपेक्षित होती है जिनमें अभिभावक, एसएमसी, पीआरआई सदस्य, पुलिस अधिकारी, युवा, तथा किशोरियां और किशोर शामिल हैं।

चुनौतियां और न्यूनीकरण

- ऐसी लड़कियों की पूरी भागीदारी हासिल कर पाना कठिन कार्य है जिनको उनके जीवन में कोई विकल्प चुनने या निर्णय करने की शक्तियां नहीं दी जातीं, विशेषकर दूरस्थ ग्रामीण और जनजातीय समुदायों में। यह लैंगिक हिंसा के मसले पर खुली चर्चा को नकारात्मक तौर पर प्रभावित कर सकता है जिससे इस मसले की वजहों तथा न्यूनीकरण के बारे में स्थानीय दृष्टिकोणों को पूरी तरह समझने में बाधा पड़ सकती है। ऐसी स्थिति से बचने के लिए, यह सलाह दी जाती है कि वास्तविक आयोजन से पहले संभावित प्रतिभागियों से कुछ बातचीत करें और अच्छे रिश्ते बनाएं। सक्रिय विद्यार्थियों की पहचान करने से भी मदद मिलेगी जो बोलने में हिचकते न हों और अपने साथियों का नेतृत्व करने और उन्हें जोड़ने के लिए आत्मविश्वास से लैस हों।

- इसी तरह से, अध्यापकों, अभिभावकों, पीआरआई सदस्यों, सामुदायिक बुजुर्गों तथा अन्य प्रभावकर्ताओं के साथ आरंभिक बैठकें करना भी उपयोगी हो सकता है, ताकि कार्यक्रम के दौरान बेहतर सशक्त लड़कियों की ओर से आने वाले तर्कों को स्वीकार करने के लिए उनको सहमत किया जा सके। इनमें से कुछ हितधारकों की संकीर्ण मानसिकता, किशोरवय में लैंगिक समानता का दृष्टिकोण विकसित करने की राह की चुनौती बन सकती है।
- चर्चाओं के दौरान, किशोरवय और सामुदायिक सदस्य अनुदेशक (फैसिलिटेटर) के समक्ष कठिन प्रश्न रख सकते हैं ऐसे में चर्चाओं को दूसरे मसलों जैसे कि गरीबी, शिक्षा आदि की तरफ भटकने से बचाते हुए लैंगिक हिंसा के मसले पर केंद्रित रहने के लिए प्रयास करने की ज़रूरत होती है। ऐसे में प्रभावी रणनीति यही हो सकती है कि उनकी बात धैर्यपूर्वक सुनें लेकिन चर्चाओं को वापस लैंगिक हिंसा की तरफ ही मोड़ दें। कुछ प्रश्नों पर जवाब के लिए सामुदायिक नेताओं से मदद लेना भी सहायक हो सकता है।

याद रखने लायक प्रमुख बिंदु!

लड़कियों से सक्रिय सहभागिता की अपेक्षा करें
इस मोबिलाइज़ेशन रणनीति को उपयोग करने के दौरान ध्यान में रखने लायक सबसे महत्त्वपूर्ण बात है किशोरी मेला के सभी स्तरों-योजना, आयोजन, तथा सफलता के मूल्यांकन में किशोरियों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करना। सभी हितधारकों के ज्ञान को अधिकतम करने के लिए कार्यक्रम को डिजाइन करने के लिहाज से यह बात अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। शामिल की जाने वाली गतिविधियों के प्रकार तय करते समय तथा कार्यक्रम के दौरान मसले के बारे में समझ का आकलन करते समय किशोरियों से इनपुट लेना अनिवार्य है। यह सुनिश्चित करने के मामले में भरपूर सावधानी रखी जानी चाहिए कि कार्यक्रम के दौरान समुदाय के बड़े-बुजुर्गों, स्कूल प्रबंधन, तथा सरकारी लोगों की मौजूदगी, किशोरियों के सहभागिता के स्तरों पर हावी न होने पाए।

अनेक हितधारकों की भागीदारी सुनिश्चित करें
सरकारी कार्मिकों (अधिकारियों) जैसे कि प्रखंड विकास अधिकारी, तथा प्रखंड शिक्षा अधिकारी, पीआरआई सदस्यों, आईसीडीएस सुपरवाइजरों, स्थानीय एनजीओ, मीडिया, धार्मिक और राजनैतिक नेताओं, स्कूल प्राधिकारियों, एसएचजी, युवा समूहों व व्यापक समुदाय से भागीदारी कराने के प्रयास करना, कार्यक्रम की सफलता के लिहाज से महत्त्वपूर्ण हैं। इन हितधारकों को लैंगिक हिंसा के मसले पर बातचीत में शामिल करने से अच्छे स्तर का संवेदीकरण हो सकता है और विशेषकर सामुदायिक स्तर पर लैंगिक हिंसा के मसले को चुनौती देते समय उनका समर्थन मिल सकता है।

तथ्य एंव आंकड़े तैयार करें
उन चुनौतियों या प्रश्नों का पहले से अनुमान लगाना उचित रहता है जो समुदाय या दर्शक, बातचीत के सत्र के दौरान अनुदेशक (फैसिलिटेटर) के सामने खड़े कर सकते हैं। लिहाजा, ऐसे उपयुक्त उत्तरों के साथ तैयारी कर लेने की सलाह दी जाती है जिनमें लैंगिक हिंसा के मसले तथा उस विशिष्ट क्षेत्र में इसके प्रचलन के बारे में निश्चित तथ्य और आंकड़े मौजूद हों। स्थानीय सरकारी कार्मिकों या पीआरआई सदस्यों से निश्चित इनपुट लिए जा सकते हैं।

अनुवर्तन (फॉलो-अप) रणनीति तैयार करें
स्थानीय एनजीओ साझेदारों या स्कूलों के साथ मिलकर बनाई गई अनुवर्तन (फॉलो-अप) रणनीति यह सुनिश्चित कर सकती है कि औपचारिक या व्यवस्थित अंतर्क्रियाओं जैसे कि प्रशिक्षणों, या बस अनौपचारिक बैठकों, या दोनों के मिले-जुले रूपों के जरिए, मसले के बारे में किशोरवय समूह रचनात्मक रूप से जुड़े रहें। जहां संभव हो, मल्टीमीडिया, ऑनलाइन तथा जनसंचार माध्यम (मास मीडिया) प्लेटफार्मों के माध्यम से अनुवर्तन (फॉलो-अप) गतिविधियों को एकीकृत करना लाभप्रद हो सकता है।

साक्ष्य उत्पन्न करें
ये मेले, उपयोगी साक्ष्य उत्पन्न करने वाले शिक्षण अवसरों के रूप में ही देखे जाने चाहिए। अतः सरल प्रणालियां जैसे कि छोटे और सरल प्रारूपों (फार्मों) के जरिए पूर्व और पश्चात परीक्षण आयोजित करना, ऑडियो-वीडियो या वर्णनात्मक रिपोर्टों के माध्यम से आयोजन का दस्तावेजीकरण करना, साक्ष्य उत्पन्न करने के लिए उपयोगी हो सकता है। हालांकि डेटा के विश्लेषण से निकलने वाले निष्कर्षों को सामुदायिक पहुंच तथा मोबिलाइज़ेशन की समग्र प्रक्रिया को मजबूत बनाने के लिए आंतरिक और वाह्य रूप से रिपोर्ट अवश्य किया जाना चाहिए।

मेलों के दौरान गैर-रूढ़िवादी गतिविधियों को प्राथमिकता दें
याद रखने लायक एक खास बिंदु यह है कि मेले के दौरान लैंगिक रूढ़िवादिता वाली किसी गतिविधि को कार्यक्रम में शामिल किए जाने से बचना चाहिए। ऐसा प्लेटफार्म बनाने की सोच रखें जहां लड़कियों को फुटबॉल, तेज दौड़, बहस तथा प्रश्नोत्तरी आदि गतिविधियों में भाग लेते हुए नए अनुभव मिलें- आमतौर से ये गतिविधियां केवल लड़कों तक ही सीमित होती हैं। ये गतिविधियां, लड़कियों के बीच एक विचार प्रक्रिया तथा अनुवर्ती बहस उत्पन्न करने की ओर निर्देशित होनी चाहिए। ऐसे कार्यक्रम का लड़कियों का आत्मविश्वास व मनोबल बढ़ाने तथा उनकी सुदृढ़ताएं खोजने में उनकी मदद करने का स्पष्ट उद्देश्य होना चाहिए।

अनुभाग

4

ग्राम वाणी के जरिए डिजिटल मीडिया का लाभ उठाना

एक अवलोकन

सामुदायिक मोबिलाइज़ेशन के टूल के रूप में ग्राम वाणी या मोबाइल वाणी की मुख्य विशेषताएं

इस मंच पर सामुदायिक जागरूकता, संवेदीकरण तथा मोबिलाइज़ेशन के लिए मोबाइल-आधारित तकनीक का उपयोग किया जाता है।

- लोगों द्वारा लैंगिक हिंसा के बारे में अपने विचार व्यक्त करने, अपने अनुभव साझा करने तथा अपने प्रश्नों/संदेहों का समाधान करने के लिए मोबाइल वाणी एक साझा प्लेटफार्म है। सामुदायिक सदस्यों के जीवन को प्रभावित करने वाले अन्य कई सामाजिक मसलों को भी शामिल करते हुए इसकी उपयोगिता बढ़ाई जा सकती है।
- लैंगिक हिंसा के बारे में सामाजिक संदेश देने के लिए मोबाइल फोन चालित रेडियो उपयोग किए जाते हैं और श्रोताओं को रोचक तथा परस्पर संवादात्मक कार्यक्रमों के जरिए जोड़ा जाता है।
- 'फोन पर रेडियो' मंच के माध्यम से टेलिविज़न या अखबार आदि के कम प्रसार वाले इलाकों में सामग्री सफलतापूर्वक प्रसारित कि जाती है।
- एक इंटेलिजेंट इंटरएक्टिव वॉयस रिस्पांस (आईवीआर) सिस्टम, लोगों को एक नम्बर पर कॉल करने और उनके समुदाय के बारे में संदेश छोड़ने, या मसले पर दूसरों द्वारा दिए संदेश सुनने की सुविधा देता है।

संभावित लाभार्थी

- लैंगिक हिंसा के अधिक प्रचलन वाले इलाकों में रहने वाले ग्रामीण और नगरीय समुदाय, जहां महिलाओं, पुरूषों, तथा युवाओं द्वारा मोबाइल फोन व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं।

श्रोताओं/कॉल करने वालों (कॉलर्स)/प्रतिभागियों का प्रकार

- श्रोता वर्ग में सामान्यतया व्यापक रूप में समुदाय (महिला एवं पुरूष, बुजुर्ग), पीआरआई सदस्य, सरकारी अधिकारी, युवा और बच्चे, तथा महत्त्वपूर्ण जनमत प्रेरक शामिल होते हैं।

अभियान की अवधि

- सप्ताह में दो बार प्रसारित होने वाले कार्यक्रम-10-15 मिनट प्रत्येक वाले आठ एपिसोड, 3-4 माह की अवधि के दौरान। हालांकि अभियान को इससे ज्यादा या कम समय तक चलाने के लिए भी डिजाइन किया जा सकता है।

समुदाय से प्रतिक्रिया

- श्रोताओं के बीच लैंगिक हिंसा की प्रथा पर संवाद शुरू हो जाता है। कॉलर्स अपने जीवन की वास्तविक घटनाएं, साक्षात्कार, कविताओं, गीतों, तथा छोटे नाटकों द्वारा भी अपने दृष्टिकोण साझा करते हैं। उदाहरण- महिलाएं कॉल करके अपनी असली कहानियां बता सकती हैं कि किस तरह से बचपन में ही उनका विवाह हो गया और उनको इसके

सामाजिक-आर्थिक दुष्परिणामों का सामना करना पड़ा।

- लैंगिक हिंसा के बारे में लगातार चर्चाओं से श्रोता इस मसले को निजी स्तर पर संदर्भित करने लगते हैं और अपने समुदाय में इसके दायरे, तथा प्रचलन के विविध आयामों का विश्लेषण करते हैं। वे अपने अधिकारों तथा पात्रताओं के बारे में भी महत्त्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त करते हैं।
- इस सोच-विचार से एक चर्चा उत्पन्न होती है, जो मसले के समाधान में उनकी भूमिकाओं की खोजबीन, तथा बाद में उनके स्तर से संभावित समाधान खोजने पर आधारित होती है।
- लड़कियों पर लैंगिक हिंसा के नकारात्मक प्रभावों को महत्त्वपूर्ण हितधारकों और जनमत वाहकों द्वारा स्वीकार किया जाना, संदेश कि प्रभावकता (प्रभाव) बढ़ा देता है।
- जागरूकता के परिणामस्वरूप मोबाइल वाणी के कॉलर और श्रोता दोनों ही प्रश्न उठाते हैं या एनजीओ/सीबीओ के सहयोग के जरिए सरकार की सेवा आपूर्ति प्रणाली में कमियों को संबोधित करते हैं।

मोबाइल वाणी कैसे काम करता है?

- मोबाइल वाणी प्लेटफार्म से जुड़ने के लिए एक विशेष नम्बर पर मिस्ड कॉल देनी होती है, जिसके बाद सर्वर से कॉल की जाती है या किसी अन्य नम्बर से भुगतान आधारित कॉल की जाती है।
- लाभार्थी श्रोता द्वारा मिस्ड कॉल देने पर, सर्वर से उसे वापस कॉल की जाती है।
- एक इंटेलिजेंट इंटरएक्टिव वॉयस रिस्पांस (आईवीआर) सिस्टम, लोगों को एक नम्बर पर कॉल करने और उनके समुदाय के बारे में संदेश छोड़ने, या मसले पर दूसरों द्वारा दिए संदेश सुनने की सुविधा देता है। सार रूप में, आईवीआर सिस्टम उनको संदेश छोड़ने तथा संदेश सुनने के विकल्प देता है।
- पहले से रिकार्ड किया गया संदेश कॉलर को सुनाते हुए उसे विकल्प दिया जाता है कि या तो वह ऑडियो प्रोग्राम सुने या मसले या किसी एपिसोड के बारे में या किसी अन्य ऐसे मसले के बारे में अपनी बात और मत रिकार्ड करे, जिसे वह गंभीर मानता हो।
- आईवीआर पर दी जाने वाली सामग्री को वेब या आईवीआर पर प्रकाशित करने से पहले मॉडरेट किया जाता है।
- इस प्लेटफार्म की प्रभावक्षमता बढ़ाने के लिए, एनजीओ तथा/या सरकार की योजनाओं तथा कार्यक्रमों से सम्बंधित इनपुट जोड़े जाते हैं।

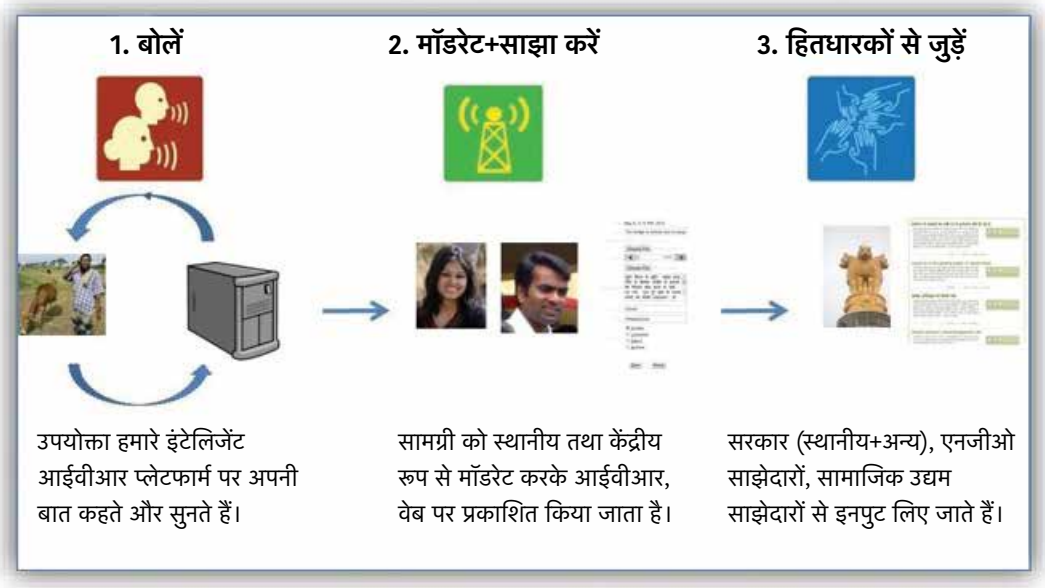

मोबाइल वाणी रणनीति में एक सहभागी संवाद का उपयोग किया जाता है जो दो सामुदायिक स्तर बाहर आवाजाही को सक्षम बनाते हैं, ये निम्न हैं:

1. संदर्भगत जानकारी तक पहुंच, तथा
2. जवाबदेही चक्र की निरंतरता बनाये रखता है, जो सामजिक परिवर्तन लाते हैं।

ग्रामीण समुदाय आमतौर से जाति तथा सत्ता की गतिकी के आधारों पर विभाजित होते हैं, जिनमें कुछ वर्ग दूसरों की अपेक्षा अधिक जागरूक और संसाधनयुक्त हो जाते हैं। इन सत्ता/शक्ति समीकरणों को मोबाइल वाणी जैसे सामुदायिक मीडिया फोरमों तक समान पहुंच के माध्यम से सुरक्षित ढंग से चुनौती दी जा सकती है।

ये फोरम, समुदायों के बीच आपसी शिक्षण भी सुगम बनाते हैं जिससे मानव अधिकारों तथा पात्रताओं के बारे में वाह्य मूल वाले पम्परागत प्रसारण संचार स्वरूपों की अपेक्षा जागरूकता के स्तरों में, अधिक वृद्धि होती है। यह बढ़ी हुई जागरूकता, सामाजिक सेवाओं की मांग उत्पन्न करने में मदद करती है, जो उसी फोरम पर पारदर्शी ढंग से साझा किए जाने से जवाबदेही में सुधार होता है क्योंकि समुदायों को सेवा आपूर्ति में कमियां और दोष बताने का मौका मिलता है।

मोबाइल वाणी प्लेटफार्म सेवा आपूर्ति के बारे में महत्त्वपूर्ण आंकड़े प्राप्त करने में भी मदद करता है जिनका संगठनों तथा नीतिनिर्माताओं द्वारा समस्याएं समझने तथा तथ्यपरक वस्तुनिष्ठ समाधान खोजने के लिए उपयोग किया जा सकता है।

मोबाइल वाणी पर साझा की गई कुछ कहानियों तथा राय के द्रष्टान्त

'साक्षी महतो ने भुइया टोला में रहने वाले जनजातीय लोगों के बारे में बताया, जहां लोग अपने घरों में जगह की कमी की वजह से अपने बच्चों का जल्दी विवाह कर देते हैं। लोगों के अनुसार, क्योंकि वे बहुत छोटे घरों में रहते हैं, इसलिए बच्चों का विवाह कम उम्र में कर देना ही एकमात्र

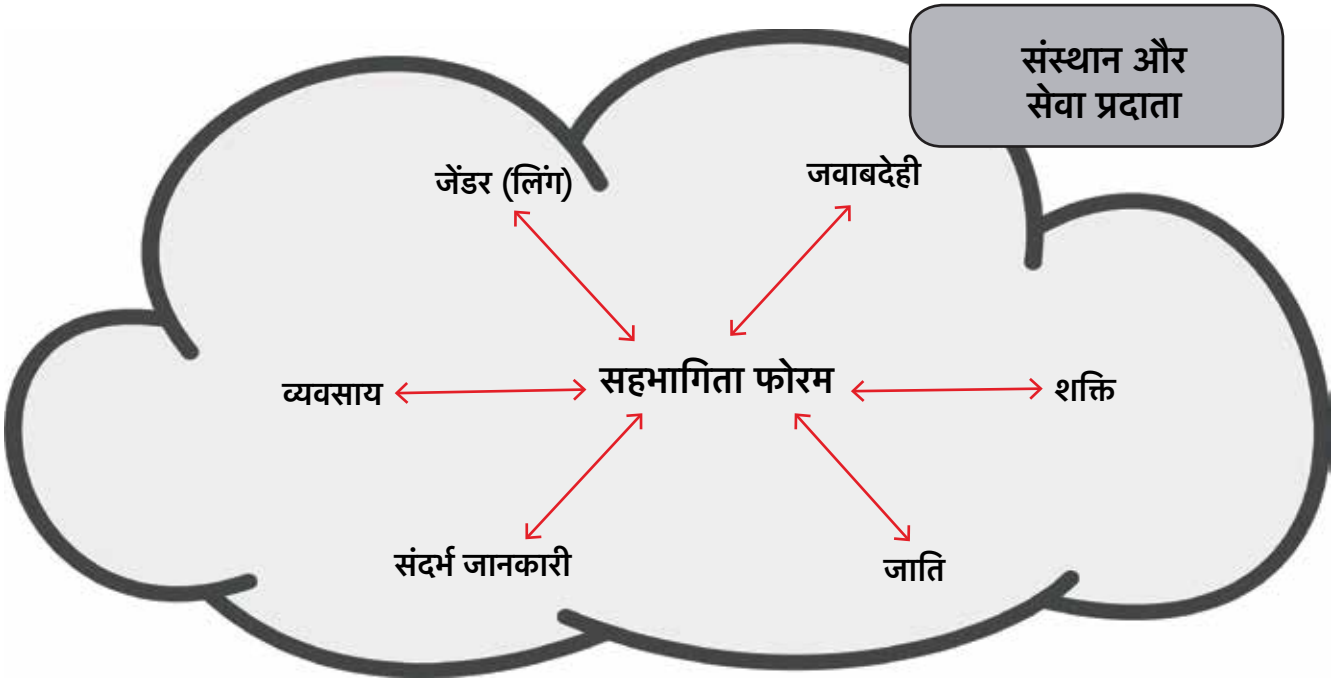

समाधान होता है ताकि वे अपने घर में रहने के लिए पर्याप्त जगह पा सकें। जबकि लड़कों के मामले में, अभिभावक उनको आजीविका कमाने तथा पृथक रहने हेतु स्थान खोजने के लिए शहरों में भेज देते हैं। लड़कियों के मामले में विवाह कर देना ही एकमात्र समाधान होता है। उन्होंने सरकार से अनुरोध किया कि यह मसला देखे और ऐसी नीतियां तैयार करे जो लैंगिक हिंसा के बड़े मसले को हल करने में मदद के लिए जनजातीय परिवारों की ऐसी व्यावहारिक परेशानियां हल करने में मदद कर सके।'

'चंद्रपुरा, बोकारो से सुभरीष पठान ने इस बारे में अपना मत जाहिर किया कि किस तरह से लैंगिक हिंसा किसी व्यक्ति का जीवन नष्ट कर सकती है। उसने बताया कि उसके गांव में लोग अपने पुत्रों का कम आयु में विवाह करने से पहले कुछ सोच-विचार नहीं करते। उसके अनुसार, चूंकि पति-पत्नी का विवाह कम उम्र में हो गया होता है इसलिए दूल्हा वे जिम्मेदारियां नहीं समझ पाता जो विवाह के साथ आती हैं। दूसरी ओर, कमउम्र पत्नी पर कम उम्र में ही बच्चे पैदा करने का दबाव बन जाता है और इसमें नाकाम रहने पर पति-पत्नी को विविध जांचें कराने के लिए अस्पताल जाने पर मजबूर किया जाता है। इससे काफी आर्थिक बोझ पड़ता है और पति शराब का सेवन करने लगता है। इस तरह से लैंगिक हिंसा की वजह से अन्य कई गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं जो कमउम्र लड़कियों और लड़कों का जीवन तबाह कर देती हैं।'

'लातेहार, मनिका से बिपिन बिहारी ने विष्णुबंध की एक बालिका वधू की दास्तान बताई, जिसका विवाह केवल 11 साल की उम्र में ही कर दिया गया था। 2011 में वह गर्भवती हो गई और 2012 में उसे नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र पर ले जाया गया जहां से उसकी गंभीर दशा के कारण उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। अस्पताल में डॉक्टरों ने ऑपरेशन किया

© Breakthrough/India

जिसके बाद बच्चा मर गया और कुछ घंटों के बाद मां की भी मृत्यु हो गई। उसने लैंगिक हिंसा के पक्षधर लोगों से अपील की कि वे अपने बेटों-बेटियों, का इस तरह बलिदान न करें, क्योंकि इसमें अंततः उनको ही सब कुछ खोना पड़ता है। इसके बजाय वे उनमें निवेश करें और उनको ऐसे समाधान बनाएं जो परिवार तथा बड़े स्तर पर समाज की प्रगति में योगदान कर सकें।'

'कॉल करने वाले बहुत से लोगों ने बताया कि वे लैंगिक हिंसा आधारित कुप्रथाओं का पालन केवल इसलिए करते हैं क्योंकि उनको अपनी लड़कियों की सुरक्षा को लेकर काफी भय रहता है। जहां कॉल करने वाली अधिकांश महिलाओं ने यह माना कि लैंगिक हिंसा नहीं होनी चाहिए, वहीं कॉल करने वाले लगभग 80 प्रतिशत पुरूषों ने कहा कि उनको उनकी पुत्रियों की सुरक्षा को लेकर भय रहता है। वे अपने मान-सम्मान को जोखिम में डालने के बजाय अपनी लड़कियों का विवाह कम उम्र में कर देने को ही वरीयता देते हैं।'

डिजिटल मीडिया अभियान आयोजित करने की प्रक्रिया

- संदेश प्रसारित करने के माध्यम के रूप में मोबाइल तकनीक, लैंगिक हिंसा के मसले में अनूठी है। वह प्रक्रिया, जिसके अनुसार 'रेडियो-ओवर-फोन' प्लेटफार्म स्थापित और संचालित किया जा सकता है, नीचे बताई गई है:
- संभावित समुदाय और लक्षित समूहों की पहचान करें, जहां यह माध्यम उपयोग किया जा सकता हो।
- मोबाइल उपयोग पैटर्न समझने के लिए, तथा लक्षित समूहों को मोबाइल से जोड़ने के तरीके जानने के लिए मोबाइल उपयोग के बारे में एक शोध करें। उदाहरण के लिए, झारखण्ड मोबाइल वाणी शुरू करने से पहले किए गए शोध से निम्न तथ्यों का पता चला:
  - एक मोबाइल फोन घर में सभी सदस्य इस्तेमाल करते हैं और इसलिए इसे घर में ऐसी सुविधाजनक जगह पर रखा जाता है जहां यह सबकी पहुंच में रहे।
  - महिलाएं, मोबाइल फोन तथा मोबाइल फोन पर रेडियो की सक्रिय उपयोक्ता हैं।
  - महिलाएं कुछ मिनट या घंटे निकालकर अकेले में मोबाइल का निजी उपयोग हेतु इस्तेमाल करती हैं।
  - अक्सर तथा लम्बे समय तक होने वाली बिजली कटौतियों की वजह से, तथा मनोरंजन के अन्य साधनों के अभाव में मोबाइल फोन मनोरंजन का लोकप्रिय स्रोत हैं।
  - क्षेत्रों में साक्षरता कम है इसलिए आवाज़ (ऑडियो), मनोरंजन का सबसे पसंदीदा और सर्वोत्तम साधन है।
- इन निष्कर्षों के आधार पर, मोबाइल वाणी स्थापित करने के लिए आंतरिक रूप से एक व्यापक रूपरेखा और योजना बनाएं तथा कुल बजट तय करें।
- एक अनुभवी मीडिया तथा कम्युनिकेशंस पार्टनर चिन्हित करके चुनें। लैंगिक हिंसा के बारे में कार्यक्रम के उद्देश्यों, तथा सामुदायिक प्रारूप के बारे में मीडिया पार्टनर को महत्त्वपूर्ण जानकारियां दें। फिर प्लेटफार्म तथा उससे संबंधित प्रक्रियाओं का ढांचा बनाएं। पार्टनर के साथ मिलकर प्लेटफार्म शुरू करने की योजना और बजट तय करें। योजना तथा बजट के बारे में अनिवार्य आंतरिक तथा दानदाताओं से अनुमोदन लें। पार्टनर के साथ समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित करें।
- अभियान के बारे में समुदाय में विविध वर्गों के लोगों को जागरूक करने के लिए प्रचार-प्रसार के कार्य करें और लोगों को नवीनतम जानकारियां देने, वास्तविक जीवन अनुभव या प्रतिक्रियाएं बताने, टिप्पणियां करने/राय देने और मामलों के अध्ययन बताने के लिए प्रोत्साहित करें। इससे मोबाइल वाणी प्लेटफार्म के लिए सामग्री प्राप्त करने में मदद मिलेगी, जिसे तब विशेषज्ञों की टिप्पणियों, नाटकों, गीतों (जैसे और जब उपलब्ध हों) आदि को सम्मिलित करते हुए अंतिम रूप दिया जाता है।
- उपयोक्ताओं के अनुकूल इंटरफेस विकसित करने के लिए, यह सलाह दी जाती है कि महिलाओं तथा युवाओं को लैंगिक हिंसा के मसले पर बात करने हेतु रेडियो प्लेटफार्म उपयोग करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए समानांतर प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाएं। सामाजिक मसले पर संवाद शुरू करने के लिए इन सत्रों में प्लेटफार्म उपयोगिता, लिंग, यौनिकता, तथा मानव अधिकारों आदि के बारे में जानकारी दी जा सकती है। सामुदायिक सदस्यों के छोटे साक्षात्कारों के रूप में सामग्री

बनाने, या लैंगिक हिंसा पर अपनी साउंड बाइट देने के लिए किशोरियों और किशोरों को विशेष रूप से प्रोत्साहित करें।

- लोगों से मिलने वाली प्रतिक्रियाओं के आधार पर, आइटमों ('एपिसोड' के रूप में संदर्मित) का छोटा संकलन तैयार करें। इसे अभियान सामग्री प्रसारित करने के लिए निर्धारित विशेष समय में, जैसे कि उदाहरण के तौर पर सप्ताह में दो बार प्रसारित किया जा सकता है।
- लक्षित समुदाय के रवैये और मानसिकता को ध्यान में रखते हुए, ज्ञान और धारणाओं के बीच के अंतरालों को दूर करने पर केंद्रित रहकर हर एपिसोड की योजना सावधानीपूर्वक बनाएं।

केस अध्ययन: ब्रेकथ्रू झारखण्ड मोबाइल वाणी (जेएमवी)

- मोबाइल वाणी प्लेटफार्म की शुरूआत के बाद, 88 प्रतिशत योगदानकर्ताओं ने लैंगिक हिंसा, इसके निहितार्थों तथा इसके समाधान हेतु सुझावों के बारे में अपने निजी दृष्टिकोण रिकार्ड किए। लगभग 8 प्रतिशत लोगों ने मसले पर मनोरंजक सामग्री जैसे कि कविताएं, नाटक, गीत, तथा कहानियां आदि डाली जबकि 4 प्रतिशत योगदानकर्ताओं ने लैंगिक हिंसा पर सरकारी निषेधों के बारे में जानकारी दी। कच्ची सामग्री की मदद से लैंगिक हिंसा के विरूद्ध चार सप्ताह के अभियान के लिए 10-15 मिनट वाले आठ एपिसोड तैयार किए गए। इसके अलावा, शुरूआती चार एपिसोडों के लिए श्रोताओं की याददाश्त जांचने तथा पुनरावृत्ति कराने के लिए प्रश्नोत्तरियां की गईं। बाद के चार एपिसोडों के लिए, जेएमवी कंटेंट टीम द्वारा लैंगिक हिंसा के मसले पर आंतरिक स्तर पर एक रेडियो नाटक तैयार किया गया। इस नाटक का शीर्षक 'छुटकी की कहानी' रखा गया। आठों एपिसोडों की विषयवस्तु नीचे दी गई है:
- प्रत्येक एपिसोड के अंत में सामग्री योगदानकर्ताओं तथा प्रश्नोत्तरी के विजेताओं का इस अभियान में भाग लेने के लिए धन्यवाद अवश्य दें।
- अंत में, अभियान की निगरानी के लिए एक सुदृढ़ एमएंडई और दस्तावेजीकरण प्रणाली विकसित करें और सुनिश्चित करें कि सबकों विश्लेषण किया जाए और समुदाय तथा टीम के सदस्यों से साझा किया जाए। इस प्लेटफार्म से सीखे गए सबक, मसले के प्रति एक अधिक समग्र प्रतिक्रिया के लिए संगठन के जन तथा मध्य-मीडिया प्रयासों के साथ भी भलीभांति एकीकृत किए जा सकते हैं।

कार्य क्षेत्र से सफलता के दृष्टांत

- सामुदायिक जागरूकता तथा मोबिलाइजेशन की रणनीति के रूप में मोबाइल आधारित रेडियो की सफलता, बड़े स्तर पर लोगों के बीच डिजिटल तकनीक का उपयोग करने की इसकी क्षमता में निहित है।

ग्राम वाणी से संबंधित कुछ विशेष सफलताएं नीचे दी गई हैं।

- लैंगिक हिंसा, भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर पाई जाने वाली समस्या है और ग्रामीण श्रोताओं, विशेषकर महिलाओं तथा अशिक्षितों से घनिष्ठ जुड़ाव के लिए मोबाइल रेडियो एक कारगर रणनीति साबित हुआ है। जहां आप नुक्कड नाटक, वीडियो वैन, तथा लैंगिक प्रशिक्षणों के माध्यम से बड़े समूहों तक पहुंच सकते हैं, वहीं महिलाओं तक पहुंच बनाना एक चुनौती होती है क्योंकि गांव में सार्वजनिक स्थानों तक महिलाओं की पहुंच काफी हद तक सीमित रहती है। महिलाओं तक पहुंच बनाने के मामले में मोबाइल फोन एक प्रभावशाली माध्यम बन गए हैं क्योंकि फोन तक उनकी पहुंच रहती है और वे अपने आराम के समय में रेडियो प्रोग्राम सुनने के लिए इसका उपयोग करती हैं।
- उदाहरण के लिए, जेएमवी ने चार महीनों के समय में 150,000 से अधिक कॉलों और एसएमएस, तथा 35,000 से अधिक विशिष्ट कॉलर्स के साथ लैंगिक हिंसा रोकथाम के संदेश प्रसारित करते हुए झारखण्ड के 17 जिलों तक अपनी पहुंच बनाई। इस प्लेटफार्म पर 100,000 से भी अधिक उपयोक्ता रहे जिनकी ओर से रोजाना 2000 बार से अधिक कॉलें आईं, और संस्कृति, स्थानीय जानकारियों तथा घोषणाओं, सरकारी योजनाओं, तथा सूचनाओं की साझेदारी आदि विविध मामलों पर चर्चाएं की गईं। लैंगिक हिंसा के बारे में 500 से अधिक लोगों ने योगदान किया जिसके तहत कॉलर्स ने अपने दृष्टिकोण, मत अभिव्यक्त किये, अपने जीवन की कहानियां साझा की साक्षात्कार, कविताएं, गीत, तथा लघु नाटिकाएं भी प्रस्तुत कीं।
- मोबाइल वाणी, उन लोगों के लिए सामाजिक मीडिया नेटवर्क की तरह काम करता है जो अशिक्षित हैं और प्रायः ग्रामीण समुदायों से आते हैं।
- डिजिटल मीडिया प्लेटफार्म, वास्तव में लोगों को सामाजिक परिर्वन हेतु जोड़ने के लिए निर्दिष्ट है। लोग लैंगिक हिंसा से संबंधित विभिन्न ऑडियो साक्षात्कार, रेडियो नाटक, और चर्चा सुनते हैं और अपने सुझाव तथा प्रश्न रिकार्ड करते हैं व संगठन से संपर्क करते हैं।

एपिसोड संख्या	एपिसोड की विषयवस्तु
1.	लैंगिक हिंसा का परिचय- लैंगिक हिंसा, तथा लैंगिक हिंसा प्रतिषेध अधिनियम (2006) के बारे में जानकारी
2.	लैंगिक हिंसा के कारण
3.	लैंगिक हिंसा के निहितार्थ
4.	मामलों के अध्ययन(केस अध्ययन)
5.	रेडियो नाटक 'छुटकी की कहानी' का पहला एपिसोड, जिसमें छुटकी का विवाह 14 वर्ष की कम आयु में हो जाता है।
6.	लैंगिक हिंसा के बारे में लोगों के साक्षात्कार और राय तथा 'छुटकी की कहानी' का एपिसोड 2, जिसमें छुटकी को अपने सास-ससुर के साथ तालमेल बिठाना और कुशल बहू बनकर दिखाना पड़ता है।
7.	लैंगिक हिंसा के मसले पर समुदाय के लोगों द्वारा रिकार्ड किया गया नाटक
8.	लैंगिक हिंसा रोकने के बारे में लोगों की सलाहें, तथा 'छुटकी की कहानी' का अगला एपिसोड, जिसमें उसे घरेलू काम करने पर मजबूर किया जाता है और पढ़ने नहीं दिया जाता।

- अभियान के दौरान उभरने वाले रुझान तथा गहन अंतर्दृष्टि, हस्तक्षेप के दायरे को व्यापक बनाने के लिए एक मजबूत जन् पैरवी घटक को शामिल करने का एक अनुपम अवसर प्रस्तुत करते हैं ।
- अभियानों में मोबाइल रेडियो का उपयोग, कई सामुदायिक सदस्यों में गहन रूचि उत्पन्न करता है, जो मसले पर जनपैरवी के मामले में नेतृत्व करते हैं। ये पैरोकार, अपने संबंधित समुदायों से लैंगिक हिंसा के मामलों की रिपोर्ट करने तथा प्रखंड स्तर पर योजना क्रियान्वयन की कमियां दूर करने में मदद के लिए प्रशिक्षित किए जा सकते हैं।

चुनौतियां और न्यूनीकरण

- इस प्लेटफार्म के कार्यान्वयन के दौरान सामना की जाने वाली कुछ प्रमुख चुनौतियां निम्न हो सकती हैं:
- श्रोताओं की संख्या, कॉल करने वालों/योगदानकर्ताओं की संख्या से प्रायः अधिक होने के कारण सामग्री की कमी हो जाती है। इसलिए ऐसे विशिष्ट उपाय करने अनिवार्य हो जाते हैं जिनसे कॉलरों को मोबाइल वाणी में सामग्री का योगदान करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाए जैसे कि एपिसोड पर प्रतिक्रिया, या वास्तविक जीवन अनुभव और कहानियों के रूप में। इस संबंध में, कॉलेज जाने वाले युवाओं को लक्षित करके कार्यशालाओं के माध्यम से उनको प्लेटफार्म के बारे में तथा लैंगिक हिंसा के मसले पर कहानियों और विचारों के माध्यम से योगदान करने के लिए उनकी संभावित भूमिका के बारे में जागरूक किया जा सकता है।
- पुरूषों की तुलना में कॉल करने वाली महिलाओं की संख्या काफी कम रहती है। जहां महिला श्रोताओं की संख्या अधिक होती है, वहीं समुदाय में उनकी निम्न स्थिति के कारण टिप्पणियों, अनुभव बताने, तथा प्रतिक्रियाएं देने के रूप में उनका योगदान कम रहता है। इस चुनौती को न्यूनीकृत करने के लिए यह उपाय अपनाया जा सकता है कि लक्षित समुदायों में महिलाओं से केंद्रित समूह चर्चाएं आयोजित करें, उनको कार्यक्रम तथा इसके प्रयोजन के बारे में बताएं, और उनसे ऑडियो-बाइट्स प्राप्त करें। ऐसे हस्तक्षेप तब तक करने आवश्यक हो सकते हैं जब तक कि महिलाएं/लड़कियां अपने-आप कॉल करने और अपने संदेश देने के लिए आत्मविश्वास से लैस न हो जाएं।
- लैंगिक हिंसा के बारे में रोचक और मनोरंजक रेडियो कार्यक्रम तैयार किए जाने के दौरान रचनात्मकता के उच्च स्तर बनाए रखना भी एक चुनौती हो सकती है। रचनात्मकता के अभाव में कार्यक्रम उबाऊ और एकरसतापूर्ण हो जाते हैं, जिससे समय के साथ श्रोताओं की तादाद कम होने लगती है। विषय के बारे में समुदाय से लगातार इनपुट लेते रहने और सक्रिय शोध करने से इस विशेष चुनौती से निबटने में मदद मिल सकती है।

याद रखने लायक प्रमुख बिंदु!

अधिक कॉलर्स को प्रोत्साहित करें-विशेषकर लड़कियां और महिलाओं को

ज्यादा कॉलर्स खासकर महिलाओं और युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए महिला श्रोताओं को इस पहल के उद्देश्य तथा इसमें उनके द्वारा निभाई जा सकने वाली महत्वपूर्ण भूमिका, इस मुद्दे पर साउंड बाइट्स के द्वारा दिए जाने वाले उनके योगदान के बारे में जानकारी देने के लिए कार्यशालाओं या मुद्दे पर केन्द्रित समूह चर्चा आयोजित करना उपयोगी होता है। दो दिवसीय कार्यशाला विशेषतः इन समूहों के साथ विद्यालयों, कॉलेजों और खासकर गाँवों में आयोजित की जानी चाहिए।

अन्य हस्तक्षेपों से संबंध स्थापित करें

लैंगिक हिंसा के मसले के सन्दर्भ में संगठन के अन्य कार्यक्रमों से इस मंच के सबक और परिणाम जोड़ना, महत्त्वपूर्ण है। कार्यक्रम का पहला चरण लोगों को इस प्रथा के कुप्रभावों के बारे में जागरूक करने का हो सकता है जिसके बाद वे मोबाइल वाणी पर अपने अनुभव साझा करना शुरू कर सकते हैं। बाद में, संगठन अगले चरण में लैंगिक हिंसा के मामलों को सरकारी अधिकारियों के यहां दर्ज कराने तथा सामुदायिक परिवर्तन वाहकों के माध्यम से लैंगिक हिंसा के मामलों की रोकथाम करने के लिए रिपोर्टिंग प्रणाली स्थापित कर सकता है।

परिवर्तन वाहकों को चिन्हित व विकसित करें

सक्रिय और आत्मविश्वासी कॉलर्स-महिलाएं, पुरूष और युवा, को चिन्हित कर उन्हें कार्यक्रम के अगले स्तरों से जोड़ा जाना चाहिए। उनको सामाजिक परिवर्तन के कार्यकर्ताओं या अधिकारों के पैरोकारों के रूप में संगठन द्वारा प्रशिक्षित किया जा सकता है और लैंगिक हिंसा के मसले के कारगर समाधान हेतु अन्य कार्यक्रमों में सम्मिलित किया जा सकता है।

साक्ष्य उत्पन्न करें

प्लेटफार्म से सीखे गए सबक एकत्रित करने के लिए एक सुदृढ़ एमएंडई और दस्तावेजीकरण प्रणाली होना ज़रूरी है। ये सबक संगठन के जन तथा मध्य-मीडिया प्रयासों के साथ भलीभांति एकीकृत किए जाएं और क्षेत्र में लैंगिक हिंसा के समाधान हेतु समस्त भावी रणनीतिक निर्णयों में इन्हें आधार की तरह इस्तेमाल किया जाए।

अनुभाग

5

पांच आसान चरणो में अपने सामुदायिक आयोजन/ बैठक की योजना बनाएं

क्षेत्र में काम करने वाले किसी भी नागरिक समाज संगठन के लिए, सफलतापूर्वक सामुदायिक बैठकें तथा कार्यक्रम आयोजित करना बहुत मायने रखता है। यहां पांच चरणों में इस बारे में समझाया गया है:

1. अपने उद्देश्य निर्धारित करें

अपने उद्देश्य तय करना, सफल कार्यक्रम की योजना बनाने का पहला चरण है। इस बारे में विचार करें कि आप किस तरह से अपने वर्तमान कार्यक्रमों को समृद्ध बना सकते हैं और/या अपने संगठन के दीर्घकालीन लक्ष्यों में सहयोग कर सकते हैं।

- क्या आपको 2015 में एक बड़ी पहल के लिए अपने सदस्यों या नए समर्थकों को सुदृढ़ीकृत करने में रूचि है?
- क्या आप अपने संगठन का प्रारूप उन्नत बनाना और नई साझेदारियां कायम करना चाहते हैं?
- क्या आप नए दर्शकों को पहली बार जोड़ने के लिए उन तक पहुंचने की उम्मीद कर रहे हैं?
- क्या आप ऐसे समूहों को परस्पर पास लाने के लिए इस बैठक/ कार्यक्रम का उपयोग कर सकते हैं, जिनको एक-दूसरे से अन्यथा बात करने का अवसर न मिला हो?

कार्यक्रम या बैठक से लोगों को जो कुछ आप देना चाहते हैं, उसकी समझ रखने से आपको योजना तथा रवैया तय करने में मदद मिलेगी।

यहां कुछ संभावित उद्देश्य दिए गए हैं ये पूर्ण सूची नहीं है-बस कुछ विचार, जिनसे आप शुरूआत कर सकते हैं।

- मानवाधिकारों की वर्तमान चुनौतियों के बारे में जनजागरूकता बढ़ाना। यदि लोक शिक्षा आपका मुख्य उद्देश्य है, तो दर्शकों के साथ कम से कम आधे घंटे का प्रश्नोत्तर सत्र रखने हेतु योजना बनाकर अलग से समय रखें, और तथ्य पत्र तैयार रखें। समुदाय द्वारा सामना किए जा रहे संघर्षों से संबंध स्पष्ट करने के लिए, पैरोकारों, तथा बाल विवाह व लैंगिक हिंसा से सीधे प्रभावित समुदायों के लोगों को मिलाकर पैनल बनाना एक अच्छा तरीका हो सकता है।
- अपने संगठन की दृश्यता बढ़ाएं। यदि अपने संगठन का कार्य दिखाना आपका लक्ष्य है, तो ऐसे लोगों को आमंत्रित करें जो आपके संगठन का प्रारूप उन्नत बना सकें, जैसे कि प्रेस, संभावित दानदाता, और अन्य प्रभावशाली निर्णयकर्ता।
- अंतरपीढ़ीगत, अंतरधार्मिक, या अन्य अंतर्समूहों के बीच चर्चाएं शुरू करना। यदि आप विभिन्न समुदायों, जातियों, पृष्ठभूमियों के लोगों

को एक पास लाना चाहते हैं, तो यह सुनिश्चित करने का प्रयास करें कि आपके सह-प्रायोजकों, वक्ताओं, पैनलिस्टों, तथा सूत्रधारों में उन दर्शकों की विविधता परिलक्षित हो जिन तक पहुंचने की आपको उम्मीद है। और आपका कार्यक्रम एक तटस्थ, सुरक्षित जगह पर आयोजित करने की योजना बनाएं ताकि हर कोई सहज महसूस करे।

- गठबंधन बनाने के प्रयासों को रेखांकित करना और प्रेरित दर्शकों को रोचक तरीकों से जोड़ना। कार्रवाई-प्रेरित कार्यक्रम के लिए, पैनलिस्टों या अन्य प्रतिभागियों को उस पर केंद्रित होने के लिए प्रेरित करें कि क्या किया जाना है और किस तरह से दर्शक सदस्य योगदान कर सकते हैं। उनको तत्काल कार्रवाईयां सुझाएं जो वे कर सकें, चाहे यह भावी कार्यक्रम में भागीदारी हेतु सहमति प्रदान करने जितना आसान हो।
- नए सहयोगियों से गठबंधन बनाना जो 'असंभावित साझेदार' हों। यदि यह आपका लक्ष्य है तो अपने कार्यक्रम के लिए सह-प्रायोजक नियुक्त करना तथा लीक से हटकर सोचना सुनिश्चित करें। उदाहरण के लिए, यदि आपका संगठन, भारत में बाल अधिकारों की चुनौतियों पर केंद्रित है, तो आपके लिए सार्वजनिक सामाजिक विज्ञापन तैयार करने के लिए आप किसी विज्ञापन कंपनी से साझेदारी करने की सोच सकते हैं।
- सभी स्तर के नए सामुदायिक नेताओं को उनके समुदायों में कार्रवाई हेतु प्रोत्साहित करना। आप किशोरवय व युवाओं को यह विश्वास दिलाने पर अपना कार्यक्रम केंद्रित कर सकते हैं कि वे बदलाव ला सकते हैं और उनको स्थानीय नेतृत्व विकास या नागरिक सहभागिता कार्यक्रमों में निर्देशित करें।

2. अपने लक्षित दर्शक पहचानें

अपने उद्देश्य तय कर लेने के बाद, आपके पास इस बारे में बेहतर समझ होगी कि आपके लक्षित दर्शक कौन हैं। चाहे आपके संगठन का लक्षित दर्शकों से सीधा संपर्क न भी हो, लेकिन आप सामुदायिक संगठनों से साझेदारी कर सकते हैं।

3. साझेदार संगठन नियुक्त करें

आपके कार्यक्रम में अन्य समूहों तथा संगठनों को साझेदारी हेतु आमंत्रित करना सदैव उचित रहता है। अपनी रूचि और क्षमताओं के अनुसार साझेदार संगठन न केवल आपकी व्यापकता बढ़ाने में मदद कर सकते हैं, बल्कि वे कार्यक्रम की विश्वसनीयता भी बढ़ा सकते हैं और विचारों, समय, संसाधनों तथा/या पैनलिस्टों का योगदान भी कर सकते हैं। कुछ मामलों में, कार्यक्रम आधारित साझेदारियां ऐसे दीर्घकालीन संबंधों का मार्ग प्रशस्त करते हैं जो आपके पारस्परिक प्रयासों को लाभ पहुंचाते हैं। आप निम्न समूहों पर संभावित साझेदारों के रूप में विचार कर सकते हैं:

- मानव अधिकार संगठन
- नागरिक अधिकार समूह
- युवा केंद्रित संगठन
- विश्वविद्यालय और कॉलेज
- खेल-केंद्रित समूह
- आस्था आधारित या धर्मनिरपेक्ष संगठन
- सामुदायिक फाउंडेशन
- कंपनी उत्तरदायित्व समूह/समितियां
- नागरिक सहभागिता संगठन
- यदि आप नए सांगठनिक साझेदार से संपर्क कर रहे हैं, तो इस तथ्य पर जोर दें कि आपने उनके साथ कभी काम नहीं किया इसलिए अब उनके साथ कार्य करने को लेकर आप अत्यन्त उत्साहित हैं।
- उनको साझेदारी के लाभ के विषय में बताएं, खासतौर से यह कि उनकी सहभागिता, उनके कार्य को चर्चित बनाने, संगठन की दृश्यता बढ़ाने, तथा नए दर्शकवर्ग तक पहुंचने की दिशा में अच्छा अवसर हो सकती है। यदि आप अधिक सहयोगपूर्ण साझेदारी को लेकर उदार हैं, तो उनको कार्यक्रम की योजना तथा डिजाइन में अधिक सहभागिता के लिए आमंत्रित करें जैसे कि चर्चाओं के लिए पैनलिस्ट सुझाना, लक्षित दर्शकवर्ग पर चिंतन आदि।
- याद रखें कि समूहों की क्षमताएं अलग-अलग होती हैं, इसलिए उनकी सहभागिता के स्तर भी अलग-अलग होंगे। कुछ बस आपके ईमेल को आगे प्रसारित कर देंगे, वहीं कुछ अन्य समूह कार्यक्रम की योजना बनाने में ज्यादा भागीदारी कर सकते हैं या कुछ अन्य निधियों को योगदान भी कर सकते हैं। अपने साझेदार की क्षमताओं को समझें और सुनिश्चित करें कि अपने कार्यक्रम की योजना के बारे में उनसे आवश्यकता से अधिक (या बहुत ही कम) की मांग न करें।
- आरएसवीपी एकत्रित करना: यदि आप आरएसपीवी एकत्रित कर रहे हैं तो सुनिश्चित करें कि एक ही नियुक्त व्यक्ति या आरएसवीपी प्रणाली हो ताकि सदैव आपको व्यक्तियों की सही संख्या की जानकारी रहे। साथ ही यह भी ध्यान में रखें कि कुछ लोग नहीं भी आ सकते हैं, वहीं कुछ लोग बिना आरएसवीपी के आ सकते हैं। जितनी आपके पास सीटें हों, उससे लगभग 30% अधिक आरएसवीपी स्वीकार करना सामान्यतः सुरक्षित रहता है। सीमा प्राप्त कर लिए जाने के बाद आप आरएसवीपी के लिए प्रयासरत प्रत्येक की एक अनंतिम सूची भी रख सकते हैं और उनको बता सकते हैं कि कार्यक्रम के दिन सीमित संख्या में सीटें उपलब्ध हो सकती हैं।

4. एजेंडा तय करें

- अपने दर्शकों को जोड़ने के लिए अपने आयोजन कि संरचना के कई तरीके हैं। कुछ संभावित प्रारूप और विचार यहां दिए गए हैं:
- एक मुख्य वक्ता आमंत्रित करें: मसले के बारे में तथा इसके समाधान हेतु साझेदारों की भूमिका के बारे में बोलने के लिए एक स्थानीय नेता को आमंत्रित करें।
- एक पैनल चर्चा पेश करें: पैनलिस्ट मसले को संदर्भ में लाने में मदद कर सकते हैं, चाहे मसले के बारे में पृष्ठभूमि जानकारी उपलब्ध कराना

हो या मसलों को समकालीन बाल अधिकार सरोकारों से जोड़ना हो। कई दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व कराना सदैव उचित रहता है-संभावित पैनलिस्टों में कार्यकर्ता (एक्टिविस्ट), सामुदायिक नेता, तथा नागरिक अधिकार संगठनों के आयोजक, तथा निर्वाचित पदाधिकारी शामिल हो सकते हैं। साझेदार संगठन, चर्चा हेतु संभावित पैनलिस्टों के मामले में बेहतरीन स्रोत होते हैं, और यदि उन्हें प्रतिनिधित्व का अवसर मिले तो वे कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए अधिक उत्सुक हो सकते हैं।

- स्वागत कार्यक्रम करें: सार्वजनिक स्वागत-मुलाकात का प्लेटफार्म बनाने से आपसी रिश्ते बनाने व चर्चाएं जारी रखने के अवसर मिलेंगे। आप स्थानीय नेताओं, नीतिनिर्माताओं तथा दानदाताओं के वीआईपी स्वागत पर भी विचार कर सकते हैं। जो भी आप ऐसा तय करें, जलपान कराने का विचार सदैव उत्तम रहता है।
- प्रेस को आमंत्रित करें: आप प्रेस वार्ता आयोजित करने पर विचार कर सकते हैं।
- साझा इतिहास का उल्लेख करें: एक अंतरपीढ़ीगत कार्यक्रम आयोजित करें जहां अभिभावक सामुदायिक विकास में अपनी सहभागिता के बारे में बता सकते हैं और किशोरवय लोग अपनी पीढ़ी के लिए महत्त्वपूर्ण बातों पर चर्चा कर सकते हैं।
- अपने कार्य को प्रस्तुत करें: इस पर विचार करें कि कौन से मसले आपके मौजूदा पैरोकारी प्रयासों से जोड़े जा सकते हैं। वे मसले रेखांकित करें और प्रतिभागियों को ठोस कार्रवाई के बिंदु प्रदान करें। वे इसमें किस तरह सहयोग कर सकते हैं
- सामग्रियां और संसाधन वितरित करें: दर्शक/श्रोता सदस्यों को तथ्य पत्र, चर्चा प्रश्नों की प्रतियां या आगामी कार्यक्रमों के पर्चे वितरित करें। आप और आपके साझेदार संगठन आपके स्क्रीनिंग स्थल से बाहर से भी साहित्य की व्यवस्था कर सकते हैं ताकि दर्शक आपके कार्य के बारे में अधिक जान सकें।
- आगामी कार्यवाही के बिंदु सुझाएं: दर्शक/श्रोता सदस्यों के लिए ठोस तरीके प्रस्तावित करें जिनसे वे आप व आपके साझेदार संगठनों के कार्य से जुड़ सकें तथा सहयोग कर सकें। इनमें आगामी कार्यक्रमों की जानकारी के लिए आपकी वेबसाइट पर आना, स्वयंसेवा करना, सदस्य बनना, दान देना आदि को शामिल किया जा सकता है।
- सहायता मांगें: कार्यक्रम के दौरान वित्तपोषण के लिए प्रयास करने में कोई बुराई नहीं है, खासतौर से यदि आपके दर्शकों में संभावित बड़े दानदाता शामिल हैं।
- संपर्क में रहें! आपके कार्यक्रम में ईमेल पते एकत्रित करने की व्यवस्था करें, और बाद में उनका तथा सह-प्रायोजक संगठनों का अनुवर्तन (फॉलो-अप) करें। इन रिश्तों को समाप्त होने से बचाने के लिए आपको कठिन प्रयास करना होगा।

5. प्रचार-प्रसार करें

- यदि आप या आपके किसी साझेदार संगठन का संचार विभाग है, तो उसे सही तरह से शामिल करें।
- लेकिन यदि आउटरीच आपके लिए नई हो, तो भी कुछ सरल तरीके से आप प्रचार-प्रसार कर सकते हैं: इसे आसान बनाएं। इस बारे में सोचें कि आपके लक्षित दर्शक कौन हैं और जहां वे हैं वहां आप कैसे पहुंच सकते हैं। वे पहले से क्या सुनते, पढ़ते, देखते और लॉगऑन करते हैं? आपको पहले इन चीज़ों को लक्ष्य बनाना चाहिए।
- ब्यौरे नोट करें: किसी को भी नोटिस भेजने से पहले सही समय, लोकेशन, आयोजनस्थल तथा समयसारिणी की पुष्टि कर लें।
- हर किसी को उसके कठिन परिश्रम का श्रेय देना सुनिश्चित करें: आपकी सारी आउटरीच में आपके साझेदार संगठनों की पूरी सूची शामिल करें।
- स्थानीयता का ध्यान रखें: आपकी समस्त आउटरीच में स्थानीय जुड़ाव रेखांकित होने चाहिए जो आपके समुदाय तथा दर्शकों के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हों।
- इनबॉक्स तक पहुंच बनाएं: अपने कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार करने का सबसे सरल उपाय आप यह कर सकते हैं कि एक ईमेल ब्लॉस्ट तैयार करें और यह लिस्टसर्व्स द्वारा बहुत से लोगों को दो ई-मेल भेजें: पहला अपने कार्यक्रम से कम से कम दो सप्ताह पहले, और फिर कुछ दिन पहले एक अनुस्मारक (याद दिलाने हेतु)।
- यदि आपकी अपनी वेबसाइट हो, तो अपने कार्यक्रम के बारे में वहां पर जानकारी सुनिश्चित रूप से पोस्ट करें। किसी सह-आयोजक से भी यही करने को कहें।
- ज्यादा भीड़-भाड़ वाले इलाकों जैसे कि कॉलेज परिसरों, सामुदायिक केंद्रों, तथा मनोरंजन हॉलों में पोस्टर लगाएं।
- प्रेस से संपर्क शुरू करें: अपना कार्यक्रम करने से दस दिन पहले, स्थानीय अखबारों, रेडियो स्टेशनों तथा एथनिक मीडिया सहित ब्लॉग्स को एक प्रेस विज्ञप्ति भेजें। आपके कार्यक्रम के केंद्रबिंदु के आधार पर, आप ऐसे पत्रकारों को लक्ष्य बना सकते हैं जो नागरिक अधिकार के मुददों, अंतर्राष्ट्रीय मामलों, खेलकूद, या स्थानीय आयोजनों को कवर करते हों और स्थानीय सरोकारों के अनुसार उपयुक्त मुद्दे रेखांकित करने के लिए अपनी प्रेस विज्ञप्ति को अनुकूलित करना याद रखें।
- प्रसारण कराएं: स्थानीय टेलीविजन तथा स्थानीय समाचार कार्यक्रमों, टॉक रेडियो, युवा कार्यक्रमों या खेलकूद स्टेशनों सहित रेडियो कार्यक्रमों से संपर्क करें। उनको अपने आयोजन के बारे में बताएं, आपके समुदाय के लिए इसका महत्त्व स्पष्ट करें, और यदि संभव हो तो उन्हें किसी स्थानीय वक्ता (जैसे कि स्टॉफ का व्यक्ति या पैनलिस्ट) से संपर्क करने को कहें जो साक्षात्कारों के लिए उपलब्ध हो सकता हो। असाइनमेंट संपादकों (स्थानीय टीवी समाचार के लिए) या निर्माताओं (सार्वजनिक मामलों वाले कार्यक्रम या टॉक रेडियो) से संपर्क का प्रयास करें।

योजना जांचसूची

आरंभिक योजना-कम से कम 6 सप्ताह पहले

- अपने सामुदायिक कार्यक्रम के लिए आयोजनस्थल तथा तारीख बुक करें। सभी बुनियादी बातों की अवश्य पुष्टि कर लें।
- क्या आपके दर्शकों के लिए पर्याप्त जगह है?
- क्या आयोजनस्थल पर प्रोजेक्टर, तथा पर्याप्त स्पीकर सिस्टम है?
- यदि आप पैनल या स्वागतकक्ष की व्यवस्था कर रहे हैं तो क्या पर्याप्त माइक, मेजें और कुर्सियां हैं?
- अपनी पहुंच बढ़ाने के लिए स्थानीय सांगठनिक साझेदारों को भर्ती करें, और प्रत्येक हेतु भूमिका चिन्हित करने में मदद करें (जैसे कि प्रचार, पैनलिस्टों का समन्वय, तथा स्वागत योजना)।
- वक्ताओं, पैनलिस्टों, प्रस्तुतियां देने वालों, तथा एक सूत्रधार (यदि सांगत हो) निश्चित करें।
- अपने पर्चे, ईमेल ब्लॉस्ट, तथा प्रेस विज्ञप्ति तैयार करें।

लॉजिस्टिकल योजना तथा आरंभिक आउटरीच-3-4 सप्ताह पहले

- इलेक्ट्रॉनिक रूप से प्रचार-प्रसार करें (फेसबुक, ट्विटर आदि)। आपकी वेबसाइट पर एक संपर्क तथा आरएसवीपी जानकारी शामिल करना सुनिश्चित करें, यदि सांगत हो ।
- अपने सभी उपकरण तथा डीवीडी आदि चैक करें जो आप अपने कार्यक्रम के लिए उपयोग करने वाले हों।
- स्वागत के लिए भोजन का प्रबंध करें (यदि लागू हो)।
- कार्यक्रम का एजेंडा बनाएं और साझेदारों से विचार-विमर्श करें।

अन्य लॉजिस्टिकल योजना-2 सप्ताह पहले

- मीडिया माध्यमों जैसे कि स्थानीय अखबारों, टेलीविजन स्टेशनों, तथा/या रेडियो कार्यक्रमों में प्रेस रिलीज भेजें और उनको अपने कार्यक्रम के बारे में बताएं। एक प्रेस संपर्क की पहचान सुनिश्चित करें जिससे आप बाद में अनुवर्तन (फॉलो-अप) कर सकें।
- अपने पर्चे/पोस्टर अधिक भीड़-भाड़ वाले इलाकों में लगाएं। रणनीतिक रवैया रखें: ऐसे क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार करें जहां आपके दर्शक ज्यादातर आते हों।
- कार्यक्रम के स्टॉफ (कैटरर, वेन्यू, आईटी, आदि) से सभी ब्यौरों की पुष्टि करें और एजेंडे को अंतिम रूप दें।

मीडिया आउटरीच-10 दिन पहले

- जिन प्रेस वालों ने स्टोरी कवर करने में रूचि दिखाई हो, उनसे अनुवर्तन (फॉलो-अप) करें। उनको याद दिलाएं कि आपका कार्यक्रम क्यों अनूठा है और समुदाय के लिए क्यों महत्त्वपूर्ण है।
- अन्य प्रेसके व्यक्तियों को निजी तौर पर ईमेल और/या कॉल करें जिनको आपने पहले चिन्हित किया हो।
- कई दिन पहले योजना को अंतिम रूप दें।
- सभी लॉजिस्टिक ब्यौरे तथा उपकरण अंतिम बार जांचें और सुनिश्चित करें कि कोई कमियां न हों।
- एक अनुस्मारक ईमेल ब्लॉस्ट भेजें।
- कार्यक्रम में वितरित करने के लिए पर्चों की प्रतियां बनाएं।

कार्यक्रम के समय

- टाइमकीपर रखें ताकि पैनलिस्ट/वक्ता अपने निर्धारित समय का ही उपयोग करें।
- फोटो खींचें।
- लोगों के आने पर, उनसे आपके संगठन की नई जानकारी प्राप्त करने हेतु साइनअप करने को कहें।
- कार्रवाई शुरू करने की घोषणा करें या अनुवर्तन (फॉलो-अप) के लिए उपस्थितों को सामग्रियां उपलब्ध कराएं।
- अपने कार्यक्रम के फोटो अपलोड करें और दूसरों को भेजें।

आपके कार्यक्रम में

- वार्तालाप का उद्देश्य समझाएं। समूह को पटरी पर रखने के लिए, कार्यक्रम की शुरूआत में ही अपने लक्ष्य साफ-साफ बताएं। आपने लोगों को क्यों एकजुट किया है?
- सोचने के लिए समय दें। बाल विवाह और लैंगिक हिंसा के मसले पर अपनी बात रखने के तुरंत बाद , लोगों से पूछें कि वे इस बारे में क्या सोचते हैं। चर्चा प्रश्नों में बातचीत पर जाने से पहले लोगों को उनकी भावनाएं अभिव्यक्त करने दें। साझेदारी एक शक्तिशाली अनुभव होता है और भावनात्मक स्तर की साझेदारी, सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित करने का महत्त्वपूर्ण कारण होता है।
- व्यावहारिक नियम तय करें: जो भी प्रारूप आप अपने कार्यक्रम के लिए तय करें-पैनल, बहस, टाउन हॉल बैठक- आगे बढ़ने से पहले चर्चा हेतु कुछ व्यावहारिक नियम तय करना सदैव उचित रहता है। यह विशेषरूप से महत्त्वपूर्ण है यदि आप ऐसे लोगों को एकजुट करते हैं जो आपस में एक-दूसरे को नहीं जानते, और जो अपनी बात रखने के विभिन्न तरीकों से परिचित हो सकते हैं। यदि समय हो तो एक समूह के रूप में दिशा का मंथन करने के लिए प्रतिभागियों से यह पूछना कि चर्चा में सहज भागीदारी के लिए वे क्या चाहते हैं, एक उत्तम विचार है।

सामाजिक मानचित्रण – क्या और कैसे?

सामाजिक मानचित्रण क्या है?

सामाजिक मानचित्रण, ग्राम संसाधन, कार्यक्रम क्रियान्वयन हेतु महत्त्वपूर्ण बुनियादी कारक दर्शाने, क्षेत्र में लोगों को जोड़ने के लिए चुनौतियों तथा अवसरों का पूर्वानुमान लगाने की एक दृश्यात्मक पद्धति है। सामाजिक मानचित्रण का उपयोग गांव की रूपरेखा, बुनियादी ढांचा, जनांकिकी, नृजातीय-भाषाई समूहों, स्वास्थ्य पैटर्न, संपत्ति व अन्य चीज़ें दर्शाने के लिए किया जा सकता है।

सामाजिक मानचित्रण की यह मार्गदर्शिका, बीच में स्कूल छोड़ने, बाल विवाह और लैंगिक हिंसा की रोकथाम से संबंधित प्रमुख मसलों की सहभागी शोध पद्धति के उपयोग द्वारा पहचान में उपयोगी होगी।

उद्देश्यो : यह सामाजिक मानचित्रण प्रक्रिया निम्न पर केंद्रित होगी :

1. अपने गांव में बाल विवाह, बीच में स्कूल छोड़ने और लैंगिक हिंसा का कारण बनने वाले मुख्य दृश्यमान और भौतिक मसलों का चिन्हांकन।
2. गांव में मुख्य निर्णयकर्ताओं और हितधारकों का चिन्हांकन।
3. सहयोग हेतु प्रभावी रणनीतियों का चिन्हांकन।

सामाजिक मानचित्रण की प्रक्रिया :

चरण 1: आधार मानचित्र तैयार करना

मानचित्र जिस पर क्षेत्र के सभी घर स्थित होते हैं (उदा. एक गांव, एक पड़ोस, एक ग्रामीण परिक्षेत्र, गांव के आस-पास की सड़कें, आदि)

(निर्देश-प्रत्येक स्तर को इसका अपना प्रतीक या रंग कोड दिया जा सकता है)

चरण 2: महत्त्वपूर्ण इकाईयां पहचानना

- शैक्षिक संस्थान (औपचारिक और अनौपचारिक)
- स्वास्थ्य सुविधाएं, उदा. PHC, CHC
- जल के स्रोत
- गांव में कोई बाहरी स्वच्छता प्रणाली या सार्वजनिक शौचालय
- प्रकाश सुविधाएं
- धार्मिक संस्थान, उदा. मंदिर, मस्जिद, चर्च

चरण 3: सामाजिक सहभागिताओं की पहचान करना

- गांव के सामाजिक समूह
- लड़कियों के क्लब
- लड़कों के क्लब
- खेल का मैदान
- सामुदायिक मीटिंग हॉल

चरण 4: मुख्य हितधारकों की पहचान करना

- PRI कार्यालय
- PHC पर ASHA और AWW कार्यकर्त्रियां
- ग्राम स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति (VHSC)
- कोई अन्य हितधारक समूह जैसे कि SHG, बाल संरक्षण समिति, SMC

सामाजिक मानचित्रण के बाद जाँच करें कि आपके पास यह सारी जानकारी हो:

- क्या आपने गांव में मौजूद संसाधन चिन्हित किए हैं?
- कौन से संसाधन विरल हैं?
- क्या महिलाओं की भूमि तक पहुंच है?
- लोग पानी कहां से लाते हैं?
- माध्यमिक स्कूल कितना दूर हैं?
- स्कूल जाने का रास्ता कितना सुरक्षित हैं?
- लोग खाली समय में मनोरंजक गतिविधियां कहां करते हैं?
- आप एक समुदाय के रूप में किस तरह की विकास गतिविधियां कर सकते हैं? कहां?
- किन संसाधनों के मामले में आपको सर्वाधिक समस्या है?
- किनके लिए बाल विवाह हेतु कौन से कारक उत्तरदायी हैं?
- क्या लड़कियां अकेले विद्यालय जाती हैं? अगर हाँ तो क्यों?

साथ रखने वाली चीज़ें

- किसी कार्यक्रम आयोजन के समय बनाई गई चीज़ें कॉपी करने के लिए सामग्रियां रखें-दस्तावेज शीट में प्रति जोड़ने के लिए सफेद ए4 कागज़।
- अनिवार्य सामग्रियां साथ लाएं।
- पृष्ठभूमि से कार्यक्रम का अवलोकन करें।
- सभी महत्त्वपूर्ण जानकारियां लिखें। संबंधित विषय दर्शाते हुए जांचसूची बनाना मददगार होगा।
- नोट करें कि कौन बोल रहा है? क्या सभी की समान सहभागिता है या कुछ लोग प्रक्रिया पर हावी रहते हैं? क्या महिलाएं बात करती हैं?
- अनुदेशकको संकेत करते हुए अप्रत्यक्ष रूप से उसकी सहायता करें, उदा. कंधे थपथपाना।
- यदि परिस्थिति के अनुसार आवश्यक हो तो सीधे प्रश्न पूछते हुए अनुदेशकका सहयोग करें।
- इस बारे में सावधानी रखें कि प्रतिभागी किसी दृश्यमान विषय (मानचित्र, आरेख आदि) की नकल एक कागज़ पर कार्यक्रम के तुरंत बाद तैयार करें।
- प्रतिलिपि बनाने का अवलोकन करें और सुविधा प्रदान करें, सुनिश्चित करें कि प्रति मूल के समान हो, इसमें प्रतीक हो, तारीख हो, स्थान हो, और बनाने वालों के नाम हों।
- कार्यक्रम के बाद अनुदेशकके साथ बैठें और दस्तावेज शीट भरते समय टिप्पणियों पर चर्चा करें।

सामाजिक मानचित्रण के उदाहरण :

मुख्य हितधारकों के साथ कार्य करना

अभिभावकों को लामबंद और शामिल करना - किशोरवय समूहों के साथ कार्य करने के मामले में अभिभावक एक महत्त्वपूर्ण हितधारक होते हैं क्योंकि किशोरवय के अवयस्क होने के कारण-उनके जीवन को प्रभावित करने वाले अधिकांश निर्णय, जैसे कि गतिशीलता, शिक्षा आदि के बारे में निर्णय उनके अभिभावकों द्वारा ही लिए जाते हैं। अभिभावकों के साथ कार्य करने की कुछ रणनीतियां निम्न हो सकती हैं :

हस्तक्षेप का प्रकार

घरेलू दौरा- ऐसे किशोरवय के परिवार से मिलने के लिए घरेलू दौरा करें जो किसी तरह के जोखिम में चिन्हित किया गया हो (जैसे कि बाल विवाह, लैंगिक हिंसा/भेदभाव, गतिशीलता (आवाजाही) पर प्रतिबंध, शिक्षा के अवसरों का अभाव आदि।)।

बैठकें- सामुदायिक स्तर पर अभिभावकों, समुदाय के प्रभावशाली व्यक्तियों जैसे कि अध्यापकों, पीआरआई सदस्यों, धार्मिक नेताओं को शामिल करते हुए बैठकें आयोजित करके किशोरवय सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाले मुख्य बिंदुओं पर चर्चा करें। मसले के बारे में अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करें।

कौशल प्रशिक्षण- कार्यक्रम, अभिभावकों को संवाद आदि प्रशिक्षण के माध्यम से उनके युवा किशोरवय से अंतरपीढ़ीगत संवाद शुरू करने के लिए सहयोग दे सकते हैं, अभिभावकों को किशोरवय के साथ घर में अभ्यास करने के लिए गतिविधियां दी जा सकती हैं।

अभिभावक शिक्षा कार्यक्रम- बाल विवाह, लैंगिक हिंसा, तथा भेदभाव पर प्रशिक्षण को शामिल किया जा सकता है। शैक्षिक कार्यक्रम में ऐसी प्रथाओं और कानूनी क्रियान्वयन के प्रभाव शामिल हो सकते हैं। लड़कियों के सशक्तिकरण हेतु उपलब्ध योजनाओं की संख्या, महत्त्वपूर्ण बिंदु हो सकती है जो लैंगिक हिंसा/भेदभाव, बाल विवाह, बीच में स्कूल छोड़ने की घटनाओं में कमी लाने के लिए प्रोत्साहित कर सकती हैं।

अभिभावक किशोरवय सहभागिता कार्यक्रम- अंतराल दूर करने के लिए एक ही प्लेटफार्म पर भागीदारी का अवसर देता है। इसे प्रतिभा खोज प्रतियोगिता जैसे कि चित्रकारी, स्लोगन बनाने की प्रतियोगिताएं, संदेशों के साथ वॉल पेंटिंग बनाना आदि के माध्यम से लागू किया जा सकता है। यह अपेक्षाकृत बड़े प्लेटफार्म पर अधिक दृश्यता के साथ अंतरलैंगिक और अंतरपीढ़ीगत संवाद के भी अवसर उत्पन्न करेगा।

याद रखने लायक प्रमुख बिंदु

- किशोरवयव परिवारों से घनिष्ठता विकसित करें।
- घरेलू दौरों, बैठकों, और सामुदायिक स्तर के कार्यक्रमों के समय आईईसी सामग्रियां साथ ले जाएं।
- गतिविधियां आयोजित करने के लिए, दैनिक घरेलू जिम्मेदारियों तथा काम-काज में बाधा डाले बिना अभिभावकों की उपलब्धता।
- पारिवारिक तथा सामुदायिक स्तर पर सामूहिक प्रयास प्रोत्साहित करने के लिए अभिभावकों का नेटवर्क बनाएं।
- कुरीतियों के खिलाफ कार्रवाई करने वाले अभिभावकों को सम्मानित करें।

सामुदायिक और धार्मिक नेता- ये ऐसे मुख्य लोग हैं जो अभिभावकों को किशोरवय सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाली कार्रवाई करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। ये संस्थाएं, समुदाय में व्यापक रूप से होने वाले कार्यक्रमों और विधियों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं जिनमें बाल विवाह, धार्मिक समारोहों और त्यौहारों के समय किया जाने वाला भेदभाव आदि शामिल हैं। इन संस्थाओं द्वारा फैलाए जाने वाले वक्तव्य और विश्वास, उनके धर्म और प्रथाओं/विधियों के मूलभूत मूल्यों पर आधारित होते हैं जो अनुयायियों, तथा कुछ सामाजिक सदस्यों को एक पहचान देते हैं, ताकि उनके द्वारा फैलाए जाने वाले संदेश परम्पराओं में विश्वास करने वाले समुदाय द्वारा कठोरता से पालन किए जाएं।

सामुदायिक और धार्मिक नेताओं के जुड़ाव का समुदाय के जीवन पर वृहत्तर प्रभाव पड़ता है, जिसमें किशोरवय के अभिभावक व अन्य भी शामिल हैं। सामुदायिक और धार्मिक नेताओं से जुड़ने के लिए कुछ रणनीतियां निम्न हो सकती हैं :

सीधा हस्तक्षेप- ऐसे स्थानीय नेताओं से किया जा सकता है जो पहुंच में हों और उनसे उनके समुदाय में लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने हेतु मानसिकता बदलने का आह्वान करने के लिए कहें।

टॉक शो (रैली) आयोजित करना- कुछ महत्त्वपूर्ण अवसरों जैसे कि (धार्मिक, राष्ट्रीय, त्यौहारों) आदि पर सामुदायिक तथा बड़े स्तर पर टॉक शो/रैलियां आयोजित किए जा सकते हैं जिनमें स्थानीय समुदाय के नेताओं को निमंत्रित करें।

प्लेटफार्म बनाना- विभिन्न धार्मिक नेताओं तथा सामुदायिक नेताओं के लिए। इससे आर्थिक के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन के लिए लैंगिक हिंसा/भेदभाव, बाल विवाह, युवाओं का सशक्तिकरण तथा बुनियादी ढांचे का विकास आदि मसलों के लिए व्यापक परिदृश्य बनाया जा सकेगा।

जनपैरवी- नेताओं के साथ न केवल बातों बल्कि कार्रवाईयों के माध्यम से भी करें जैसे कि सामाजिक अवसरों जैसे कि किसी बच्चे के जन्म के उत्सव, विवाह, कर्मकाण्ड (अनुष्ठान) आदि मौकों पर उन्हें आमंत्रित करें।

नवप्रवर्तनों को रेखांकित करना- सम्मान देते हुए प्रयासों व नवप्रवर्तनों को रेखांकित किया जा सकता है, उदाहरण के लिए-कर्नाटक में जिला बाल संरक्षण परियोजना ने नवग्रह का अनूठा विचार तैयार किया (हिंदुओं का विश्वास है कि नवग्रह उनके भाग्य में एक बड़ी भूमिका निभाते हैं, और जीवन में आने वाले समस्त सुखों और दुखों का कारण होते हैं।) जो नवग्रह के देवताओं के स्थान पर पीआरआई, अध्यापकों, एएनएम, आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री, एसडीएमसी, बीडीओ, बीवीएस और पुलिस के रूप में उनके बच्चों को प्रभावित कर सकता है।

नेताओं का क्षमता-निर्माण- यह मसले पर सही संदेश फैलाने के लिए अवसर उत्पन्न करने का एक तरीका है। इसमें न केवल सामाजिक कारक बल्कि ऐसे कानून और योजनाएं भी शामिल हैं जो किशोरवय को प्रभावित कर सकते हैं।

शपथ दिलाना- युवा किशोरवय को सशक्त बनाने के तरीके अपनाने में नेताओं के समारोह एक बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। यह नेताओं में मसले के बारे में अपेक्षित अनुवर्तन (फॉलो-अप) करने की जिम्मेदारी की भावना भी भरता है। इसके अलावा, यह समुदाय में नेताओं तथा उनकी अहमियत को सम्मान देने का माहौल भी बनाता है, जिसे यूनिसेफ सीएसओ साझेदारों द्वारा अपनाया जाता है।

याद रखने लायक प्रमुख बिंदु

- समुदाय का सामाजिक मानचित्रण
- सामाजिक मसले पर कार्य करने के लिए समान मानसिकता वाले नेताओं, और रूचि रखने वाले नेताओं की पहचान करना।
- नेताओं का नेटवर्क खड़ा करना।
- नेताओं में जिम्मेदारी की भावना का संचार करना।
- सामाजिक बदलावों के विविध मसलों के समाधान के लिए तथा अपेक्षित परिवर्तन लाने के लिए प्रतिबंधित विश्वासों के बजाय किशोरवय के सशक्तिकरण हेतु नेताओं के माध्यम से समुदाय स्तर की सहभागिता।

पंचायत प्रतिनिधि- पंचायतों के निर्वाचित प्रतिनिधि, बाल विवाह तथा लैंगिक हिंसा/भेदभाव की प्रचलित प्रथाओं की रोकथाम के लिए उत्तरदायी होते हैं। ऐसी प्रथाएं खत्म करने के लिए उनके साथ मिलकर कार्य करने से मानकों तथा विधियों में वांछित परिवर्तनों को प्रभावित किया जा सकता है। परिवर्तन प्रभावित करने के लिए पीआरआई सदस्यों के पास न केवल शक्ति होती है बल्कि परिवर्तन क्रियान्वित करने के लिए उनके पास कानूनी प्राधिकार भी होता है। राज्य तथा केंद्र सरकार की योजनाओं, कानूनों और कार्यक्रमों को लागू करना उनकी जिम्मेदारियों में आता है। पीआरआई के साथ हस्तक्षेप रणनीतियों में निम्न को शामिल किया जा सकता है:

पीआरआई को जागरूक करना- सदस्यों को सूचनाएं उपलब्ध कराई जा सकती हैं ताकि वे कानूनों तथा योजनाओं के बारे में सही जानकारियों के साथ समुदाय में जागरूकता सत्र, सार्वजनिक जागरूकता कार्यक्रम चला सकें।

पीआरआई सदस्यों के लिए प्रशिक्षण तथा कार्यशालाएं- इससे सदस्यगण कानून (पीसीएमए) की मदद से बाल विवाह जैसी घटनाओं की रोकथाम करने में, तथा बाल विवाहों के कुप्रभाव समझाते हुए अभिभावकों से बातचीत करते हुए कार्रवाई में सक्षम बनेंगे तथा किशोरवय नामांकन को फायदे एवं नुकसान के अनुरूप बढ़ावा देंगे।

इसके अलावा, सही जानकारियों से सदस्यों के कौशल व आत्मविश्वास में भी बढ़ोत्तरी होगी, जिससे वे ग्रामसभाओं, पंचायत बैठकों आदि में मसले अधिक आत्मविश्वास के साथ उठा सकेंगे।

सार्वजनिक कार्यक्रमों को प्रोत्साहन- बाल विवाह जैसी प्रथाओं के विरूद्ध कार्रवाई करने वाले पीआरआई सदस्यों तथा अभिभावकों के लिए, उदाहरण के लिए-यूनिसेफ के हस्तक्षेप वाले क्षेत्र में बीकानेर जिले की एक ग्राम पंचायत ने समारोह में संकल्प लिया कि वे अपनी पंचायत को बाल विवाह से मुक्त बनाएंगे, उन्होंने अपनी पंचायत को बाल विवाह मुक्त पंचायत घोषित किया।

योजना में पीआरआई सदस्यों को शामिल करना- संगठन, समुदाय के लिए अपनी गतिविधियों की योजना बनाने के दौरान पीआरआई सदस्यों को शामिल कर सकते हैं, इससे न केवल उनमें जिम्मेदारी की भावना बढ़ेगी, बल्कि संगठन के लिए किशोरवय सशक्तिकरण का एजेंडा आगे बढाने के लिए सरकारी संस्थाओं की सहभागिता पाने का भी अवसर उत्पन्न होगा।

याद रखने लायक प्रमुख बिंदु

- गतिविधियां आयोजित करने, तथा उनके साथ गतिविधियों की योजना बनाने के लिए पीआरआई सदस्यों की उपलब्धता।
- पीआरआई सदस्यों को सही जानकारी तथा महत्त्वपूर्ण फोन नम्बरों जैसे कि-पुलिस, CMPO, चाइल्ड लाइन आदि के नंबर दें।
- सदस्यों की सार्वजनिक जागरूकता बैठकों में उपयोग के लिए आईईसी सामग्रियां विकसित की जा सकती हैं और उन्हें दी जा सकती हैं।

© Breakthrough/India

संलग्नक

संलग्नक 1

चंदा पुकारे की पटकथा!

जोकर (1) पहले दशकों से जोकर खेल खिलाता है

(2) फिर नाटक के बारे मे बताता है (सिर्फ नाम)

(3) और कहता है . इस नाटक का कोई अन्त नहीं है इसका अंत आप लोगों को बनाना है। (दर्शको से)

नाटक

चन्दा पुकारे

मुख्य पात्रः- (1) सुखियाः- चन्दा का पिता (एक अहमी आदमी)

(2) दुखियाः- सुखिया कि पत्नी (एक लाचार माँ)

(3) लखपतियां:-सुखिया का बेटा (एक बीगड़ा लड़का)

(4) मास्टरः-स्कूल का मास्टर

अन्य पात्रः-

सोनुः- एक पढ़ने लिखने वाला लड़का जो चन्दा का दोस्त है और उसी कि कक्षा में पढ़ता हैं (यह पात्र मास्टर करने वाला करे)

लेखपतियां:- (चाचा, चाची और सुमो के साथ स्कूल का विद्यार्थी का भी पात्र करें)

मास्टरः- (सुखिया का भाई) (चाचा और हीझडे का पात्र और दूसरा विद्यार्थी बना है)

दुखियः- (तीसरा विद्यार्थी है)

नाटक शुरू किया जाता है

दृश्य 1 प्रथम दृश्य में चन्दा बिच में और सभी पात्र उसे घेर कर खडे है और इधर उधर भागते हुए चन्दा-2 पुकार रहे है और बाद में संवाद (हम.....) करते हुए एक व्यक्ति बोल रहा है

संवाद: धनी कोहरे कि राह ..... चन्द वे लगा ग्रहण पते खामोश ..... सारा गांव खामोश ..... एक नन्ही सी चिडियां .....अपने दिल को अपने पंजों में समेटे हुए है और उसी जिसका नाम है चन्दा-3; चांद बना हुआ) फिर यह सीन (बीट के साथ)

समाप्त

दृश्य (2) सुखिया (हाथ में थाली बजाते हुए खुशी से पागल मुद्रा में) अरे ओ बुधना, अरे मगरा हम बाप बन गऐ है बाप। अरे कमली चाची, अरे बीमला चाची हम बाप बन गए है बाप।

चन्दा पुकार

विदूषक: - तो अब आपके सामने नाटक प्रस्तुत करने जा रहे है चन्दा पुकारे .... इस नाटक का अंत नहीं "इस नाटक का अंत आपकों बलाना है।

संगित-

संवाद:. घनी कोहरे की रात .... चाँद पे लगा ग्रहण पत्ते खामोश .... पूरा गाँव खामोश .... एक चिडिया अपने दिल को अपने पंजों से समेट कर रखे हुए .... और उसी गाँव के घर में रहती हुई एक 14 साल की मासूम लड़का .... चन्दा .... चन्दा .... चन्दा ....

संगितः-

थाली बजने का आवाज

सुखीयाः- अरे सोमरा, मंगरा, बुधना हम बाप बन गए है े

(खुशी का अहसास)

अरे लक्ष्मी काकी .... में बाप बन गए रे

C 1 अरे वाह .... पर ये तो बता बचवा का नाम का रखे हो ?

सुखीयाः- अरे तुमको नहीं पता .... मेरा नाम सुखीया, हमरी जोरू का नाम दुखिया तो हमार .... बचवा का नाम रहेगा लखपतिया.....................

C 1 अरे वाह .... वाह का नाम है ....

सुखीया :- अरे बुलाव .... लाईट वाला .... खाना वाला .... गाँव वाला सबकों बुलाव .... सबको न्योता देंगे खुब खचज्ञ करेंगे ....

C 1 अरे सबको बुलाते है .... उनको भी बुला लें का?

सुखीया- अरे किसको ?

C 1 उसको

सुखीयाः- अरे, कुछ बताएगा भी .... किसको ?

C 1 बता दें

सुखीयाः-	बता
C1	अरे वही ..... सज रही गली तेरी अम्मा.....?
सुखीयाः-	तो बुला ले .....
C 1	(गाँव वालों के खबर कहा है) पहले चाचा कमली चाची और सुमो को)
C 1	अरे चाचा ..... एगो बात बताऐं ?
चाचा-	का रे ?
C 1	अरे हमरा भाई सुखीया को बोला हुआ है
चाचा-	प्यार से मारते हुए .....अरे ये तो बहुत खुशी की बात है (और मार खाते फिर जाता है)
C 1	अरे ओ चाची ..... एगो खुशी की बात है .....
चाची-	का हैं ?
C 1	हमरे भाई को लड़का हुआ है .....
चाची-	अरे वाह! ये तो बहुत खुशी की बात है
C 1	कल आ जाना ..... छट्टी है ..... चचवों को ले ले चल आना
चाची-	ठीक है बिटवा आ जाएँगे ..... (हालो से) (गुद गुदाते हुए)
C 1	अरे इस सुमो कहा गया
सुमो-	(गाना गाते हुए प्रवेश करता है)
	लकली कि काठी, काठी पे थेड़ा घोडे के दुम पे जो मारा प्योडज़ (थोडा बोलते हुए लात मारता है और)
C 1	अबे चुप से (उसे डॉटते हुए) और एक बात सुन हमारे यहाँ लड़का हुआ है नड़का।
दर्शको से	
C 1	और दो साल के बाद सुखीया के घर फिर एक नन्ही सी जान ..... एक मासुम ने जन्म लिया ..... है इस बार लड़का नहीं नड़की पैद हुई है ..... जब लड़का पैदा हुई ता सन्नाटा मातम छाया है ..... क्या लड़की पाप है? (कलपते हुए)
गानाः-	जे ही कोख बेटा जनमे .....? वही कोख बेटीया .....

दृश्य (सुखीया का बेटा स्कूल जाने वाला है)

सुखीयाः- अरे ओ ? दुखिया ? कहाँ मर गई ??
दुखिया?
दुखियाः- अरे का है जी ? काहे चिल्ला रहे हैं?
सुखियाः- अरे कहाँ थी ?
दुखियाः- यही तो थी ?
सुखियाः- चल क गिलास पानी ला ? अरे सुन ये देख लखपतिया के लिए एक टीप-टॉप स्कूल बैग लाया हूँ ये ..... थरमस और खाने का ..... बचवा स्कूल जाएगा .....

(C 1 सुखिया का भाइ)

दुखियाः- अरे वाह ..... ये तो सुन्दर हे ? ऐ जी .....
दुखीयाः- ऊे जी! से जो बहुत मंहगा होगा ??
सुखीयाः- अरे चुप !!! मंहगा तुम्हारे दिमाग है ..... अब बचवा का नाम है लखपतिया ..... पढ़ लिख कर बनेगा करोड़पति .....फिर अरबपतियां ..... लोग कहेंगे वो देखों लखपतिया का बाप सुखपतिया जा रहा है ..... लखपतिया को बुलावा .....लखपतिया (आवाज लगाता है) ???

ऐ लखपतिया

लखपतियाः- खेलते हुए आता है ..... बाबा .....बाबा सुखपतिया से लिपट जाता है ..... (खुखिया उसकी पीठ ठोकता है) ओ वाह कितना सुन्दर लग रहा है..... अरे जूते के फिते नहीं बाँधें .....चय

दुखियाः- अरे बेटा टिफीन तो ले लो ..... तेरे पसन्द की चीज बनाई हैं।

सूत्रधारः- और लखपतिया के स्कूल जाते हुए पूरे पाँच साल बीत गए है

बेटीः- भईया को स्कूल से लौटते हुए बोलती है भैया - भैया ये आप बस्ता लेकर कहाँ जाते हो .....?

लखपतियाः- अरे मैं ..... मैं न रोज स्कूल जाता हूँ ..... स्कूल .....स्कूल ??? ल। वहाँ पढ़ाई होती है।

चन्दाः- पढ़ाई ..... पढ़ाइ ..... वो क्या होती है ?

लखपतियाः- पढ़ाइ होती है ..... दो एकम दो ..... दो दुनी चार और एक फॉट एपल..... दोपहरी का खाना और खेलना कबड्डी-कबड्डी .....

चन्दाः- अरे वाह .....!!! (आश्चर्य से) पर भैया मुझे भी स्कूल जाना हैं

लखपतियाः- अरे तू थोड़े स्कूल जाएगी.....

चन्दाः- क्यों ?

लखपतियाः- हूँ ! तू लड़की है लड़की .....

चन्दाः- (रोते हुए)- माँ ! माँ!! माँ !!!

दुखीयाः- क्या हुआ ?

चन्दाः- मुझे भी स्कूल जाना है..... भैया रोज जाते है .....

दुखीयाः- अच्छा ! शाम में जब बाबा खेत से वापस आएँगें तो मैं बात करूँगी ..... तू भी स्कूल जाएगी .....

चन्दाः- हाँ, बिल्कुल सच्ची।

चन्दाः- वाह ! मैं भी पढ़ने जाऊगी ..... मैं भी ..... मैं भी..... भैया की तरह स्कूल जाउँगी। मैं भी .....

सुखीयाः- (खेत से लौटता है ..... दुखिया उसे पानी देते हुए)

दुखियाः- ऐ, जी एक बात बोले ?

सुखीयाः- वो बात ऐसी है .....कि चन्दा भी अब बड़ी हो गई है ..... उसका भी दाखिल करवा देंगें ???

सुखीयाः- क्या ?

दुखियाः- हाँ वो आज बहुत रो रही थी ..... कह रही थी कि वो भी स्कूल जाएगी।

सुखीयाः- क्या ? पगला गई है ? लड़की जात स्कूल जाएगी? पढ़ लिख कर क्या करेगी? उसे घर के काम काज सीखा ..... अब वो (8-9) साल की हो गई है तो अभी से उसके लिए लड़का खोजना पड़ेगा, तब जाकर ..... चार पाँच साल बाद उसके लिए लड़का मिल सकेगा ये तो हमारी खानदानी रिति रिवाज है और वो और चार हुए चार बात होने शुरू हो जाती है।

दुखियाः- क्यों ?? इतनी कम उम्र में शादी करोगें ?

सुखियाः- अरे ..... जब हमारी शादी हुई थी तो तुम्हारी क्या उम्र थी ?

दुखियाः- मुझे क्या पता ?

सुखीयाः- मैं 18 साल का था और तू होगी 15 साल की ..... अभी से समाज में उटना बैठना है ..... कही उँच नीच हो गई तो मेरी नाक कट जाएगी।

सुखीयाः- तू चुप कर! मेरे काम में दखल मत दे ..... चल खाना लगा

चन्दाः- बाबा.....बाबा ..... मुझको भी स्कूल भैया की तरह स्कूल जाना है ..... मुझे न एक बैग ..... पानी की बोतल और टिफीन चाहिए.....

सुखीयाः- चन्दा ..... पढ़ने का काम लड़को को है ..... तू घर के काम कर ..... मैं तुम्हारे लिए नई फ्रॉक, जूती और टौफीला दूँगा।

चन्दाः- नहीं बाबा ..... मैं भी स्कूल जाऊँगी .....

सुखीयः- अरे चन्दा एक गुडिया भी ला दूँगा

चन्दाः- नहीं मैं स्कूल भी जाउँगी .....

गीत- हे उपर वाला तो ये का कर देले।

मास्टर जीः- सब बच्चे बैंठ जाओं।

अरे बेटा धनश्याम स्कूल काहे नहीं आया कहाँ गया था।

धनश्यामः- मैं जंगल गया था

मास्टर जीः- अरे सुखारी तुम कहाँ था।

सुखारी: बिल्ली पकड़ने गये थे।

मास्टर जीः- झगड़ा क्यों कर रहे थे? किताब खोलों? लखपतिया गृह कार्य कर कर आया है

लखपतियाः- भूल गया।

मास्टर जीः- 2 और 2 कितना होता है ?

लखपतियाः- पाँच

मास्टर जीः- चलो सब लोग किताब निकालो, सुखारी, अर्जुन, लखपतिया, जो पढ़ायेगें वो पढ़ना। चलो पढ़ो, अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए ..... तीनों सो जाते है।

सुखारी शुरू करे आ ई ..... अ से आम क से कबूतर ई ईमली उ से उल्लू और च से चन्दा।

चन्दा: - नहीं नहीं नहीं।

मास्टर जीः- अरे चन्दा सुनो तो फिर तुम रोज से रहे हो। मार पढ़ती है चलो आप की छुट्टी।

मास्टर जीः- अरे सुखारी आरे सुखारी .....

दुखियाः - अरे मास्टर जी- आइए ना।

मास्टर जीः- अरे तुम्हारी विटिया यहाँ कहाँ है?

दुखियाः - अरे मास्टर जी उसने कुछ कर दिया है क्या? आजकल वह बहुत झगडे करती रहती हैं।

मास्टर जीः- अरे तुम्हारी बिटिया स्कूल नहीं आती है ?

दुखियाः- मास्टर जी चन्दा तो बहुत ही चाहती है कि स्कूल जाय और पढ़े, लेकिन लखपतिया के बापू समझ ही नहीं पा रहे है।

मास्टर जीः- तुम्हारी बेटी चन्दा बहुत ही होशियार है उससे पढ़ाओं।

सुखियाः- अरे मास्टर साहब के लिए कुछ चाय पानी पिलाई की नहीं। आइए- 2 मास्टर साहब वैन्टि नं0- ऐ और एक ठीक है ना लखपतिया पढ़ने में अच्छा है?

मास्टर जीः- ये सब तो ठीक है एक बात तो बताओ ? सुखिया

सुखियाः- जी मास्टर जी?

मास्टर जीः- क्या सुखिया तुमने अपनी बेटी का स्कूल में दाखिल कराया ?

दुखियाः- स्कूल में दाखिल ? दाखिल .....

आप कैसी बाते कर रहे हैं ?

मास्टर जीः- मैं समझ गया, तुममे अभी तब चन्दा का नामांकन नहीं कराया, मैंने बहुत दिनों एक चीजो का नोटिस किया कि वह पीछे से खिड़की के पास छुपछुपकर सीखती रहती है और जब क्लास के बच्चे ध्यान देने लेकिन चन्दा बहुत ही होनहार है वह लाखों में एक है वह काफी ही कुशाग, वृद्वि की लड़की है।

दुखियाः - हमारी बेटी चन्दा ? आप मैं उसकी टाँगों को तोड़ दूँगी।

मास्टर जीः- नहीं नहीं तुम्हारी बेटी तो काफी होनहार हे तुम्हारी बेटी तो एकलव्य से भी आगे है। एकलव्य तो मुरत बनकर सीरदा था। तुम्हारी बेटी तो एकलव्य से भी आगे चलेगी।

सुखियाः - मास्टर जी चन्दा, वह तो लड़की है

मास्टर जीः- अरे लड़के, पीटी ऊषा, कल्पना चावना लता मंगेसकर सव जो लड़की है। लड़का लड़की में कोई भेदभाव नहीं है आप समाना कहाँ से कहो चला गया।

सुखियाः - 13 साल के उसकी शादी करा दूँगा

मास्टर जीः- शादी अरे चन्दा तो बच्ची है उसकी उम्र ही क्या है उसके पढने लिखने के दिन है पता है कम उम्र में शादी करना जुर्म है। इससे करने वाला, करवाने वाला, तथा इस शादी में शामिल होने वाला सभी को जेल हो सकती है। हमारी बात माल अभी चन्दा की उम्र ही क्या है ? अभी इसे मे है कि चन्दा का दाखिल स्कूल मे करा दो तुम्हारा लखपतिया भी तो स्कूल आता है। समझे तो कल ही उसका दाखिल स्कूल में करा देना।

दुखियाः- अरे सुनिए न मास्टर जी बात कह रहे है हमको लगता है कि अपनी चन्दा का दाखिला स्कूल में करा देना चाहिए .....कराइएगा न

मास्टर जीः- एक बात तुमने कुम्हार को घडे सानते देखा है।अगर उस कच्चे घडे में पानी डालोगे तो क्या होगा ?

मास्टर जीः- टीक उसी प्रकार कम उम्र में शादी करना उस घडे के समान है, किसी भी तरह से यानी मानसिक शारीरिक रूप से लड़की परिपक्व नहीं होती है इसलिए लड़की की शादी 18 से कम उम्र में कतई नहीं और लड़को की शादी 21 के बाद ही होनी चाहिए। आजकल तो सरकार ने कई प्रकार के कार्यक्रम भी चला रखे है जैसे लाडली लक्ष्मी योजना, राष्ट्रीय सर्व शिक्षा अभियान, मुख्यमंत्री कन्या दान योजना है, और तो और सरकार मुफ्त शिक्षा भोजन पोशाक इत्यादि भी दे रही है तो समझे कल ही उसका दाखिला करा देना।

सुखियाः - ठीक है लेकिन हमारी एक शर्त है ?

दुखियाः- क्या ?

सुखियाः - चन्दा स्कूल से सीधे घर आएगी समझी ?

दुखियाः- ठीक है चन्दा आएगी .....

चन्दाः- क्या है .....मैं स्कूल जाऊँगी ।

दुखियाः- तू कल से स्कूल जाएगी।

चन्दाः- क्या स्कूल..... मैं स्कूल जाऊँगी।

दुखियाः- हाँ तुम स्कूल जाऊँगी।

चन्दाः- ऐ- ऐ- ऐ- ऐ .....

लखपतियाः- क्या है लखपतिया, बाप के पॉकेट से निकालता हूँ सौ टकिया। जल्दी आ जाना ?

गीतः- थौड़ा जाल .....

अब 14 वर्ष की चन्दा 5वीं क्लास में आ गई। पढ़ाई मैं काफी तेज होने के कारण चन्दा को सभी प्यार करते है।

सोनूः- अरे चन्दा, कहाँ रहती हो, मैं तुझे कितनी जगह पर ढूँढा/ मुझे अपना नोट देना/ स्कूल के बाहर भी ढूँढा।

चन्दाः- तुम अपना नोट क्यों नही लिखते..... अच्छा सोनू तुम इतना अच्छे से पढ़ते हो,..... फिर नोट क्यों नहीं लिखते हो।

सोनूः- समय नहीं मिला।

चन्दाः- अच्छा ले लो।

सोनूः- अच्छा, मास्टर साहब ने जो नोट्स दिए, वे कहाँ लिखा है।

सोनूः- मैं 1-2 दिन में दे दूँगा, चन्दा।

लखपतिः- बाबा बाबा, माँ माँ

माँः- क्या हुआ लखपतियां।

लखपतियाः- बाबा कहाँ है?

माँः- बाबा खेत पर गये हैं ?

लखपतियाः- आजकल चन्दा स्कूल के बाहर लड़को से मिल रही है, उसका जाना बन्द करो।

माँ आखिर बात क्या है।

लखपतियाः- माँ, आज चन्दा स्कूल के पीछे पहाडों पर सोनू से हँस-हँस कर बाते कर रही है ?

माँः- क्या बाते कर रही थी।

लखपतियाः- वो मैं नहीं सुना, पर उसका स्कूल जाना बन्द कर दो।

माँः- स्कूल जाना बन्द कर दूँ।

लखपतियाः- मैं बाबा को बताऊँगा।

माँः- बेटा, मैं बाबा से बात कर लूँगी। तुम हाथ मुँह धो लो मैं तेरे लिए खाना लगाती हूँ। तुम बहुम भूखा होगा ना।

लखपतियाः- लेकिन माँ तुम चन्दा को समझा देना।

माँ:- अच्छा आने दो मैं भी पूछती हूँ कि वो कर क्या रही थी ?

चन्दा का प्रवेश

माँ:- चन्दा तुम पहाड़ी के पीछे क्या कर रही थी।

चन्दाः- पहाड़ी के पीछे

माँ:- कौन था तुम्हारे साथ

चन्दाः- अरे सोनू था मैं वो क्लास के छवजमे मांगा रखा था

माँ:- लेकिन बेटी संभलकर कही ऐसा न हो तुम्हारे बाबा नाराज़ हो जाएं,.... ऐसा कर कि तू कपड़े बदल, मैं तेरे लिए खाना लगाती हूँ।

क्लास में बच्चे झगड़ते रहते है।

मास्टर जीः- शान्ति - शान्ति- अरे शान्ति अरे ये स्कूल है कोई सोनपुर का मेला नहीं। शान्ति बनाए रखो।

हाँ बेटा आपने

अर्जुनः- हाँ मास्टर जी

मास्टर जीः- हाँ दो कदम आगे आना बेटा।

अर्जुनः- आ गया मास्टर जी

मास्टर जीः- अरे ईधर आ बेवकूफ, मेरे पास अरे इतने पास नहीं दूर रह अरे तुम परीक्षा में कितने नंबर मिला होगा।

अर्जुनः- 50 होगा मास्टर जी

मास्टर जीः- 50 होंगे।

अर्जुनः- 30 होंगे मास्टर जी

मास्टर जीः- 30 होंगे अति उत्तम और सेच तेरे दिमाग में और कुछ

अर्जुनः- 25 होंगे।

मास्टर जीः- 325 होंगे अरे नालायक 0 है तू स्कूल से भागकर मेला जाता है तू दो विषय में फेल है। आ बेटे लखपतिया, तू तो लखपतिया है तू तो सारे विषय में फेल हो गया है कल अपने बाबा को बुलाकर लाना।

लखपतियाः- किसको

मास्टर जीः- अपने बाबा सुखिया को।

अपने बाबा सुखिया को बुलाकर लाना। जैसा बाप वैसा बेटा।

घंटी बजती है। सारे बच्चे आपस मे बातचीत करते है नोकझोक करते है। क्या यार मैं तो एक विषय में फेल हूँ या दो विषय में फेल और लखपतिया सारे विषय में फेल और मास्टर साहब ने बाबा को बुलाने को कहा है अब क्या करूँ क्या करूँ।

सोनूः- चन्दा मैं तेरे ही घर जा रहा था। अरे टीक हुआ कि तुम यही पर मिल गई। पता है कि मैं अच्छे नंबरों से पास कर गया। और तुम भी तो पूरे स्कूल में पर आयी हो ?

चन्दाः- अच्छा सच ऐ तो बहुत ही खुशी की बात है।

सोनूः- हाँ तब तो तुम्हें मिठाई खिलाना पड़ेगा। मैं तो सोच लिया है कि बड़ा होकर बनूँगा इंजीनियर।

चन्दाः- इंजीनियर ?

सोनूः- बड़ी-बड़ी इमारते बनाऊँगा, सड़के बनाऊँगा और पता है कि मैं अपने गाँव के लिए भी एक सड़के बनाऊँगा जो तुम्हारे घर से होकर गुतरेगी?

चन्दाः- सड़के सच मेरे घर पे सड़के गुजरेगी

सोनूः- अच्छा चन्दा तुम क्या बनोगी ?

चन्दाः- मैं पढ़-लिख बहुत कुछ करना चाहती हूँ। मैं सपनों की दुनिया में उड़ना चाहती हूँ। इन पूरे रंगों बादलों में घुल-मिल जाना चाहती हूँ। मैं माँ बाबा भाईयों के लिए कुछ करना चाहती हूँ।

सोनूः- लेकिन तुम बनोगी क्या ?

चन्दाः- मै। सपनों की दुनिया में उड़ जाना चाहती हूँ। मै। इन रंग भरी दुनिया में उड़ जाना चाहती हूँ और सबके लिए खुशियाँ बटोकर लाना चाहती हूँ।

सोनूः- और मै। तेरे सपनो को बरखा से बचाने के लिए छाता लेकर आऊँगी।

गीतः- सपनों की तितली के पर लगाकर नाचेगी चन्दा गुन गुनाकर।

लखपतिया का प्रवेश (गुस्से मे देखता रहता है। चन्दा और सोनू को)

सोनूः- बात कर निकल जाता है।

लखपतियाः- बाबा-बाबा बाबा-बाबा

सुखियाः- अरे क्या हुआ लखपतिया क्यों चिल्ला रहे हो ?

लखपतियाः- मैं अपनी आंखों से देखा कि चन्दा आजकल सोनू के साथ अवारागिरी कर रही है और मैंने पहले भी कहा था कि चन्दा को स्कूल जाना बन्द करा दो।

सुखियाः- क्या यह बात तेरी माँ को पता है जिस बात से डर था वहीं हुई।

लखपतियाः- हाँ बाबा मैंने माँ को पहले भी बताया था।

सुखियाः- चन्दा-चन्दा तुम पहाडी के पीछे सोनू के साथ क्या कर रही थी।

चन्दाः- कुछ नहीं, कुछ नहीं, कुछ नहीं

सुखियाः- जिस बात का डर था वही हुआ अब से तुम्हारा स्कूल जाना बंद। मैं जा रहा हूँ तेरे शादी के लिए तारीखे तय करने जाऊँगा।
अरे लखपतिया तुम्हारी माँ कहाँ है बुलाकर लाओं।

-:गीतः- अंधेरी धुन के साज को

बजता किसने सुना।

सुखियाः- अरे चन्दा क्या कर रही है तुम कोठरी में खड़ी होकर लड़के वाले आए है। सुनाई नहीं दिया.....!

चन्दाः- बाबा मैं शादी नहीं करूँगी।

सुखियाः- मैं बाप हूँ या तुम ? शादी करेगी।

चन्दाः- मैं आगे पढ़ना चाहती हूँ आगे पढ़ना चाहती हूँ।

सुखियाः- लड़के वाले आए है मैं क्या मुँह दिखाऊँगा शादी तो होकर रहेगी ? सुनायी नहीं देता क्या ?

चन्दाः- लेकिन बाबा मैं नाबालिग हूँ आप मेरे साथ जोर जबरदस्ती नहीं कर सकते ?

सुखियाः- तू मुझे कानून सिखाऐगी ? मैं तेरा बाव हूँ कि तुम मेरा बाप

चन्दाः- बेशक आप मेरे बाप है लेकिन मेरे भी अपने सपने है मुझे आगे पढ़ना है .....और गैर कानूनी है मैं बालिग नहीं हूँ..... कानूनन अपराध हैं।

सुखियाः- कैसे शादी नहीं करेगी ? चल

नाटक समाप्त

टिप्पणी

टिप्पणी

breakthrough
human rights start with you

E-1A, First Floor, Kailash Colony, New Delhi 110 048, India
☎ 91-11-41666101 Fax 91-11-41666107

✉ contact@breakthrough.tv

www.inbreakthrough.tv
/BreakthroughIN
@INBreakthrough

unicef
unite for children

73 Lodi Estate, New Delhi 110 003, India
☎ 91-11-24690401 Fax 91-11-24627521

✉ newdelhi@unicef.org

www.unicef.in
/unicefindia
@UNICEFIndia